VISION IAS
INSPIRING INNOVATION

संस्कृति

Classroom Study Material

www.visionias.in | +91 8468022022

DELHI | JAIPUR | PUNE | HYDERABAD

विषय सूची

1. नृत्य और संगीत 4

1.1. कथक 4
1.2. ओडिसी 4
1.3. अन्य शास्त्रीय नृत्य 5
1.4 संगराई नृत्य 6
1.5. ठुमरी 7

2. चित्रकला एवं कला के अन्य रूप 9

2.1. आधुनिक चित्रकला 9
2.2. कठपुतली 9
2.3. थिएटर ओलंपिक 10

3. मूर्तिकला एवं स्थापत्य 12

3.1. बौद्ध मठ 12
3.2. होयसल मंदिर वास्तुकला 13
3.3. आनंद मंदिर 13
3.4. अजंता की गुफाएं 14
3.5. स्वातंत्र्योत्तर वास्तुकला 15

4. भाषाएँ एवं साहित्य 17

4.1. प्राकृत 17
4.2. कोंकणी 17
4.3. साहित्य का नोबेल पुरस्कार: काजुओ इशिगुरो 18
4.4. पद्मावत 18
4.5. साहित्य अकादमी पुरस्कार 19
4.6. इंटरनेशनल कांफ्रेंस ऑन डेमेट्रियस गैलानोस 20

5. जनजाति 22

5.1. बोंडा जनजाति 22
5.2. टोडा जनजाति 22
5.3. सोलिगा जनजाति 22
5.4. रियांग जनजाति 23
5.5. सिद्दी जनजाति 23
5.6. जारवा जनजाति 23
5.7. कोया जनजाति 24

6. यूनेस्को द्वारा आरम्भ की गयी पहलें 25

6.1.कुंभ मेला 25

VISION IAS

6.2. संकटग्रस्त विश्व धरोहर स्थलों की सूची 26
6.3. वर्ल्ड हेरिटेज सिटी 27
6.4 यूनेस्को एशिया पेसिफिक अवार्ड् ऑफ़ मेरिट 28
6.5. रचनात्मक शहरों के नेटवर्क की सूची 29
6.6. यूनेस्को की इन्डैन्जर्ड सूची 30
6.7. कांफ्रेंस ऑन टूरिज्म एंड कल्चर 30

7. धार्मिक एवं सांस्कृतिक महोत्सव 32

7.1. महामस्तकाभिषेक 32
7.2. कंधई जात्रा 33
7.3. ठकुरानी जात्रा महोत्सव 33
7.4 मेडारम का जातरा 33
7.5. कावेरी महापुष्करम 34
7.6. वारी वारकरी 34
7.7 लोसर त्योहार 35
7.8 नबकलेबर त्योहार 35
7.9 जल्लीकट्टू 36
7.10. अंबुबाची महोत्सव 36
7.11. चपचार कुट 36
7.12. नार्थ-ईस्ट कॉलिंग फेस्टिवल 37
7.13 हॉर्नबिल त्योहार 37
7.14. अरनमुला रेगाटा 38
7.15. सादुल बटुकम्मा 38
7.16. रामकृष्ण आन्दोलन 38

8. ऐतिहासिक घटनाएँ 40

8.1. भारतीय नौसेना का इतिहास 40
8.2. पाइका विद्रोह 40
8.3. चंपारण सत्याग्रह 41
8.4. अहमदाबाद में साबरमती आश्रम का उत्सव 41
8.5. बंगाली अख़बारों के प्रकाशन की द्वि-शताब्दी 42
8.6. भारत छोड़ो आंदोलन की 75 वीं वर्षगांठ 42
8.7. कोरेगाँव की लड़ाई 43

9. व्यक्तित्व 45

9.1. बसव जयंती 45
9.2. संत त्यागराज 45
9.3. राजा राम मोहन राय 46
9.4 श्री रामानुजाचार्य 46
9.5. बाबा फरीद 47

VISION IAS

9.6. सरदार वल्लभभाई पटेल 49
9.7. बिरसा मुंडा 49
9.8 अनसूया साराभाई 50

10. सरकारी योजनाएं 52

10.1. पर्यटन मंत्रालय की योजनाएँ 52
10.1.1. स्वदेश दर्शन 52
10.1.2. स्पेशल टूरिज्म जोन 52
10.1.3. पर्यटन पर्व 52
10.1.4. 'धरोहर गोद लें' योजना 53
10.1.5. आईकॉनिक टूरिस्ट साइट्स प्रोजेक्ट 53
10.1.6. प्रसाद योजना 53
10.2. संस्कृति मंत्रालय की योजनायें 54
10.2.1. सांस्कृतिक मानचित्रण और रोडमैप पर राष्ट्रीय मिशन 54
10.3. अन्य सरकारी पहलें 54
10.3.1. स्वच्छ आइकॉनिक प्लेस 54
10.3.2 राष्ट्रीय क्षेत्रीय सांस्कृतिक केंद्र 55
10.3.3. पारंपरिक खेलों को प्रोत्साहन 55
10.3.4 आदि महोत्सव 56
10.3.5. दीनदयाल स्पर्श योजना 57

11. विविध 58

11.1. मोनकॉस दो रीनो 58
11.2. महानदी से संलग्न विरासत स्थलों को दर्ज करने हेतु INTACH 58
11.3. इंदिरा गाँधी पुरस्कार 58
11.4 ICOMOS महासभा 59
11.5 प्रसार भारती 59
11.6 सबरीमाला 59
11.7. इंटरनेशनल डायलॉग ऑन सिविलाइज़ेशन 60
11.8. जीआई टैग (GI TAG) 60
11.9 विविध (MISCELLANEOUS TITBITS) 61

VISION IAS

1. नृत्य और संगीत

(DANCES & MUSIC)

भरत मुनि का नाट्यशास्त्र, **नृत्य** के तीन पहलुओं का वर्णन करता है:

- **नाट्य,** यह नृत्य के नाटकीय तत्व का निरूपण है।
- **नृत्य:** इसका आशय नर्तन के माध्यम से वर्णित रस तथा भावों से है। इसमें मुखाभिव्यक्ति, हस्त-मुद्रा और पैरों की स्थिति के माध्यम से मनोदशा का निरूपण होता है।
- **नृत्त:** यह शुद्ध नृत्य है, जहां शरीर की गतिविधियां न तो किसी भाव का वर्णन करती हैं और न ही वे किसी अर्थ को प्रतिपादित करती हैं।

1.1. कथक

(Kathak)

सुर्ख़ियों में क्यों?

- गूगल ने प्रसिद्ध कथक नृत्यांगना सितारा देवी की 97वीं जयंती गूगल डूडल के साथ मनायी।

सितारा देवी के संबंध में(About Sitara Devi)

- रबींद्रनाथ टैगोर द्वारा इन्हें **'नृत्य सम्राज्ञी'** कहा गया था,जिसका तात्पर्य "नृत्य की महारानी (Empress of Dance)" होता है।
- इन्हें संगीत नाटक अकादमी पुरस्कार, पद्म श्री, कालिदास सम्मान और इंडिया लाइफटाइम अचीवमेंट अवॉर्ड जैसे प्रतिष्ठित पुरस्कारों से सम्मानित किया गया है।

कथक (Kathak) के संबंध में

- यह उत्तर प्रदेश का एक परंपरागत शास्त्रीय नृत्य का स्वरूप है जिसके उद्भव के चिन्ह ब्रजभूमि की रास लीला से मिलते हैं। इसका नाम "कथिक" शब्द से व्युत्पन्न है जिसका अर्थ 'कहानी कहने वाला,' होता है।
    - `इस नृत्य की विशेषता इसका जटिल पद-चाप (फुटवर्क) है और यह सामान्यतः ध्रुपद संगीत के साथ प्रस्तुत किया जाता है। मुगल काल के दौरान तराना, ठुमरी और ग़ज़ल जैसे अन्य संगीत भी प्रस्तुत किए जाते थे।
- हिंदू और मुस्लिम परंपराओं के मिश्रण वाला यह एकमात्र भारतीय शास्त्रीय नृत्य है।
- कथक विभिन्न घरानों (लखनऊ, जयपुर, रायगढ़, बनारस) के विकास के लिए भी जाना जाता है क्योंकि यह संगीत की हिंदुस्तानी शैली पर आधारित एकमात्र शास्त्रीय नृत्य है।
- इस नृत्य से संबंधित अन्य प्रसिद्ध व्यक्तियों में बिरजू महाराज, लच्छू महाराज, दमयंती जोशी आदि प्रमुख हैं।

1.2. ओडिसी

(Odissi)

सुर्ख़ियों में क्यों?

- ओडिसा सरकार भुवनेश्वर में ओडिसी संग्रहालय स्थापित करेगी।

ओडिसी के संबंध में

- ओडिसी ओडिसा की शास्त्रीय नृत्य शैली है।
- यह नृत्य शैली जल तत्व का प्रतिरूपण करती है।
- मूल रूप से इसका प्रदर्शन महरिज द्वारा किया जाता था जो मुख्यतः मंदिर नर्तकियां (देवदासियाँ) थीं। बाद में गोटूपुआ नामक लड़कों के समूह को इस कला में प्रशिक्षित किया गया। उन्होंने मंदिरों में और सार्वजनिक मनोरंजन के लिए नृत्य किया।

VISION IAS

- ओडीसी में चेहरे के भाव, हस्त–मुद्राएं और शरीर की गतिविधियों का उपयोग एक निश्चित अनुभूति, एक भावना या नवरसों में से किसी एक के संकेत के लिए किया जाता है। मुद्राओं के प्रयोग में यह भरतनाट्यम के समान है।
- नर्तक अपने शरीर द्वारा जटिल ज्यामितीय आकार और आकृतियां बनाते हैं। इसलिए, इसे **"गतिशील मूर्तिकला"** के रूप में भी जाना जाता है।
- **गतिविधि की तकनीकियां** दो आधारभूत मुद्राओं- **चौक** (Chowk) तथा **त्रिभंग** (Tribhang) के समान निर्मित होती हैं।
    - **चौक** एक वर्ग (चौकोर) की स्थिति है, जिसमें शरीर के भार के समान संतुलन के साथ एक पुरुषोचित मुद्रा दिखती है। **त्रिभंग** मुख्यतः एक स्त्रियोचित मुद्रा है, जिसमें शरीर को गले, धड़ और घुटने तीनों जगह से मोड़ा जाता है।
- ओडिसी में प्रयोग किए जाने वाले प्रमुख संगीत वाद्ययंत्र पखावज, सितार, मंजीरा और बांसुरी हैं।

1.3. अन्य शास्त्रीय नृत्य

(Other Classical Dances)

नृत्य रूप	प्रमुख विशेषताऐं
कथकली	• केरल का शास्त्रीय नृत्य। • **नृत्य, संगीत और अभिनय का मिश्रण** ("कथा" का अर्थ कहानी और "कली" का अर्थ नाटक) • कथाओं का नाट्य रूप और अधिक व्याख्यान **अच्छाई और बुराई के मध्य के संघर्ष** को प्रदर्शित करता है। • **आकाश या व्योम** तत्व का निरूपण। • **हस्त मुद्राओं और मुखाभिव्यक्ति** का सुसंगत क्रम। • **शिरस्त्राण (सर की टोपी**) के साथ अलग-अलग रंगों से युक्त विस्तृत श्रृंगार। • **संबंधित वाद्ययंत्र: चेंडा** (Chenda), **मद्दलम्** (Maddalam), **चेंगिला** (Chengila), **इलथलम्** (Ilathalam), **इडक्का** (Idakka) और **शंखु** (Shankhu)।
भरतनाट्यम	• तमिलनाडु का सर्वाधिक प्राचीन शास्त्रीय नृत्य। • **एकहार्य** के नाम से भी जाना जाता है, जहां एक नर्तक एक ही प्रदर्शन में कई भूमिकाएं निभाता है। • **संबंधित वाद्ययंत्र:** मृदंगम, वीणा या वायलिन, बांसुरी और मजीरा/ करताल।
मणिपुरी	• **लाई हारोबा** के प्राचीन त्योहार में इसकी जड़ें मिलती हैं। वैष्णववाद के आगमन के साथ इस नृत्य को प्रसिद्धि प्राप्त हुई। • मणिपुरी नृत्य के सबसे लोकप्रिय रूप: **रास, संकीर्तन और थांग-टा।** • मुख्य विषय राधा, कृष्ण और गोपियों से संबंधित है। • मणिपुरी नृत्य में **तांडव** और **लास्य** दोनों सम्मिलित हैं। यह अपने लयबद्धता और आकर्षक गतिशीलता के लिए जाना जाता है। मुखाभिव्यक्ति अतिरंजित न होकर स्वाभाविक होती है। • **संबंधित उपकरण**: पुंग और करताल।
सत्रिया	• असम के महान वैष्णव संत **शंकरदेव** द्वारा वैष्णव धर्म के प्रचार हेतु इस नृत्य की शुरुआत।

VISION IAS

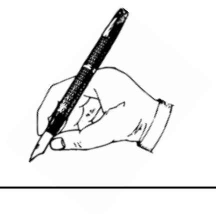

	• इस परंपरा को **सत्रों** (वैष्णव मठ या विहार) द्वारा संरक्षित किया गया है। • **हस्तमुद्राओं, पद संचलनों, आहार्य और संगीत** आदि के संबंध में कठोर सिद्धांतों के द्वारा सत्रिया नृत्य की परंपरा संचालित होती है। • इस नृत्य से असम का **माजुली द्वीप** काफी गहराई से जुड़ा हुआ है।
मोहिनीअट्टम	• **केरल** की शास्त्रीय एकल नृत्य शैली, जिसका प्रदर्शन महिलाओं द्वारा किया जाता है। इसकी व्याख्या भस्मासुर को मारने के लिए विष्णु द्वारा धारण किये गये स्त्री रूप **'मोहिनी'** द्वारा किये गए नृत्य के रूप में की गयी है। • बिना किसी अनियंत्रित झटके या आकस्मिक अंतराल के शरीर की आकर्षक और लयात्मक गतिविधि इसकी मुख्य विशेषता है। • यह **लास्य** शैली से संबंधित है, जो स्त्रियोचित, कोमल और आकर्षक है। • **वायु** तत्व का निरूपण। • जटिल मुखाभिव्यक्ति के साथ हस्त मुद्राओं और मुखाभिनय का महत्व।
कुचिपुड़ी	• आधुनिक **आंध्र प्रदेश** के कृष्णा जिले के कुचीपुड़ी गांव में उत्पन्न। • वैष्णव कवि सिद्धेंद्र योगी द्वारा 17 वीं सदी में नृत्य-नाटक-यक्षगान से इसकी कल्पना की गई थी। • इसमें **पीतल की थाली के किनारे (रिम) पर नृत्य करना तथा सिर पर पानी से भरा घड़ा लेकर नृत्य करने जैसी तकनीकों का समावेश होता है। इसे तरंगम कहा जाता है।** • प्रायः,कुचीपुडी कलाकार, नर्तक और गायक दोनों की भूमिका निभाता है। शैली एकल और समूह दोनों प्रदर्शनों के लिए जानी जाती है। • नृत्य, कर्नाटक संगीत पर किया जाता है जहां गायक का साथ **मृदंगम, वायलिन, बांसुरी और तंबूरा** जैसे वाद्ययंत्रों द्वारा दिया जाता है।

1.4 संगराई नृत्य

(Sangrai Dance)

सुर्ख़ियों में क्यों?

- पहली बार त्रिपुरा के पारंपरिक नृत्य संगराई को गणतंत्र दिवस परेड में प्रस्तुत किया गया।

अन्य सम्बंधित तथ्य

- महाराष्ट्र ने गणतंत्र दिवस परेड के अवसर पर सर्वश्रेष्ठ झाँकी का पुरस्कार जीता। यह झाँकी छत्रपति शिवाजी महाराज के राज्याभिषेक पर आधारित थी, जिन्होंने शासन संचालन के उद्देश्यों की पूर्ति हेतु अष्टप्रधान मंडल (आठ मंत्रियों की परिषद) का गठन किया था। अष्टप्रधान मंडल में निम्नलिखित सम्मिलित थे:
  - पेशवा (मुख्यमंत्री)
  - अमात्य या मजूमदार (वित्त विभाग)
  - सचिव या शूरुनवीस (पत्राचार विभाग)
  - सुमंत या दबीर (विदेश मंत्री)
  - सेनापति या सर-ए-नौबत (सेना की भर्ती, प्रशिक्षण और अनुशासन)
  - मंत्री या वाकयानवीस (राजा की व्यक्तिगत सुरक्षा)
  - न्यायाधीश (न्याय का प्रशासन)
- पंडितराव (धर्मार्थ कार्यों की देखभाल)
- हिमाचल प्रदेश की झाँकी में तिब्बती बौद्ध मठ **की-गोम्पा (Kye-Gompa)** का एक मॉडल का प्रस्तुत किया गया। यह मठ स्पीति घाटी में स्थित है तथा इसे 11वीं शताब्दी में स्थापित किया गया था।

VISION IAS

- छत्तीसगढ़ की झाँकी में कलाकारों द्वारा कालिदास के मेघदूतम पर आधारित नृत्य का प्रदर्शन किया गया। मेघदूतम एक गीति-काव्य है। यह एक यक्ष की कहानी का वर्णन करता है, जिसे उसके राज्य से निर्वासित कर दिया गया था।

कालिदास की अन्य महत्वपूर्ण कृतियाँ

- **अभिज्ञान शाकुन्तलम् -** इसमें राजा दुष्यंत, शकुंतला एवं उनके पुत्र (भरत) के वात्सल्य, विरह और पुनर्मिलन का चित्रण किया गया है।
- **रघुवंश-** यह रामायण के विषयों से संबंधित है।
- **मालविकाग्निमित्रम् -** यह नाटक पुष्यमित्र शुंग के पुत्र अग्निमित्र की मालविका के साथ प्रेम कहानी पर आधारित है।
- **कुमारसंभव -** इसका विषय शिव और पार्वती का प्रेमालाप है।
- **ऋतुसंहार -** इस कविता में छह भारतीय ऋतुओं का चित्रण किया गया है।

विवरण

- यह संगराई त्यौहार के अवसर पर **मोग जनजाति** द्वारा किया जाता है।
- संगराई पर्व नव वर्ष के स्वागत में मनाया जाता है।
- मोग अराकनी वंश (भारत-बर्मा के अराकान क्षेत्र) से सम्बन्धित हैं और इस समुदाय के लोग बौद्ध धर्म का अनुसरण करते हैं।

1.5. ठुमरी

(Thumri)

सुर्ख़ियों में क्यों?

- ठुमरी के बनारस और सेनिया घरानों की संस्थापक सदस्यों में से एक गिरिजा देवी का निधन हो गया।

पृष्ठभूमि

- भारतीय शास्त्रीय संगीत की दो मुख्य शैलियाँ हैं: उत्तर की हिंदुस्तानी शैली और दक्षिण का कर्नाटक संगीत।
- प्रसिद्ध हिन्दुस्तानी शैलियों में ध्रुपद, धमार, ख़याल, टप्पा और ठुमरी सम्मिलित हैं।
- **ठुमरी (Thumri) :** यह मुख्य रूप से महिला के परिप्रेक्ष्य में लिखे जाने वाले प्रणय गीतों की गायन शैली है। इसे हिंदी की एक साहित्यिक बोली में गया जाता है जिसे ब्रज कहते हैं। **ठुमरी** की संरचना और प्रस्तुति अत्यधिक काव्यात्मक है।
- **ध्रुपद (Dhrupad) : तानसेन** सबसे प्रसिद्ध ध्रुपद गायकों में से एक थे। वह सम्राट अकबर के दरबार के नौ-रत्नों में से एक थे। यह एक उत्तर भारतीय शैली है जिसकी प्रस्तुति सीधे रूप में होती है और इसमे कोई सजावट या अलंकार नहीं होता है। गायकों के साथ बीन एवं पखावज वाद्य यंत्र का प्रयोग किया जाता है।
- **धमार (Dhamar):** धमार ध्रुपद के समान ही एक संगीत शैली है लेकिन इसमें अलंकार अधिक होता है।
- **ख़याल (Khayal):** ख़याल का अर्थ "कल्पना" होता है। 13वीं शताब्दी में अमीर खुसरो ने इसे प्रोत्साहन दिया। यह अधिक विस्तृत सजावट और कशीदेकारी वाली शास्त्रीय गायन की एक शैली है। ख़याल के विभिन्न घराने- ग्वालियर घराना, आगरा घराना आदि हैं।
- **टप्पा (Tappa):** इसमें तेज़ी से असमान लयबद्ध लहज़े में बुने शब्दों का गायन सम्मिलित होता है। टप्पा रचनाओं का राग ठुमरी शैली के समान होता है।

VISION IAS

हिंदुस्तानी संगीत (Hindustani music)	कर्नाटक संगीत (Carnatic music)
• इसकी जड़ें वैदिक परंपराओं में हैं, जहां सामवेद (एक पवित्र ग्रन्थ) के श्लोकों को, मंत्रोच्चारण के स्थान पर गाया जाता था। • इस पर तुर्की-फ़ारसी संगीत के तत्वों का प्रभाव है • इसमें समय की बंदिश रहती है। • इसमें एक से अधिक गायन शैलियाँ हैं जिन्हें घरानों के नाम से जाना जाता है। • तबला, सारंगी, सितार, संतूर, शहनाई, वायलिन और बांसुरी का उपयोग।	• यह भक्ति आंदोलन के समय व्यापक स्तर पर विकसित हुआ। • इस पर कोई तुर्की-फारसी प्रभाव नहीं है। • इसमें ऐसी कोई बंदिश नहीं है। • इसे एक विशिष्ट ढंग से गाने के लिए लिखा जाता है। • वीणा, मृदंगम, मण्डोलिन, जलतरंगम, वायलिन और बाँसुरी का प्रयोग

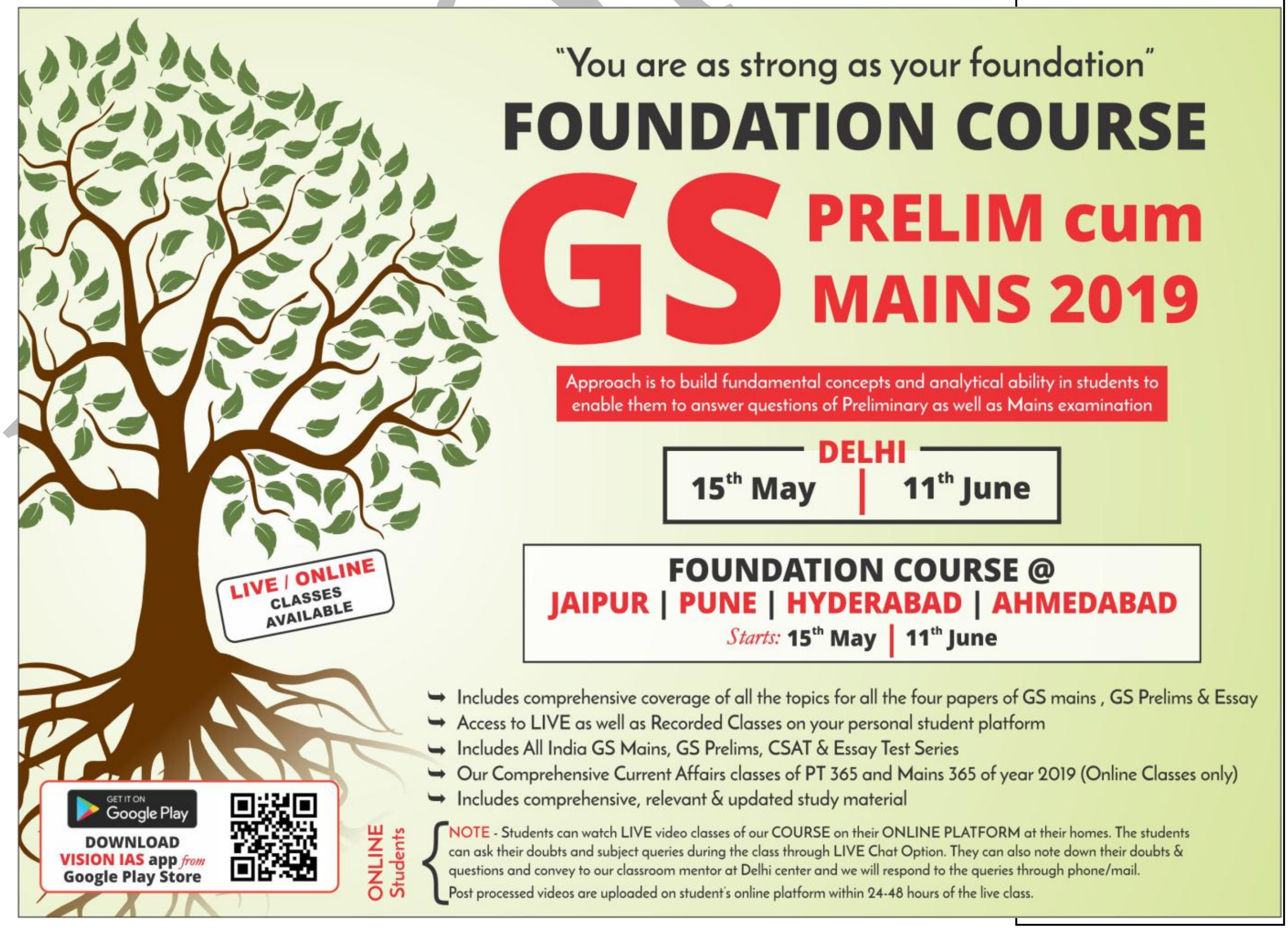

2. चित्रकला एवं कला के अन्य रूप

(PAINTINGS & OTHER ART FORMS)

2.1. आधुनिक चित्रकला

(Modern Painting)

सुर्खियों में क्यों?

- हाल ही में, विक्टोरिया मेमोरियल हॉल की प्रदर्शनियों का गूगल आर्ट एंड कल्चर प्रोजेक्ट द्वारा लाइव शो प्रसारित किया गया, जिसमें प्रदर्शित सबसे प्रसिद्ध पेंटिंग्स में **अबनींद्रनाथ की भारतमाता** थी।

आधुनिक भारतीय चित्रकला (Modern Indian Painting)

भारतीय कला का आधुनिक काल लगभग 1857 के आसपास आरंभ हुआ। आधुनिक युग में पेंटिंग की विभिन्न शैलियाँ इस प्रकार हैं:

- **चित्रकला की कंपनी शैली (Company Style of painting):** यह चित्रकला की एक संकर (hybrid) शैली है। यह औपनिवेशिक काल में उभरी। यह राजपूत, मुगल और पेंटिंग की अन्य भारतीय शैलियों को यूरोपीय तत्वों के साथ मिश्रित करती है।
- **बाजार चित्रकला (Bazaar Painting):** कंपनी चित्रकला के विपरीत, इसने यूरोपीय तकनीक के साथ भारतीय शैली को मिश्रित नहीं किया। इन्होंने सिर्फ ग्रीक और रोमन शैली की नकल की। यह शैली बंगाल और बिहार में प्रचलित थी। इन चित्रों में भारतीय बाजारों को यूरोपीय पृष्ठभूमि के साथ प्रदर्शित किया जाता था।
- **कालीघाट चित्रकला(Kalighat Painting):** इसे कपड़ों या पटों पर किया जाता है जो कि बंगाल में कालीघाट के मंदिर के आस-पास विकसित होना शुरू हुई जहां स्थानीय ग्रामीण स्क्रॉल पेंटर्स (जिन्हें पटुआ कहा जाता था) और कुम्हारों ने परंपरागत चित्रकला में नई विशिष्टताओं को प्रयुक्त करना प्रारंभ किया था जैसे -
    - चित्र को घेरेदार (rounded) रूप देने (3- D प्रभाव) के लिए छायांकन का प्रयोग।
    - एक सुस्पष्ट, सुविचारित गैर-यथार्थवादी शैली का प्रयोग, जहां चित्र न्यूनतम लाइनों, विवरणों और रंगों के संयोजन से बड़े और प्रभावशाली बनकर उभरे।
    - पूर्व काल के केवल धार्मिक विषयों के विपरीत सामाजिक और राजनीतिक विषयों की चित्रकलाएं।

आधुनिक चित्रकला के प्रमुख प्रतिपादक **राजा रवि वर्मा** (शानदार (brilliant) ब्रश प्रयोग और जीवंत पेंटिंग्स के कारण उन्हें **"पूर्व का राफेल"** कहा जाता है), **अबनींद्र नाथ टैगोर** आदि हैं। अबनींद्र नाथ टैगोर की 'भारतमाता' (1905) मातृभूमि की भावना का पहला विशुद्ध भारतीय विचार था।

2.2. कठपुतली

(Puppetry)

सुर्खियों में क्यों?

- हाल ही में, 21 मार्च को विश्व कठपुतली दिवस के रूप में मनाया गया।

भारत में कठपुतली (Puppetry in India)

- कठपुतली कला का सबसे पहला संदर्भ तमिल शास्त्र **'शिलाप्पदिकारम'** में मिलता है। लगभग यह पहली या दूसरी सदी ई. पू.लिखा गया है।
- कठपुतली का प्रदर्शन करने वाला कहानी का वर्णन गद्यात्मक या काव्यात्मक रूप में करता है, जबकि कठपुतली का प्रदर्शन इसे दृश्य रूप प्रदान करता है।
- पौराणिक साहित्य, स्थानीय मिथकों और किंवदंतियों से संबंधित कहानियां प्राचीन भारत में कठपुतली प्रदर्शन का विषय थीं।

VISION IAS

* भारत में मुख्य रूप से चार प्रकार की कठपुतली शैलियाँ हैं: धागा कठपुतली, छाया कठपुतली, छड़ कठपुतली और दस्ताना कठपुतली
* **धागा कठपुतली (String Puppetry):** धागा कठपुतली या मरियोनेट्स में धागे द्वारा जुड़े हुए अंगों को नियंत्रित किया जाता है। कुछ प्रसिद्ध धागा कठपुतलियां हैं:
  * कठपुतली, राजस्थान
  * कुनढेई, ओडिशा
  * गोम्बेयेट्टा, कर्नाटक
  * बोम्मालट्टा, तमिलनाडु।
* **छाया कठपुतली (Shadow Puppetry):** छाया कठपुतलियाँ सपाट चित्र होती हैं जिसमें छाया निर्माण के लिए इसे एक परदे के सम्मुख रखा जाता है और इसके पीछे से तीव्र प्रकाश डाला जाता है। कुछ प्रसिद्ध छाया कठपुतलियाँ निम्नलिखित हैं:
  * तोगलु गोम्बेयेट्टा, कर्नाटक
  * तोलु बोम्मालट्टा आंध्र प्रदेश
  * रावण छाया, उड़ीसा
* **छड़ (रॉड) कठपुतली (Rod Puppetry):** छड़ कठपुतलियों दस्ताना कठपुतलियों का विस्तृत रूप है, लेकिन यह उससे काफी बड़ी होती है तथा नीचे स्थित छड़ों पर आधारित रहती है और उसी से संचालित होती है। कुछ प्रसिद्ध छड़ कठपुतलियाँ निम्नलिखित हैं:
  * पुत्तलनाच, पश्चिम बंगाल
  * उड़ीसा छड़ कठपुतली
  * यमपुरी, बिहार
* **दस्ताना कठपुतली (Glove Puppetry):** दस्ताना कठपुतलियों को भुजा, हाथ या हथेली कठपुतलियों के रूप में भी जाना जाता है। इसका सिर पेपर मेशे (कुट्टी), कपड़े या लकड़ी से बना होता है तथा गर्दन के नीचे से दोनों हाथ बाहर निकलते हैं और शेष शरीर के नाम पर केवल लहराता घाघरा होता है। कठपुतली चलाने वालों के द्वारा हाथों से कठपुतलियों की विभिन्न प्रकार की गतिविधियों का संचालन किया जाता है। उदाहरण: **पावाकुथू, केरल**।

2.3. थिएटर ओलंपिक

(Theatre Olympics)

सुर्ख़ियों में क्यों?

* भारत, **थिएटर ओलंपिक -"विश्व का सबसे बड़ा थिएटर उत्सव"** के 8वें संस्करण की मेजबानी कर रहा है। इसका आयोजन भारत के विभिन्न शहरों में किया जा रहा है।

थिएटर ओलंपिक(Theatre Olympics)

* 1993 में स्थापित थियेटर ओलंपिक, विश्व भर के प्रसिद्ध रंगमंच अभिनेताओं की बेहतरीन प्रस्तुतियों को प्रस्तुत करने वाला सबसे महत्वपूर्ण अंतर्राष्ट्रीय थिएटर फेस्टिवल है।

भारत में पारंपरिक थियेटर के विभिन्न रूप

(Different Traditional Theatre Forms in India)

* भाण्ड-पाथेर (कश्मीर)
* स्वांग (हरियाणा, उत्तर प्रदेश आदि)

VISION IAS

- नौटंकी (उत्तर प्रदेश)
- रासलीला (उत्तर प्रदेश)
- भवाई (गुजरात)
- जात्रा (बंगाल)
- माच (मध्य प्रदेश)
- भाओना (असम)
- तमाशा (महाराष्ट्र)
- दशावतार (कोंकण और गोवा क्षेत्र)
- **कृष्णाट्टम** (केरल का लोक थियेटर)
- मुडियेट्टु (केरल का लोक थियेटर)
- **कुटियाट्टम**(केरल)
- यक्षगान (कर्नाटक)
- तेरुकुत्तु (तमिलनाडु का लोक नाट्य)

VISION IAS

3. मूर्तिकला एवं स्थापत्य

(SCULPTURE AND ARCHITECTURE)

3.1. बौद्ध मठ

(Buddhist Monasteries)

सुर्खियों में क्यों?

- **भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण (ASI)** ने गुजरात के वडनगर शहर में बौद्ध मठों की तरह दिखने वाले ढांचे का पता लगाया है।

भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण

- भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण **संस्कृति मंत्रालय** के तहत पुरातात्विक शोध और राष्ट्र की सांस्कृतिक विरासत के संरक्षण हेतु प्रमुख संगठन है।
- इसका मुख्य उद्देश्य प्राचीन स्मारक और पुरातात्विक स्थलों तथा राष्ट्रीय महत्व के अवशेषों का रख-रखाव करना है।
- इसके अतिरिक्त, यह **प्राचीन संस्मारक, पुरातत्वीय स्थल और अवशेष अधिनियम, 1958** के प्रावधानों के अनुसार देश में सभी पुरातात्विक गतिविधियों को नियंत्रित करता है। यह **पुरावशेष तथा बहुमूल्य कलाकृति अधिनियम, 1972** को भी विनियमित करता है।

- **बोधि पर्व-बौद्ध विरासत का बिम्सटेक महोत्सव** एक तीन दिवसीय महोत्सव के रूप में नई दिल्ली में आयोजित किया गया।
- आंध्र प्रदेश के घंटसाला में 70 फीट की बुद्ध प्रतिमा बनाने का प्रस्ताव सरकार द्वारा पारित किया गया है।

बौद्ध वास्तुकला के प्रकार

- बौद्ध वास्तुकला के निम्नलिखित तीन प्रमुख प्रकार पाए जाते हैं:
  - **स्तूप:** यह बुद्ध के अवशेषों पर बना हुआ टीला है। यह एक कटोरे के आकार का अर्द्ध गोलीय गुंबद होता है। मूल स्तूपों में बुद्ध के अवशेष थे। भारत के सबसे प्रसिद्ध स्तूपों में से एक मध्य प्रदेश का सांची स्तूप है। उत्तर प्रदेश का पिपरहवा स्तूप भी प्राचीन स्तूपों में से एक है।
  - **विहार :** यह भिक्षुओं का निवास स्थल होता है। यह एक या दो मंज़िला निवास स्थल होता है जो स्तम्भ युक्त बरामदे में खुलता है।
  - **चैत्य या चैत्यगृह:** यह एक सभा कक्ष (जिसमें पूजा की जाती है) होता है जिसमें एक स्तूप होता है उदाहरण : महाराष्ट्र के लोनावाला के पास स्थित कार्ले की गुफाओं में चैत्य।
- ये अधिकतर शैलोत्कीर्ण गुफाओं के रूप में थे।

महत्वपूर्ण बौद्ध स्थल

अष्टमहास्थान (आठ पवित्र स्थान):

- **लुंबिनी, नेपाल:** बुद्ध का जन्म स्थल।
- **बोधगया, बिहार:** बुद्ध को ज्ञान प्राप्ति।
- **सारनाथ, उत्तर प्रदेश:** पहला धर्मोपदेश या धम्मचक्रप्रवर्तन
- **कुशीनगर, उत्तर प्रदेश:** मृत्यु या महापरिनिर्वाण
  - "महापरिनिर्वाण" निर्वाण की अंतिम अवस्था (अनन्त, उच्चतम शांति और आनंद) को संदर्भित करता है
- इनके साथ, अन्य चार श्रावस्ती, संकास्य (संकिस्सा), राजगीर और वैशाली हैं।

महत्वपूर्ण मठ

- **लद्दाख:** हेमिस, थिक्से, फुकटल मठ, ज़ांस्कर, रिजोंग
- **लेह:** डिस्किट मठ, लामयुरु मठ
- **कर्नाटक:** नामद्रोलिंग निंगमापा मठ (कूर्ग)
- **हिमाचल प्रदेश:** धनकर, टाबो मठ (स्पीति घाटी), पालपंग शेरबलिंग मोनेस्टिक सीट (कांगड़ा घाटी), नामग्याल मठ (धर्मशाला), गांधोला मठ, कुंगरी मठ, कार्दंग मठ
- **पश्चिम बंगाल:** घूम मठ
- **उत्तराखंड:** मिंडरोलिंग मठ (देहरादून)
- **सिक्किम:** रुमटेक और गोनजंग मठ, **एंचेय** मठ, रलांग मठ, पेमायांगत्सी मठ।
- **अरुणाचल प्रदेश:** तवांग मठ

3.2. होयसल मंदिर वास्तुकला

(Hoysala Temple Architecture)

सुर्ख़ियों में क्यों?

- कर्नाटक के कोलार जिले के वेंकटपुरा में एक सार्वजनिक ट्रस्ट द्वारा होयसल शैली में एक मंदिर का निर्माण किया जा रहा है।

होयसल वास्तुकला

- होयसल वंश ने दक्षिणी कर्नाटक में 11वीं और 14वीं शताब्दी के मध्य शासन किया था। होयसल वास्तुशिल्प शैली को इंडो-आर्यन और द्रविड़ परंपराओं का मध्यवर्ती माना जाता है।
- इसके मंदिर अलंकृत और जटिल होते हैं। होयसल मंदिर की एक अन्य विशेषता यह है कि इसमें सैंडस्टोन (बलुआ पत्थर) के स्थान पर सोपस्टोन (सेलखड़ी पत्थर) का प्रयोग किया जाता है।
- मंदिर का आधार **ताराकार** होता है और मंदिर की मुख्य संरचना ऊँचे उठे हुए प्लेटफार्म पर निर्मित होती है। मंदिरों को जटिल मूर्ति नक्काशियों द्वारा आच्छादित किया जाता है।
- प्रसिद्ध होयसल शैली के मंदिरों में से कुछ हैं: बेलूर का चेन्नाकेशव मंदिर, हेलेबिड का होयसलेश्वर मंदिर और अर्सिकेरे का ईश्वर मंदिर।

3.3. आनंद मंदिर

(Ananda Temple)

सुर्ख़ियों में क्यों?

- प्रधानमंत्री ने म्यांमार के बागान में आनंद मंदिर का दौरा किया, जिसका भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण (ASI) द्वारा नवीनीकरण किया जा रहा है।

इससे सम्बंधित और अधिक जानकारी

- यह 12वीं शताब्दी में बर्मा के राजा क्यांसित्था द्वारा निर्मित एक बौद्ध मंदिर है। पूरे बागान क्षेत्र में यह दूसरा सबसे बड़ा मंदिर है और इसे मोन (Mon) वास्तुकला की एक उत्कृष्ट कृति माना जाता है। ASI ने 2010 में समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए जाने के बाद मंदिर के संरक्षण कार्य को संभाला।

VISION IAS

ASI द्वारा किये जाने वाले अन्य संरक्षण कार्य

- **बामियान गुफाएं -** अफगानिस्तान के बामियान की बुद्ध मूर्तियां 6-7 वीं शताब्दी में बामियान घाटी के सम्मुख स्थित चट्टानों पर उत्कीर्ण की गई थीं। 2001 में आतंकी हमलों में इनके नष्ट होने से पहले बामियान की बुद्ध मूर्ति को विश्व की सबसे बड़ी बुद्ध मूर्ति माना जाता था।
- **अंकोर वाट (कम्बोडिया) -** 1113 AD से 1150 AD के मध्य लगभग 500 एकड़ (200 हेक्टेयर) के क्षेत्र में निर्मित यह विश्व के सबसे बड़े धार्मिक स्मारकों में से एक है। यह मंदिर राजा सूर्यवर्मन द्वितीय द्वारा बनवाया गया था। मूल रूप से इसका निर्माण भगवान विष्णु को समर्पित एक हिंदू मंदिर के रूप हुआ था, लेकिन 14वीं शताब्दी में इसे एक बौद्ध मंदिर में परिवर्तित कर दिया गया।
- **ता प्रोह्म मंदिर (Ta Prohm Temple-कंबोडिया) -** 1186 AD में निर्मित और मूल रूप से राज विहार (राजा के मठ) के नाम से जाना जाने वाला ता प्रोह्म जयवर्मन VII की मां को समर्पित एक बौद्ध मंदिर था।
- **लाओस का वाट फ़ो (Vat Phou) मंदिर -** यह नष्ट प्राय खमेर मंदिर परिसर अंकोर वाट से पुराना है। इस स्थल पर एक अत्यधिक प्राचीन मंदिर 5 वीं शताब्दी का है। यह एक बौद्ध धार्मिक स्थल है। हालांकि, तीन सिर वाले हाथी पर सवार इंद्र (तूफान और वर्षा के हिंदू देवता) तथा गरुड़ पर सवार विष्णु की विभिन्न मूर्तियाँ यहाँ प्राप्त होती हैं। यह यूनेस्को की विश्व विरासत स्थल सूची में सम्मिलित है।
- **माई सन (My Son) मंदिर (वियतनाम) -** माई सन मंदिर परिसर 4 से 13 वीं शताब्दी तक की अवधि का है। यह स्थल केंद्रीय वियतनाम में क्वांग नाम प्रांत (Quang Nam Province) की पहाड़ी सीमा के पास Duy Xuyen जिले में स्थित है। यह माई सन सभ्यता के समय निर्मित एक हिंदू मंदिर है।

3.4. अजंता की गुफाएं

(Ajanta Caves)

सुर्ख़ियों में क्यों?

हाल ही में, महाराष्ट्र में स्थित अजंता की गुफाओं का डिजिटल रीस्टोरेशन किया गया।

अजंता गुफाओं के बारे में अधिक जानकारी

- इनमें 29 शैलोत्कीर्ण बौद्ध गुफाएँ सम्मिलित हैं, जिसमें विभिन्न चैत्य और विहार हैं।
- अजंता की गुफाएँ मुख्य रूप से अपनी चित्रकला और मूर्तियों के लिए प्रसिद्ध हैं। चित्रकला के विभिन्न विषयों में **बुद्ध का महापरिनिर्वाण**, **पद्मपाणि** (कमल धारण करने वाले बोधिसत्व), **वज्रपाणि** (एक आनुष्ठानिक वास्तु वज्र धारण करने वाले बोधिसत्व) और **मार-विजय** शामिल है। अजंता चित्रकला वास्तविक फ़्रेस्को तकनीक पर आधारित नहीं है क्योंकि इसमें पहले प्लास्टर किया गया है तत्पश्चात उस पर चित्र बनाया गया है।

अन्य शैलोत्कीर्ण (रॉक-कट) गुफाएं

- **एलोरा गुफाएं -** ये महाराष्ट्र में औरंगाबाद के निकट स्थित हैं और बौद्ध, जैन तथा ब्राह्मण धर्म से संबंधित हैं। यह कैलाशनाथ मंदिर के लिए जानी जाती है जो एक एकाश्मक मंदिर है। बौद्ध गुफाओं में वज्रयान बौद्ध धर्म से और ब्राह्मण गुफाओं में शैव और वैष्णव धर्म से संबंधित चित्र हैं।

VISION IAS

- **एलिफेंटा की गुफाएं -** ये महाराष्ट्र के एलीफैंटा द्वीप पर स्थित हैं। यहां पहले बौद्ध चित्रों का प्रभुत्व था, परन्तु बाद में इसका स्थान शैव धर्म से सम्बंधित चित्रों ने ले लिया। यहाँ की सबसे प्रभावशाली मूर्ति त्रि-मूर्ति है, जिसमें शिव को निर्माणकर्ता, संरक्षणकर्ता और विनाशकर्ता के रूप में दिखाया गया है।
- **भीमबेटका की गुफाएं** - यह मध्य प्रदेश में भोपाल के निकट स्थित है। यह गुफा निम्न पुरापाषाण काल से लेकर मध्य पाषाण काल तक की अवधि से सम्बंधित है। यह अपने शैल चित्रों के लिए प्रसिद्ध है। इन चित्रों को मुख्यतः लाल और सफ़ेद रंग से बनाया गया है, जिसमें यदा-कदा हरे और पीले रंगों का प्रयोग किया गया है। चित्रकला का विषय दैनिक जीवन की घटनाओं से लेकर धार्मिक और यथार्थ विषयों तक है।
- **भाजा और कार्ले की गुफाएं-** ये मौर्य काल में बनायी गई थीं। ये गुफाएं बौद्ध धर्म के हीनयान सम्प्रदाय के अति महत्वपूर्ण केंद्रों में से एक हैं। यहाँ पर बुद्ध के चित्र भी प्राप्त होते हैं।
- **कन्हेरी की गुफाएं, मुंबई-** ये अपनी प्राकृतिक बेसाल्ट संरचनाओं, प्राचीन भारतीय वास्तुकला और गुफाओं के 109 विशेष प्रवेश द्वारों के लिए प्रसिद्ध हैं। गुफाओं के अंदर बुद्ध के लगभग 34 अधूरे चित्र हैं।
- **उदयगिरि गुफाएं-** ये मध्यप्रदेश के विदिशा में स्थित हैं। यहाँ कुछ सबसे पुराने हिंदू मंदिर प्राप्त होते हैं। ये गुफाएँ गुप्त काल में बनायीं गयी थीं और इनका सम्बन्ध वैष्णव, शैव और शाक्त (दुर्गा) सम्प्रदाय से है। यहाँ गुप्त काल के महत्वपूर्ण शिलालेख भी प्राप्त हुए हैं। यहीं से प्रतिष्ठित वाराह की मूर्ति प्राप्त हुई है जो भू-देवी के उद्धार की कथा से सम्बंधित है। यहाँ से सामान्य गेरुए रंग के चित्र प्राप्त होते हैं।

3.5. स्वातंत्र्योत्तर वास्तुकला

(Post-Independence Architecture)

सुर्ख़ियों में क्यों?

वर्ल्ड मॉन्यूमेंट फंड ने 2018 की अपनी वर्ल्ड मॉन्यूमेंट वॉच लिस्ट में 30 देशों के 25 सांस्कृतिक विरासत स्थलों को शामिल किया है।

वर्ल्ड मॉन्यूमेंट फंड (WMF)

- यह एक निजी गैर-लाभकारी संस्था है जिसे सम्पूर्ण विश्व में महत्वपूर्ण कलानिधियों के तीव्र विनाश के बारे में चिंतित व्यक्तियों द्वारा 1965 में स्थापित किया गया था।
- इसका उद्देश्य, अपने कार्यक्रम **वर्ल्ड मॉन्यूमेंट वॉच** के माध्यम से संकटापन्न सांस्कृतिक विरासत स्थलों की पहचान करना और उनके संरक्षण के लिए प्रत्यक्ष वित्तीय और तकनीकी सहायता प्रदान करना है।

प्रभाव

- वॉच लिस्ट में विरासत स्थलों के प्रवेश का अर्थ है कि वर्तमान में युद्ध, जलवायु परिवर्तन या अन्य खतरों के कारण ये स्थल संकट में हैं।
- इन स्थलों में कैरेबियन देश, खाड़ी देश और मैक्सिको के तूफान वाले क्षेत्र तथा देश में चल रहे गृह युद्ध से क्षतिग्रस्त सीरिया में एलेप्पो का सोक (Souk) शामिल है।
- भारत से **"दिल्ली की स्वातंत्र्योत्तर वास्तुकला"** की पहचान संरक्षण के लिए की गई है।

VISION IAS

- अदालती कार्यवाही की प्रतीक्षा किए बिना प्रगति मैदान में स्थित **'हॉल ऑफ़ नेशंस'** इमारत को तोड़ने के बाद दिल्ली की स्वातंत्र्योत्तर वास्तुकला प्रकाश में आयी। यह इमारत 1972 में प्रसिद्ध वास्तुकार राज रेवल द्वारा बनाई गई थी।

अन्य प्रमुख स्वातंत्र्योत्तर वास्तुशास्त्रीय उदाहरण

- फ्रेंच वास्तुकार ली कार्बूजिए द्वारा सड़कों के अनुक्रमिक संयोजन एवं हरित क्षेत्रों के साथ चंडीगढ़ का शहर नियोजन।
- केरल में **लॉरी बेकर** की सामूहिक आवास परियोजनाओं में स्थानीय रूप से उपलब्ध सामग्री का उपयोग करते हुए भवनों का निर्माण ताकि पर्यावरण के साथ इनका तालमेल किया जा सके।
- चार्ल्स कोरिया के वास्तुशास्त्रीय चमत्कार जिसमें अहमदाबाद के साबरमती आश्रम में महात्मा गांधी मेमोरियल संग्रहालय, जयपुर में जवाहर कला केंद्र, नवी मुंबई शामिल हैं। इनमें स्थानों के निर्धारण में प्रचलित संसाधनों, ऊर्जा और जलवायु पर विशेष बल दिया गया है।

4. भाषाएँ एवं साहित्य

(LANGUAGES AND LITERATURE)

4.1. प्राकृत

(PRAKRIT)

सुर्ख़ियों में क्यों?

- इतिहास में महत्वपूर्ण योगदान के बावजूद, प्राकृत को अभी तक शास्त्रीय भाषा का दर्जा प्राप्त नहीं हुआ है।

भारत सरकार द्वारा **कन्नड़, मलयालम, उडिया, संस्कृत, तमिल और तेलुगु** को शास्त्रीय भाषा का दर्जा दिया गया है।

शास्त्रीय भाषा घोषित करने के लिए मानदंड :

- इसके आरंभिक ग्रंथों की 1500-2000 वर्षों की प्राचीनता।
- कुछ प्राचीन साहित्य / ग्रंथ जिन्हें इस भाषा को बोलने वालों की कई पीढ़ियों द्वारा मूल्यवान विरासत माना जाता रहा हो।
- इसकी अपनी मूल साहित्यिक परंपरा होनी चाहिए न कि किसी अन्य भाषाई समुदाय से उधार ली गयी हो।
- शास्त्रीय भाषा और साहित्य आधुनिक से भिन्न होते हैं अतः शास्त्रीय भाषा और इसके बाद के रूपों या इसकी शाखाओं के मध्य असातत्य हो सकता है।

प्राकृत के बारे में

- मानक भाषा संस्कृत से किसी भी तरह का भेद रखने वाली किसी भी भाषा को व्यापक अर्थों में प्राकृत कहा जाता था। यह वैदिक काल के पश्चात पाली के साथ भारतीयों द्वारा बोली जाने वाली अन्य भाषा थी।
- माना जाता है कि प्राकृत भाषा का उपयोग जैन ग्रंथों को अंगीभूत करते समय किया गया था।
- हाल (300 ईस्वी) द्वारा गाथासप्तशती (700 छंद) की रचना प्राकृत भाषा में की गयी जो श्रृंगारिक साहित्य का अनुपम उदाहरण है। यह 700 छंदों का संकलन है जिसमें 44 कविताओं की रचना स्वयं हाल द्वारा की गयी है।
- जैनों के दो प्रमुख संप्रदायों के पवित्र ग्रंथों (सिद्धांत या आगम) में तीन प्रकार की प्राकृत का प्रयोग किया गया। श्वेतांबर संप्रदाय के सबसे प्राचीन सूत्र **अर्द्ध -मागधी** में लिखे गए हैं, जबकि बाद के ग्रन्थ **महाराष्ट्री** में हैं। दिगंबर संप्रदाय के पवित्र ग्रन्थ **शौरसेनी** में लिखे गए हैं।

4.2. कोंकणी

(Konkani)

सुर्ख़ियों में क्यों?

कोंकणी में बाल साहित्य को प्रोत्साहित और संरक्षित करने के लिए कोंकणी भाषा मंडल द्वारा कोंकणी में 100 पुस्तकों का अनुवाद किया जाएगा।

- **कोंकणी गोवा राज्य की आधिकारिक भाषा है और संविधान की 8वीं अनुसूची में उल्लिखित** 22 **अनुसूचित भाषाओं में से एक है।**

VISION IAS

- कोंकणी भाषा कोंकण और मालाबार तट के समीपवर्ती क्षेत्रों में बोली जाती है।
- कोंकणी एकमात्र ऐसी भाषा है, जिसे पांच अलग-अलग लिपियों - **रोमन**, **देवनागरी**, **कन्नड़**, **फ़ारसी-अरबी और मलयालम** में लिखा जाता है।
- इस भाषा का प्रथम ठोस साक्ष्य मराठी कवि नामदेव (भक्ति संत) के 263वें अभंग से प्राप्त होता है।
- कोंकणी **1556** में मुद्रित की जाने वाली प्रथम एशियाई भाषा बनी।

4.3. साहित्य का नोबेल पुरस्कार: काज़ुओ इशिगुरो

(Nobel Prize in Literature: Kazuo Ishiguro)

सुर्ख़ियों में क्यों?

स्वीडिश अकादमी ने जापानी मूल के ब्रिटिश लेखक **काज़ुओ इशिगुरो** को वर्ष 2017 के साहित्य के नोबेल पुरस्कार से सम्मानित किया।

विषय सम्बन्धी अतिरिक्त जानकारी

- इशिगुरो को इनके उपन्यास **"दी रिमेंस ऑफ द डे"** के लिए सर्वाधिक प्रसिद्धि मिली। इसके लिए उन्हें 1989 में बुकर पुरस्कार भी प्राप्त हुआ।
- उनकी अन्य रचनाओं में 'ए पेल व्यू ऑफ़ हिल्स', और 'एन आर्टिस्ट ऑफ द फ्लोटिंग वर्ल्ड' आदि शामिल हैं।
- रबींद्रनाथ टैगोर एकमात्र भारतीय हैं, जिन्होंने साहित्य में नोबेल पुरस्कार प्राप्त किया है।
- रबींद्रनाथ टैगोर की प्रमुख कृतियों में गीतांजलि, द पोस्टमास्टर, चतुरंगा, चोखेर बाली आदि सम्मिलित हैं।

4.4. पद्मावत

(Padmaavat)

सुर्ख़ियों में क्यों?

- राजपूत प्रत्येक वर्ष फरवरी और मार्च के महीनों में रानी पद्मावती के जौहर (स्व-बलिदान) का उत्सव मनाते हैं।

पद्मावत

- यह 16 वीं सदी में सूफी कवि मलिक मुहम्मद जायसी द्वारा अवधी भाषा में लिखा गया महाकाव्य है। यह महाकाव्य अलाउद्दीन खिलजी द्वारा चित्तौड़ की ऐतिहासिक घेराबंदी की कहानी है।
- मलिक मुहम्मद जायसी 15वीं सदी के एक भारतीय सूफी कवि थे जिन्होंने अवधी और फारसी दोनों भाषाओं में रचनाएं की थीं।

अलाउद्दीन खिलजी के सुधार

- उसने एक विशाल स्थायी सेना को पोषित किया जिसके वेतन का भुगतान **नकद** में किया जाना था।
- उसने **दाग और हुलिया** प्रणाली को लागू किया।
- उसने कीमतों को सुनिश्चित करने के लिए चार अलग-अलग बाजारों और एक विभाग की स्थापना की। वस्तुओं की कीमतें भी निर्धारित की गयी थीं।
- भू-राजस्व का आकलन करने के लिए उसने भूमि की वैज्ञानिक माप की शुरुआत की, ऐसा करने वाला वह दिल्ली का पहला सुल्तान था। उसने खराज भी शुरू किया जिसमें उपज का 50% कर के रूप में राज्य को दिया जाना था।

VISION IAS

- किसी को भी किसानों से सीधे खरीद की अनुमति नहीं थी, केवल व्यापारी ही ऐसा कर सकते थे। दिल्ली के सभी व्यापारियों को स्वयं को पंजीकृत करना आवश्यक था।
- उसने **चौधरी (परगना के मुखिया), खूत (ज़मींदार)** और **मुक़द्दम (गांवों के मुखिया)** के विशेषाधिकारों को भी समाप्त कर दिया। यहां तक कि बड़े ज़मींदार भी करों से नहीं बच सकते थे।
- उसने **दो नए कर-** घोड़े पर लगाया जाने वाला कर और दूध देने वाली सभी गायों पर कर; प्रारम्भ किये। जजिया को गैर-मुसलमानों पर आरोपित किया गया था।

4.5. साहित्य अकादमी पुरस्कार

(Sahitya Akademi Awards)

सुर्ख़ियों में क्यों?

- साहित्य अकादमी ने 24 भाषाओं में अपने वार्षिक पुरस्कारों की घोषणा की जिसमें संविधान में उल्लिखित 22 भाषाओं के साथ अंग्रेजी और राजस्थानी भी सम्मिलित हैं।

साहित्य अकादमी पुरस्कारों के संबंध में

- साहित्य अकादमी किसी भी प्रमुख भारतीय भाषा में प्रकाशित साहित्यिक योग्यताओं वाली सर्वोत्कृष्ट पुस्तकों को पुरस्कार प्रदान करती है।
- **साहित्य अकादमी (इंडियाज नेशनल एकेडमी ऑफ लेटर्स-India's National Academy of Letters)**, देश में साहित्यिक संवाद, प्रकाशन और प्रचार हेतु केंद्रीय संस्था है और यह ऐसा एकमात्र संस्थान है जो 24 भारतीय भाषाओं में साहित्यिक गतिविधियां संचालित करता है।
- **भारत सरकार द्वारा 1954 में** इसकी स्थापना की गयी थी लेकिन यह स्वायत्त रूप में कार्य करती है। यह सोसाइटी पंजीकरण अधिनियम, 1860 के तहत एक सोसाइटी के रूप में पंजीकृत है।

अन्य साहित्य पुरस्कार (Other Literary Awards)

व्यास सम्मान (Vyas Samman)

- **2017 का व्यास सम्मान ममता कालिया को उनकी रचना "दुक्खम सुक्खम" के लिए दिया गया।**
- यह विगत 10 वर्षों में प्रकाशित हिंदी की साहित्यिक कृति के लिए दिया जाने वाला साहित्यिक पुरस्कार है। यह पुरस्कार **1991 से के. के. बिड़ला फाउंडेशन** द्वारा प्रदान किया जाता है ।

भाषा सम्मान (Bhasha Samman)

- 2018 का भाषा सम्मान **मगही** लेखक **शेष आनंद मधुकर** को दिया गया।
- यह पुरस्कार भी साहित्य अकादमी द्वारा प्रदान किया जाता है। यह पुरस्कार उन लेखकों को दिया जाता है जिन्होंने साहित्य अकादमी द्वारा कवर की गयी 24 भाषाओं के अतिरिक्त अन्य भारतीय भाषाओं में महत्वपूर्ण योगदान दिया है।

ज्ञानपीठ पुरस्कार (Gyaanpeeth Award)

- 2017 का ज्ञानपीठ पुरस्कार हिंदी की साहित्यकार कृष्णा सोबती को प्रदान किया गया है।

VISION IAS

- ज्ञानपीठ पुरस्कार **भारतीय ज्ञानपीठ न्यास** द्वारा प्रदान किया जाता है जिसे साहू शांति प्रसाद जैन ने स्थापित किया था। यह ऐसे साहित्यकारों की पहचान करता है जो भारतीय संविधान की आठवीं अनुसूची में सूचीबद्ध 22 भारतीय भाषाओं में से किसी भी भाषा में रचना करते हैं।

सरस्वती सम्मान (Saraswati Samman)

- कोंकणी लेखक महाबलेश्वर सैल को उनकी रचना **"हावठन"** के लिए 2017 का सरस्वती सम्मान प्रदान किया गया।
- यह पुरस्कार संविधान में सूचीबद्ध 22 भारतीय भाषाओं में की गयी किसी उत्कृष्ट गद्यात्मक या पद्यात्मक साहित्यिक कृति के लिए के. के. बिड़ला फाउंडेशन द्वारा दिया जाता है।

संगीत नाटक अकादमी (Sangeet Natak Academi) - संगीत, नृत्य और नाटक के लिए भारत की राष्ट्रीय अकादमी है।

- यह भारत सरकार द्वारा 1952 में स्थापित कला की पहली राष्ट्रीय अकादमी थी। यह सोसाइटी पंजीकरण अधिनियम, 1986 के तहत एक सोसाइटी के रूप में पंजीकृत है।
- यह देश में निष्पादन कला के सर्वोच्च निकाय के रूप में कार्य करती है। यह संगीत, नृत्य और नाटक के रूप में व्यक्त विविधतापूर्ण भारतीय संस्कृति की विशाल अमूर्त विरासत का संरक्षण और प्रसार करती है।
- अकादमी देश की सांस्कृतिक विरासत को बचाने के लिए यूनेस्को जैसे अंतर्राष्ट्रीय संगठनों के साथ भी सहयोग करती है।

ललित कला अकादमी(Lalit Kala Academi)

- यह भारत सरकार द्वारा 1954 में स्थापित कला की राष्ट्रीय अकादमी है। यह सोसाइटी पंजीकरण अधिनियम, 1896 के तहत एक सोसाइटी के रूप में पंजीकृत है।
- यह दृश्य कला के क्षेत्र में भारत सरकार का सर्वोच्च सांस्कृतिक निकाय है। यह एक **स्वायत्त निकाय है, जिसे संस्कृति मंत्रालय द्वारा वित्त पोषित** किया जाता है।

4.6. इंटरनेशनल कांफ्रेंस ऑन डेमेट्रियस गैलानोस

(International Conference on Demetrios Galanos)

सुर्ख़ियों में क्यों?

- इंदिरा गांधी नेशनल सेंटर फॉर आर्ट्स (IGNCA) द्वारा नई दिल्ली में 'डेमेट्रियस गैलानोस एंड हिज लिगेसी ('Demetrios Galanos and his Legacy') पर इंटरनेशनल कांफ्रेंस आयोजित की गई।

IGNCA के संबंध में

- यह संस्कृति मंत्रालय के अंतर्गत एक स्वायत्त कला संस्थान है। इसे पूर्व प्रधान मंत्री इंदिरा गांधी की स्मृति में स्थापित किया गया था।
- इसने भारत के दृष्टिकोण से इंडोलोजी (Indology) को पुनर्कल्पित करने के उद्देश्य के साथ वर्ष 2016 में एक दीर्घावधिक अकादमिक कार्यक्रम-**भारत विद्या प्रयोजना** की शुरूआत की।

VISION IAS

डेमेट्रियस गैलानोस के संबंध में (About Demetrios Galanos)

- वह एक ग्रीक विद्वान थे, जो 19वीं शताब्दी में अध्ययन करने के लिए भारत आये थे।
- उन्होंने कई अन्य संस्कृत ग्रंथों के साथ भगवद् गीता का ग्रीक भाषा में अनुवाद किया। इनका प्रमुख योगदान लगभग 9000 शब्दों के संस्कृत-इंग्लिश-यूनानी शब्दकोष का संकलन था।

अन्य प्रसिद्ध अनुवादक(Other Famous Translators)

- **चार्ल्स विल्किंस:** यह भगवद गीता का अंग्रेजी में अनुवाद करने वाले प्रथम अनुवादक के रूप में प्रसिद्ध है। इन्होंने 1785 में एक पुस्तक प्रकाशित की, जिसका शीर्षक 'भगवद् गीता या डायलॉग्स ऑफ़ कृष्ण एंड अर्जुन' था।
- **जेम्स प्रिंसेप :** वह एशियाटिक सोसायटी ऑफ़ बंगाल जर्नल के संस्थापक संपादक थे एवं उन्हें प्राचीन भारत की खरोष्ठी और ब्राह्मी लिपियों को समझने के लिए जाना जाता है।

VISION IAS

5. जनजाति

(TRIBE)

5.1. बोंडा जनजाति

(Bonda Tribe)

सुर्ख़ियों में क्यों?

- बोंडा विकास एजेंसी (BDA) ने उड़ीसा के मलकानगिरी जिले के बोंडा आबादी वाले सुदूर गांवों में जांच और सर्वेक्षण का कार्य आरंभ किया है।

बोंडा जनजातिः एक परिचय

- बोंडा दक्षिण पश्चिमी उड़ीसा के मलकानगिरी जिले में निवास करने वाली प्राचीन जनजातियों में से एक है।
- बोंडा को अनुसूचित जनजाति में रखा गया है और इन्हें दो समूहों में विभाजित किया जाता है- *अपर* बोंडा और *लोअर* बोंडा।
- बोंडा जनजाति की अपनी भाषा **"रेमो"** है। इस भाषा की लिपि नहीं है। यह मुंदरी भाषा समूह से संबंधित है। शोधकर्ताओं के अनुसार यह आस्ट्रो-एशियाटिक भाषा परिवार के सदस्य हैं।
- वे अभी भी अपनी आदिम सामाजिक प्रथाओं और परंपराओं को अपनाये हुए हैं।
- बोंडा में अनूठी विवाह परंपरा है जो कि मातृसत्तात्मक व्यवस्था प्रदर्शित करती है इसमें अधिक आयु की महिलाएं अपने से कम आयु के पुरुषों से विवाह करती हैं।

5.2. टोडा जनजाति

(Toda Tribe)

सुर्ख़ियों में क्यों?

- हाल ही में, जनजातीय अनुसंधान केंद्र (TRC) ऊंटी ने जनगणना निदेशालय की इस रिपोर्ट का खंडन किया है कि टोडा और कोटा बोलियां विलुप्त होने के कगार पर हैं।

टोडा जनजाति के संबंध में

- **विस्तार**: दक्षिणी भारत के पृथक नीलगिरि पठारी क्षेत्रों में।
- अपने आस-पास के लोगों से पहनावे, व्यवहार और रिवाजों में भिन्नता के कारण टोडा जनजाति ने लोगों का अत्यधिक ध्यान आकर्षित किया है।
- टोडा जनजाति की भूमि अब नीलगिरि बायोस्फीयर रिजर्व का एक हिस्सा है। यह बायोस्फीयर रिजर्व यूनेस्को द्वारा निर्दिष्ट एक इंटरनेशनल बायोस्फीयर रिजर्व है तथा इसे यूनेस्को का विश्व धरोहर स्थल भी घोषित किया गया है।
- इनका एकमात्र व्यवसाय पशुचारण व दुग्ध-उत्पादन है। इनके धर्म में भैंस का प्रमुख स्थान है।

कोटा (Kota) जनजाति के संबंध में

- कोटा जनजाति को तमिलनाडु की नीलगिरि पहाड़ियों के लिए देशज (indigenous) माना जाता है। उनका कोटा नाम बाहरी लोगों द्वारा दिया गया था। वे स्वंय को कोव्स (kovs) कहते हैं।
- कोटा जनजातीय भाषा जिसे "को-वी मा- न्ट"("Ko-v Ma-nt") कहा जाता है, कन्नड़ भाषा की अति प्राचीन व आदिम बोली है तथा यह टोडा भाषा से काफी निकटता से जुड़ी हुई है।
- कोटा जनजाति स्वंय को हिंदू मानती है। वे जाति व्यवस्था में विश्वास नहीं करते हैं।

5.3. सोलिगा जनजाति

(Soliga Tribe)

सुर्ख़ियों में क्यों?

- कॉफी बोर्ड और सामाजिक कल्याण विभाग ने सोलिगा जनजाति द्वारा विकसित फलियों (बीन्स) की ब्रांडिंग हेतु 2.05 करोड़ रुपये की एक परियोजना आरंभ की है।

VISION IAS

सोलिगा जनजाति के संबंध में

- सोलिगा खानाबदोश लोग हैं जो सदियों से **दक्षिणी कर्नाटक के बिलिगिरिरंगा पहाड़ी क्षेत्र** में रहते हैं।
- सोलिगा- इनके नाम का अर्थ है बांस का बच्चा तथा ये लोग शहद, जामुन और लकड़ी जैसे वन्य उत्पादों पर अपना जीवन यापन करते हैं।
- सोलिगा जनजाति द्वारा, शोलगा भाषा (Soliganudi) बोली जाती है जोकि द्रविड़ परिवार की एक भाषा है।

5.4. रियांग जनजाति

(Reang Tribe)

सुर्ख़ियों में क्यों?

- हाल ही में, त्रिपुरा की दूसरी सबसे बड़ी जनजाति, रियांग पर एक पुस्तक का विमोचन किया गया है।

रियांग जनजाति के संबंध में

- ये एक चरवाहा (पशुचारण) जनजाति है।
- ये स्वंय की पहचान **ब्रू (BRU)** के रूप में करते हैं।
- रियांग समाज की प्रकृति पितृसत्तात्मक है।
- ये **काओ-ब्रू (Kao-Bru) भाषा** बोलते हैं जो **तिब्बती-बर्मी मूल** की है। हालांकि, इनकी अपनी कोई लिपि नहीं है।
- ये **'होजागिरि'** लोक नृत्य के लिए जाने जाते हैं जिसमें महिलाओं का एक समूह मिट्टी के घड़ों पर खड़े होकर स्वयं को संतुलित करता है और साथ ही रंगमंच की अन्य सामग्रियों का उपयोग कर प्रदर्शन करता है। यह लोकनृत्य फसलों की कटाई के साथ जुड़ा हुआ है।

5.5. सिद्दी जनजाति

(Siddi Tribe)

- **सिद्दी** भारत और पाकिस्तान में निवास करने वाला एक नृजातीय समूह है, जिन्हें **सिदी, हब्शी** या **मकरानी** भी कहा जाता है।
- ये उत्तर-पूर्वी और पूर्वी अफ्रीका में अफ्रीकियों के वंशज हैं, जिन्हें भारत में दासों, सैनिकों या नौकरों के रूप में लाया गया था।
- सिद्दी दक्षिण-पूर्वी अफ्रीका के बंटू लोगों के वंशज हैं। इनमें से कुछ व्यापारी, नाविक, गिरमिटिया दास तथा भाड़े के सैनिक (mercenaries) थे।
- **विस्तार:** इस जनजाति की अधिकांश आबादी भारत में कर्नाटक, गुजरात और हैदराबाद तथा पाकिस्तान में मकरान तथा कराची में निवास करती है।
- **धर्म:** सिद्दी मुख्य रूप से सूफी मुस्लिम हैं, यद्यपि कुछ हिन्दू एवं रोमन कैथोलिक ईसाई भी हैं।
- गुजरात में सिद्दी गिर राष्ट्रीय उद्यान एवं वन्यजीव अभयारण्य के आस-पास निवास करते हैं।

5.6. जारवा जनजाति

(Jarawa Tribe)

- **जारवा, ग्रेट अंडमानी, ओंगे और सेंटिनली** अंडमान द्वीपों की जनजातियाँ हैं। ऐसा माना जाता है कि ये जनजातियाँ यहाँ 55,000 वर्षों से निवास कर रही हैं।
- जारवा एक शिकारी-संग्राहक (hunter-gatherer) जनजाति है, जिन्हें पृथ्वी पर सबसे एकांकी लोगों में से एक माना जाता है। ये अंडमान द्वीप के घने जंगलों में रहती हैं तथा बाह्य विश्व से पूर्ण रूप से कटी हुई हैं।
- यद्यपि बाहरी लोगों के बढ़ते प्रवाह के कारण जारवा विलुप्त होने के खतरे का सामना कर रहे हैं।

अन्य जनजातियों के संबंध में

- **अंडमानी (Andamanese)-** इनकी जनसंख्या इन द्वीपों में पाई जाने वाली अन्य जनजातियों में सर्वाधिक है। ये अंडमानी हिंदी बोलते हैं।

VISION IAS

- **ओंगे (Onges)-** यह भारत में सर्वाधिक आदिम जनजातियों में से एक है। ये अर्द्ध खानाबदोश हैं तथा प्रकृति द्वारा प्रदत्त खाद्य पर पूर्णतः निर्भर हैं। ये कला-कौशल और शिल्प विकसित कर चुके हैं तथा डोंगियों (canoes) का निर्माण कर सकते हैं।
- **सेंटिनली (Sentinelese)-** ये उत्तरी सेंटिनल द्वीप के निवासी हैं और पूर्ण एकांकी जीवन व्यतीत करते हैं। इनका व्यवहार बहुत शत्रुतापूर्ण होता है तथा ये अपने द्वीप को कभी नहीं छोड़ते हैं।

5.7. कोया जनजाति

(Koya Tribe)

- कोया आंध्र प्रदेश की कुछ बहुभाषी तथा बहु नस्लीय कृषक जनजातियों में से एक हैं।
- शारीरिक रूप से इन्हें आस्ट्रेलॉयड के रूप में वर्गीकृत किया जाता है। कोया स्वयं को "**कोइथुर**" कहते हैं।
- कोया "**कोयी**" भाषा बोलते हैं। यह गोंडी भाषा से निकटता से सम्बंधित है तथा यह तेलुगु से प्रभावित है।
- कोया अपने स्वयं के नृजातीय धर्म का पालन करते हैं, किन्तु वे बहुत से हिन्दू देवी-देवताओं की उपासना भी करते हैं।

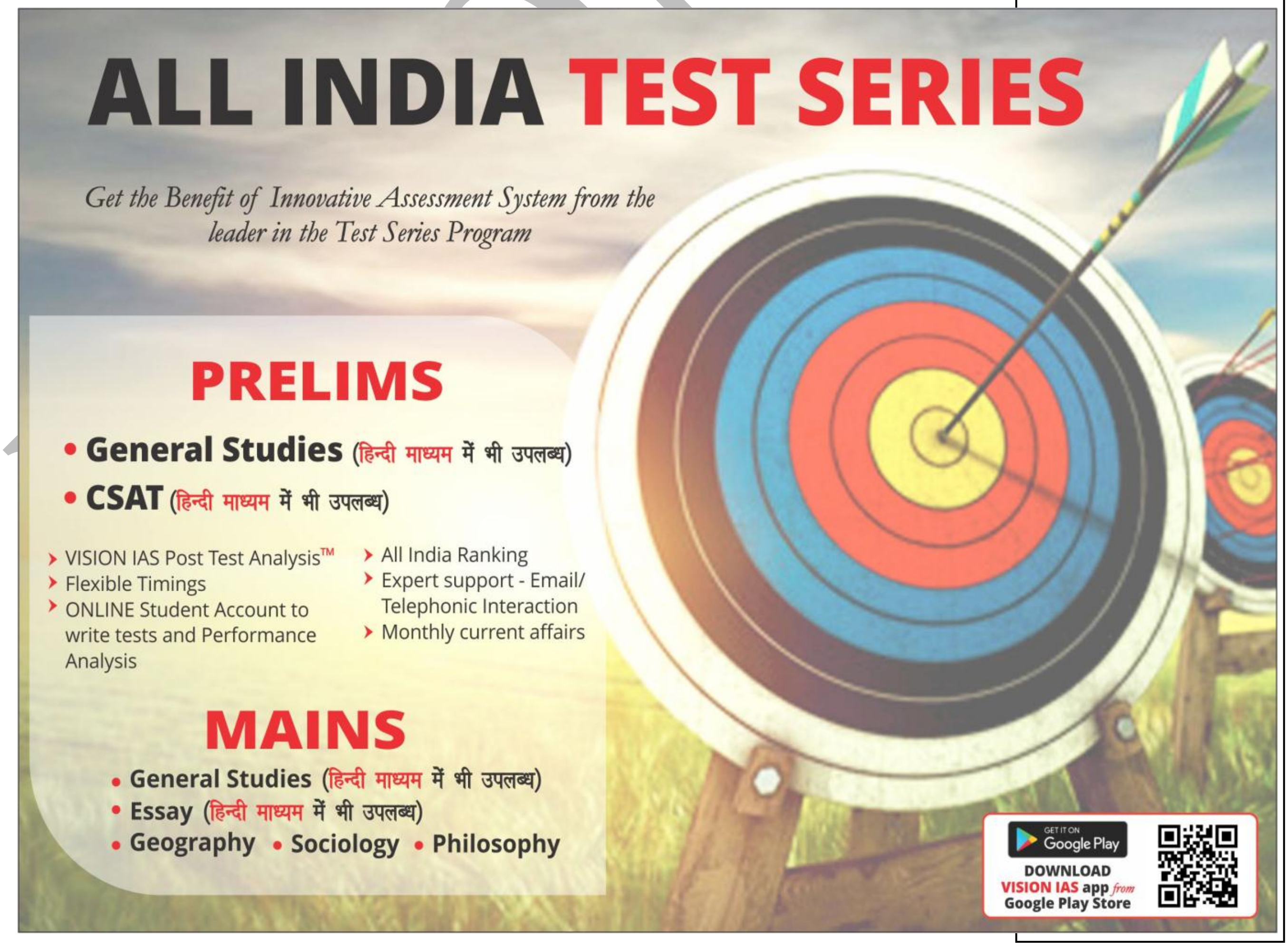

6. यूनेस्को द्वारा आरम्भ की गयी पहलें

(INITIATIVES OF UNESCO)

यूनेस्को (संयुक्त राष्ट्र शैक्षिक, वैज्ञानिक एवं सांस्कृतिक संगठन) शिक्षा, विज्ञान, संस्कृति एवं संचार के समन्वय में अंतर्राष्ट्रीय सहयोग हेतु उत्तरदायी है। यह राष्ट्रों तथा समाजों के मध्य संबंधों को सुदृढ़ करने के साथ व्यापक स्तर पर लोगों को संगठित करता है जिससे प्रत्येक बच्चा एवं नागरिक:

- गुणवत्ता युक्त शिक्षा तक पहुंच प्राप्त कर सके- एक बुनियादी मानवाधिकार एवं संधारणीय विकास हेतु एक अपरिहार्य शर्त;
- विविधता तथा संवाद से समृद्ध एक सांस्कृतिक परिवेश में विकास कर सके एवं निवास कर सके, जहां धरोहर पीढ़ियों तथा लोगों के मध्य सेतु स्थापित करने का कार्य करती है ;
- वैज्ञानिक प्रगति से पूरी तरह से लाभान्वित हो सके;
- और अभिव्यक्ति की पूर्ण स्वतंत्रता; लोकतंत्र का मूलाधार, विकास तथा मानव गरिमा का लाभ प्राप्त कर सके।

6.1.कुंभ मेला

(Kumbh Mela)

सुर्खियों में क्यों?

हाल ही में यूनेस्को ने कुम्भ मेले को **'मानवता की अमूर्त सांस्कृतिक धरोहर'** की प्रतिनिधि सूची में सम्मिलित किया है।

कुम्भ मेला

- कुम्भ मेला (पवित्र कलश का त्योहार) विश्व में श्रद्धालुओं का सबसे बड़ा शांतिपूर्ण समागम है। यह पवित्र नदियों में उपासना एवं स्वच्छता से संबंधित अनुष्ठानों के समन्वय का प्रतिनिधित्व करता है।
- यह हिन्दुओं का प्रमुख त्योहार है, जिसे प्रत्येक बारह वर्षों के अन्तराल पर पौष माह (22 दिसंबर- 20 जनवरी) की पूर्णिमा के समय मनाया जाता है। इसमें पवित्र नदी में स्नान करने के साथ -साथ विभिन्न अनुष्ठानों का आयोजन किया जाता है।
- प्रत्येक चार वर्षों में चक्रीय आधार पर इसका आयोजन निम्न स्थलों पर किया जाता है:
    - **हरिद्वार** (गंगा नदी के तट पर),
    - **इलाहाबाद** (गंगा, यमुना और सरस्वती के संगम पर),
    - **नासिक** (गोदावरी नदी के तट पर),
    - **उज्जैन** (क्षिप्रा नदी के तट पर)
- 'कुंभ मेले' से संबंधित ज्ञान साधु एवं संतों द्वारा गुरु-शिष्य परंपरा के माध्यम से प्रसारित हुआ है।
- इतिहास में 'कुम्भ मेले' के विषय में विवरण **ह्वेन सांग** की रचनाओं में मिलता है। ह्वेन सांग सातवीं सदी में हर्षवर्धन के शासनकाल में भारत आया था। आठवीं सदी में **शंकराचार्य** के द्वारा भी इस त्योहार को जन साधारण के मध्य प्रचलित किया गया था।

- **ह्वेन त्सांग (युवान चांग या युआन-त्यांग)** एक चीनी यात्री था। वह **हर्षवर्धन** के शासनकाल के दौरान भारत आया था।
- जब वह वापस चीन लौटा, तब उसने अपनी पुस्तक **'सी-यू-की' या 'रिकॉर्ड ऑफ़ द वेस्टर्न कंट्रीज'** में भारत के संदर्भ में विस्तृत वर्णन लिखा।
- उसका वर्णन, तत्कालीन भारत के प्रशासनिक, सामाजिक और सांस्कृतिक स्थिति के ज्ञान का एक महत्वपूर्ण स्रोत माना जाता है।
- उसने उत्तर और दक्षिण भारत के विभिन्न स्थानों का भ्रमण किया। वह नालंदा विश्वविद्यालय में पांच वर्ष तक रहा।
- उसने **चतुर्थ बौद्ध संगीति** के संदर्भ में लिखा। यह कुषाण राजा कनिष्क के शासनकाल के तहत 72 ईस्वी में कश्मीर के कुण्डलवन में आयोजित की गई थी ।

VISION IAS

यूनेस्को की अमूर्त सांस्कृतिक धरोहरों की सूची:

- इस सूची को अमूर्त धरोहर को प्रोत्साहन देने और उनके महत्व के सम्बंध में जागरूकता के प्रसार के लिए तैयार किया गया है। इसका निर्माण **कन्वेंशन फॉर सेफगार्डिंग दि इनटैन्जिबल कल्चरल हेरिटेज** के प्रभाव में आने के पश्चात किया गया था।
- **अमूर्त सांस्कृतिक धरोहर का अर्थ-** प्रथाएँ, अभिव्यक्तियाँ, वर्णन, ज्ञान व कौशल के साथ-साथ इनसे संबंधित उपकरण, वस्तुएँ, प्राचीन कलाकृतियाँ और सांस्कृतिक स्थल; जिन्हें समुदायों, समूहों और कुछ मामलों में, व्यक्ति-विशेष द्वारा अपनी सांस्कृतिक धरोहर के एक भाग के रूप में महत्व दिया जाता है, अमूर्त सांस्कृतिक धरोहर कहलाती हैं।
- **अमूर्त सांस्कृतिक धरोहर के संरक्षण के लिए गठित अंतर-सरकारी समिति**, सदस्य देशों द्वारा प्रस्तावित नामांकनों का मूल्यांकन करती है। इसके बाद इस सूची को प्रत्येक वर्ष प्रकाशित किया जाता है।
- यूनेस्को दो पृथक सूचियाँ प्रकाशित करती है:
    - **मानवता की अमूर्त सांस्कृतिक धरोहर की सूची** - इसमें उन अमूर्त धरोहरों को शामिल किया जाता है, जो सांस्कृतिक विविधता का प्रतिनिधित्व करती हैं।
    - **ऐसी अमूर्त सांस्कृतिक धरोहरों की सूची, जिन्हें तत्काल संरक्षण की आवश्यकता है-** इसमें उन अमूर्त धरोहरों को शामिल किया जाता है, जिन्हें संरक्षण के लिए तत्काल उपाय किए जाने की आवश्यकता है। यह अंतर्राष्ट्रीय सहयोग प्राप्त करने में भी सहायता करती है।

यह **'रजिस्टर ऑफ़ गुड सेफगार्डिंग प्रैक्टिसेज' (Register of Good safeguarding practices)** का प्रकाशन भी करता है। इस रजिस्टर में, वे कार्यक्रम, परियोजनाएँ और गतिविधियाँ सम्मिलित होती हैं जो कन्वेंशन के सिद्धांतों को सर्वोत्तम रूप से प्रतिबिंबित करती हैं।

- भारत की यूनेस्को की अमूर्त सांस्कृतिक धरोहर की सूची में शामिल होने वाली अन्य प्रविष्टियां :
    - **योग-** एक प्राचीन आध्यात्मिक अनुशासन है, जो मन और शरीर के मध्य सामंजस्यता पर केंद्रित है।
    - **पंजाब में ठठेरों के मध्य पारंपरिक रूप से पीतल और तांबे से बनाए जाने वाले बर्तनों की शिल्पकला।**
    - **संकीर्तन** - मणिपुर के गायन, नृत्य और ढोल बजाने की परंपरा।
- **लद्दाख में बौद्ध भिक्षुओं का मंत्र उच्चारण-** पवित्र बौद्ध ग्रंथों का पाठ/उच्चारण।
- **छऊ नृत्य-** इस नृत्य का प्रदर्शन एक मुखौटे के साथ किया जाता है। यह पूर्वी भारत की जनजातीय मार्शल नृत्य शैली है, जिसमें महाकाव्यों (महाभारत, रामायण आदि), स्थानीय लोकगीत और काल्पनिक विषयों से संबंधित घटनाओं का अभिनय किया जाता है।
- **कालबेलिया लोक गीत और नृत्य** - कालबेलिया गीतों और नृत्य का अभिनय राजस्थानी जनजाति द्वारा किया जाता है। कालबेलिया को सपेरा जाति (snake-charmers) के रूप में भी जाना जाता है।
- **कूडियाट्टम** - यह केरल के संस्कृत नाट्यकला की एकमात्र जीवित परंपरा है।
- **वैदिक मंत्रों के उच्चारण की परंपरा**
- **रामलीला** - रामायण का पारंपरिक प्रदर्शन।
- **रम्मन** - भारत में गढ़वाल हिमालय की धार्मिक और अनुष्ठानिक नाट्यकला।
- **मुदियेत्तु-** केरल का धर्मिक और नृअनुष्ठानिक नाट्यकला।
- **नवरोज** - यह पारसी नव वर्ष और वसंत ऋतु के आगमन का प्रतीक है।

6.2. संकटग्रस्त विश्व धरोहर स्थलों की सूची

(List of World Heritage in Danger)

सुर्ख़ियों में क्यों?

- वर्ल्ड हेरिटेज कमिटी ने यूनेस्को के वर्ल्ड हेरिटेज कन्वेंशन के अनुच्छेद 11(4) के अनुरूप 54 परिसम्पत्तियों को संकटग्रस्त विश्व धरोहर स्थलों (WORLD HERITAGE IN DANGER) की सूची में सम्मिलित करने का निर्णय लिया है।

VISION IAS

यूनेस्को का वर्ल्ड हेरिटेज कन्वेंशन

- यह कन्वेंशन, वर्ल्ड हेरिटेज लिस्ट में सम्मिलित किए जा सकने वाले प्राकृतिक या सांस्कृतिक स्थलों को परिभाषित करता है।
- "वर्ल्ड हेरिटेज सिटी" तथा "संकटग्रस्त विश्व धरोहर स्थल" जैसी गतिविधियां यूनेस्को के इसी कन्वेंशन के तहत आती हैं।

संकटग्रस्त विश्व धरोहर स्थलों की सूची

- "इन-डेंजर" सूची अंतरराष्ट्रीय समुदाय को उन स्थितियों से अवगत कराती है जो किसी वर्ल्ड हेरिटेज साइट की उन विशेषताओं हेतु संकटप्रद है जिनके आधार पर उस परिसम्पत्ति को वर्ल्ड हेरिटेज लिस्ट में सम्मिलित किया गया था। इसके साथ ही यह सरकारों को उन स्थलों को संरक्षित करने हेतु कार्रवाई करने के लिए प्रोत्साहित करती है।
- इस सूची में कोई भी भारतीय स्थल नहीं है।
- 2017 की संकटग्रस्त सूची में सम्मिलित विश्व धरोहर स्थल
  - हिस्टोरिक सेंटर ऑफ़ वियना, ऑस्ट्रिया
  - हेब्रोन/अल-खालिद ओल्ड टाउन, फिलिस्तीन

6.3. वर्ल्ड हेरिटेज सिटी

(World Heritage City)

- क्राको, पोलैंड में संपन्न वर्ल्ड हेरिटेज कमिटी (WHC) की बैठक के 42वें सत्र के दौरान यूनेस्को द्वारा अहमदाबाद के 606 वर्ष पुराने चारदीवारी युक्त शहर को वर्ल्ड हेरिटेज सिटी घोषित किया गया।
- आधुनिक अहमदाबाद की स्थापना 1411 ईस्वी में अहमद शाह द्वारा आशावल और कर्णावती के प्राचीन स्थलों पर की गई थी।
- इस शहर में विद्यमान हिंदू और जैन मंदिरों तथा इस्लामी और यूरोपीय वास्तुकला का समृद्ध मिश्रण इसकी सामासिक संस्कृति का परिचायक है।

भारत में विश्व विरासत स्थल :

मानव निर्मित स्थल	
आगरा का किला	अजंता की गुफाएं
साँची के बौद्ध स्मारक	चंपानेर–पावागढ़ का पुरातत्व उद्यान
छत्रपति शिवाजी टर्मिनस/टर्मिनल (पूर्व विक्टोरिया टर्मिनस)	गोवा के चर्च और कान्वेन्ट्स
एलिफेंटा की गुफाएं	एलोरा की गुफाएं
फतेहपुर सीकरी	महान प्राणवान चोल मंदिर
हंपी में स्मारकों का समूह	महाबलीपुरम के स्मारकों का समूह
पट्टडकल के स्मारकों का समूह	राजस्थान के पहाड़ी किले
हुमायूँ का मकबरा, दिल्ली	खजुराहो के स्मारकों का समूह
महाबोधि मन्दिर, बोधगया	भारत के पर्वतीय रेलमार्ग

VISION IAS

क़ुतुब मीनार, दिल्ली	रानी की वाव (रानी की बावड़ी) पाटन, गुजरात
लाल किला	भीमबेटका शैलाश्रय
सूर्य मन्दिर, कोणार्क	ताजमहल
जंतर-मंतर, जयपुर	नालंदा महावीर का पुरातत्व स्थल (नालंदा विश्वविद्यालय), बिहार
ली कोर्बुज़िए का स्थापत्य कार्य (चंडीगढ़ कैपिटल कॉम्प्लेक्स)	अहमदाबाद का ऐतिहासिक शहर
प्राकृतिक स्थल	
ग्रेट हिमालयन राष्ट्रीय उद्यान	काज़ीरंगा राष्ट्रीय उद्यान
केवलादेव राष्ट्रीय उद्यान	मानस वन्यजीव अभ्यारण
नंदा देवी एवं फूलों की घाटी राष्ट्रीय उद्यान	सुंदरवन राष्ट्रीय उद्यान
पश्चिमी घाट	मिश्रित विश्व धरोहर स्थल के रूप में: कंचनजंगा राष्ट्रीय उद्यान

6.4 यूनेस्को एशिया पेसिफिक अवार्ड् ऑफ़ मेरिट

(UNESCO Asia Pacific Award of Merit)

सुर्ख़ियों में क्यों?

तमिलनाडु के श्रीरंगम में श्री रंगनाथस्वामी मंदिर को सांस्कृतिक विरासत संरक्षण के लिए यूनेस्को एशिया पेसिफिक अवार्ड् ऑफ़ मेरिट 2017 से सम्मानित किया गया।

सांस्कृतिक विरासत संरक्षण कार्यक्रम के लिए यूनेस्को एशिया पेसिफिक अवार्ड्स

- इसका उद्देश्य अपने विरासत मूल्यों को प्रभावित किए बिना ऐतिहासिक संरचनाओं की मरम्मत और संरक्षण के लिए किए गए प्रयासों को स्वीकार करना है।
- पुरस्कारों को चार श्रेणियों के अंतर्गत वर्गीकृत किया गया है -अवार्ड् ऑफ़ एक्सीलेंस, अवार्ड्स ऑफ़ डिसटिंगशन, अवार्ड् ऑफ़ मेरिट और अवार्ड् फॉर न्यू डिज़ाइन इन हेरिटेज कांटेक्स्ट ।
- मुंबई के क्राइस्ट चर्च और रॉयल बॉम्बे ओपेरा हाऊस भारत के अन्य ऐसे स्मारक हैं जिन्हें इस वर्ष का अवार्ड ऑफ़ मेरिट प्राप्त हुआ है।

श्री रंगनाथस्वामी मंदिर के संदर्भ में

- इसे 108 सबसे महत्वपूर्ण **मुख्य विष्णु मंदिरों (दिव्यदेशम)** में से एक माना जाता है।
- यह मंदिर **दो नदियों, कावेरी और कोलरून द्वारा बनाए गए एक द्वीप** पर स्थित है।
- इसमें सात प्राकार या संलग्न दीवारें हैं ।
- यह एक **वैष्णव मंदिर** है जिसे वास्तुकला की **तमिल या द्रविड़ शैली** में निर्मित किया गया है। मंदिर और 1000 स्तंभों वाले सभागृह का निर्माण एक पुराने मंदिर के स्थान पर विजयनगर काल (1336-1565) में किया गया था।

- श्री रंगनाथस्वामी मंदिर का गोपुरम एशिया का **सबसे बड़ा गोपुरम** है। इसे "राजा गोपुरम" भी कहा जाता है।
- इस मंदिर को मंदिर संरचनाओं के पुनर्निर्माण और वर्षा जल संचयन की पुनर्स्थापना तथा ऐतिहासिक अपवाह तंत्र प्रणाली के पुनर्निर्माण में पारंपरिक पद्धति के प्रयोग हेतु यूनेस्को पुरस्कार दिया गया।

द्रविड़ वास्तुकला

- यह वास्तुकला की एक शैली है, जो मुख्य रूप से दक्षिण भारत की मंदिर वास्तुकला में पायी जाती है। मंदिर वास्तुकला की यह शैली **7 वीं से 18** वीं सदी तक विद्यमान थी। यह अपने पिरामिड टॉवर और संरचनात्मक विशालता के लिए विख्यात थी।
- द्रविड़ शैली का उद्भव चोल राजवंश के शासनकाल में देखा जा सकता है। इसके अतिरिक्त, यह **पल्लव वंश के राजाओं, पांड्या, विजयनगर के राजाओं और मदुरा के नायकों** द्वारा भी विकसित की गई थी।
- प्राचीनतम उदाहरणों में से एक **महाबलीपुरम का शैलोत्कीर्णित (rock cut) मंदिर या इसके पास का तटीय मंदिर (shore temple)** है।
- इस शैली के मंदिर विमान, गोपुरम, मंडपम से युक्त होते हैं।
- **विमान** भूमि का केंद्रीय भूखंड होता था। इसमें एक वर्गीय कक्ष देवालय होता था, जहां मुख्य भगवान की मूर्ति को रखा जाता था।
- सामने की दीवार में प्रवेश द्वार को **गोपुरम** कहा जाता है।
- एक स्तंभ युक्त मंडप या हॉल होता था जो मंदिर के विभिन्न भागों को संदर्भित करता है, उसे **मंडपम** कहा जाता है।
- मंदिर प्रांगण के अंदर जल का सरोवर भी मौजूद था।
- पत्थर या कांस्य से बनी देवता की मूर्ति को मंदिर के सबसे पवित्र स्थान, **"गर्भगृह"** के अंदर रखा जाता था।
- द्रविड़ शैली के मंदिरों के कुछ अन्य उदाहरण **तंजौर में बृहद्धेश्वर** (राजराज प्रथम द्वारा निर्मित), **गंगाईकोंडचोलपुरम मंदिर** (राजेंद्र प्रथम द्वारा निर्मित) आदि हैं।

6.5. रचनात्मक शहरों के नेटवर्क की सूची

(Creative Cities Network List)

सुर्खियों में क्यों?

हाल ही में चेन्नई को यूनेस्को के रचनात्मक शहरों के नेटवर्क ('यूनेस्को क्रियेटिव सिटीज नेटवर्क') की सूची में सम्मिलित किया गया है।

रचनात्मक शहरों का नेटवर्क क्या है?

- इसे 2004 में निर्मित किया गया था। इसका उद्देश्य ऐसे **शहरों के साथ तथा उनके मध्य सहयोग** को बढ़ावा देना है जिन्होंने 'रचनात्मकता' को धारणीय शहरी विकास के एक रणनीतिक कारक के रूप में स्वीकृति प्रदान की है।
- 7 रचनात्मक क्षेत्रों अर्थात् शिल्प और लोक कला, डिजाइन, फिल्म, पाक कला, साहित्य, संगीत और मीडिया आर्ट्स के आधार पर शहरों को दर्जा प्रदान किया जाता है।

VISION IAS

- इस नेटवर्क में सम्मिलित होकर, शहर **अपनी सर्वश्रेष्ठ कार्यप्रणाली साझा करने, साथ ही** सार्वजनिक एवं निजी क्षेत्र तथा नागरिक समाज के साथ **साझेदारी विकसित करने हेतु** प्रतिबद्ध हैं।
- चेन्नई को अपनी समृद्ध संगीत परंपरा के लिए यूनेस्को के रचनात्मक शहरों के नेटवर्क की सूची में सम्मिलित किया गया है। जयपुर (शिल्प) और वाराणसी (संगीत) के बाद इस सूची में शामिल किया जाने वाला यह **तीसरा भारतीय शहर** है।

6.6. यूनेस्को की इन्डैन्जर्ड सूची

(UNESCO's Endangered List)

सुर्ख़ियों में क्यों?

- यूनेस्को द्वारा तैयार की गई एक सूची के अनुसार भारत की 42 भाषाएँ लुप्तप्राय (इन्डैन्जर्ड) हैं और सम्भवतः यह विलुप्ति की ओर अग्रसर हैं। ये भाषाएँ 10,000 से भी कम लोगों द्वारा बोली जाती हैं।

संबंधित तथ्य

- भारतीय संविधान की आठवीं अनुसूची (अनुच्छेद 344(1) एवं 351) में भारत की 22 अनुसूचित भाषाओं का उल्लेख किया गया है।
- इन 22 अनुसूचित भाषाओं के अतिरिक्त, 31 अन्य भाषाओं को राज्य सरकारों और केंद्र शासित प्रदेशों द्वारा आधिकारिक भाषा का दर्जा प्रदान किया गया है।
- जनगणना निदेशालय की एक रिपोर्ट के अनुसार 100 गैर-अनुसूचित भाषाएँ हैं, जो एक लाख या उससे अधिक लोगों द्वारा बोली जाती हैं।

सरकारी पहलें

- **भारत सरकार** ने 2014 में **"भारत की लुप्तप्राय भाषाओं की सुरक्षा और संरक्षण"** की एक योजना प्रारम्भ की थी।
- इस योजना के अधीन, **केन्द्रीय भारतीय भाषा संस्थान (CIIL), मैसूर** देश में 10,000 से कम लोगों द्वारा बोली जाने वाली सभी मातृभाषाओं/भाषाओं (विलुप्ति की मात्रा और उपयोग के प्रक्षेत्र (domain) में कमी को ध्यान में रखते हुए) की सुरक्षा, संरक्षण और प्रलेखन का कार्य करता है।
- इस कार्यक्रम के अंतर्गत व्याकरण संबंधी व्याख्याएँ, एकभाषीय एवं द्विभाषीय शब्दकोश, भाषा प्रवेशिका, लोक-साहित्य के संकलन, सभी भाषाओँ या उपभाषाओं (विशेष रूप से वे जो 10,000 से कम लोगों द्वारा बोली जाती हैं) के विश्वकोष तैयार किए जा रहे हैं।

यूनेस्को ने विलुप्ति के संकट (endangerment) के आधार पर भाषाओं का वर्गीकरण निम्नानुसार किया है:

- सुभेद्य (Vulnerable)
- निश्चित रूप से संकटाग्रस्त (Definitely Endangered)
- गम्भीर रूप से संकटाग्रस्त (Severely Endangered)
- अत्यधिक गम्भीर रूप से संकटाग्रस्त (Critically Endangered)

6.7. कांफ्रेंस ऑन टूरिज्म एंड कल्चर

(Conference on Tourism and Culture)

सुर्ख़ियों में क्यों?

- अक्टूबर 2017 में **संधारणीय विकास** पर केन्द्रित **द्वितीय UN वर्ल्ड टूरिज्म आर्गेनाइजेशन / UNESCO वर्ल्ड कांफ्रेंस ऑन टूरिज्म एंड कल्चर** का आयोजन किया गया था।

VISION IAS

कांफ्रेंस के विषय में

- इसका सबसे पहले 2015 में आयोजन किया गया था। इसमें पहली बार विश्व के सभी पर्यटन एवं संस्कृति मंत्रियों को एक साथ एक मंच पर लाया गया, जिसका उद्देश्य इन उच्च अंतःस्थापित क्षेत्रों के मध्य एक सुदृढ़ सहयोग हेतु महत्वपूर्ण अवसरों एवं चुनौतियों की पहचान करना था।

यूनाइटेड नेशन्स वर्ल्ड टूरिज्म आर्गेनाइजेशन

- यह एक संयुक्त राष्ट्र की एजेंसी है जो उत्तरदायी, संधारणीय एवं सार्वभौमिक रूप से सुगम्य पर्यटन को बढ़ावा देने हेतु उत्तरदायी है।
- UNWTO **पर्यटन की वैश्विक आचार संहिता** के क्रियान्वयन को प्रोत्साहित करता है, ताकि पर्यटन के संभावित नकारात्मक प्रभावों को कम करते हुए इसके सामाजिक-आर्थिक योगदान को बढ़ावा मिल सके।
- यह **सतत विकास लक्ष्य (SDG)** की प्राप्ति में पर्यटन को एक उपकरण के रूप में बढ़ावा देने के लिए प्रतिबद्ध है जो गरीबी को कम करने के साथ ही वैश्विक सतत विकास को प्रोत्साहित करने में अग्रसर रहे।

VISION IAS

7. धार्मिक एवं सांस्कृतिक महोत्सव

(RELIGION AND CULTURAL FESTIVALS)

7.1. महामस्तकाभिषेक

(Mahamastakabhisheka)

सुर्ख़ियों में क्यों?

हाल ही में राष्ट्रपति ने कर्नाटक के **श्रवणबेलगोला** में **महामस्तकाभिषेक** का शुभारम्भ किया। यह सम्पूर्ण विश्व के जैन समुदाय का सबसे बड़ा समारोह है।

महामस्तकाभिषेक

- यह दिगम्बर जैन परंपरा के अनुसार प्रत्येक 12 वर्षों के पश्चात किया जाने वाला बाहुबली का **मस्तक अभिषेक समारोह** है।
- गोमतेश्वर की प्रतिमा 24 जैन तीर्थंकरों में से प्रथम तीर्थंकर **ऋषभनाथ** के पुत्र बाहुबली को समर्पित है।
- प्रतिमा को कायोत्सर्ग मुद्रा में दर्शाया गया है। कायोत्सर्ग का अर्थ है 'भौतिक सुख और शारीरिक गतिविधियों का त्याग', अर्थात्; खड़ी या किसी अन्य मुद्रा में स्थिर रहना तथा आत्मा की यथार्थ प्रकृति पर ध्यान केन्द्रित करना।
- ऐसा कहा जाता है कि इस प्रतिमा का निर्माण 10वीं शताब्दी ई. के उत्तरार्ध में **गंग राजा रचमल्ल** के प्रधानमंत्री एवं प्रधान सेनापति **चामुण्डाराय** द्वारा करवाया गया था।

श्रवणबेलगोला के बारे में

- चन्द्रगुप्त मौर्य के शासनकाल के दौरान पड़े एक भीषण अकाल के कारण जैन भिक्षुओं के एक समूह ने **भद्रबाहु** के नेतृत्व में उज्जैन से श्रवणबेलगोला की ओर प्रवास किया था।
- प्रवास करने वाले जैन भिक्षुओं के इस समूह को **दिगंबर** (नग्न या आकाश ही जिनका वस्त्र है) कहा गया तथा जो जैन भिक्षु **स्थूलभद्र** के नेतृत्व में उत्तर में ही रह गए, वे श्वेताम्बर (जो श्वेत वस्त्र धारण करते हैं) कहलाए।
- तत्पश्चात चन्द्रगुप्त मौर्य ने अपने पुत्र बिन्दुसार के पक्ष में सिंहासन त्याग दिया तथा अपने जीवन के अंतिम दिनों को श्रवणबेलगोला में व्यतीत करने का निर्णय लिया।

जैन धर्म

- जैन धर्म में माना जाता है कि किसी व्यक्ति को आत्मा(जीव) की शुद्धता और ज्ञान प्राप्ति के क्रम में सांसारिक इच्छाओं पर विजय प्राप्त करना अनिवार्य है। यह बौद्ध धर्म के नास्तिक विश्वास की भांति है अर्थात् यह ईश्वर की परम शक्ति पर विश्वास नहीं करता है।
- इसने जाति-व्यवस्था को पूर्ण रूप से अस्वीकृत नहीं किया।
- यह प्राचीन धर्म 24 तीर्थंकरों/आचार्यों (जिन) पर विश्वास करता है। प्रथम जैन तीर्थंकर ऋषभदेव या ऋषभनाथ थे।
- 23वें तीर्थंकर पार्श्वनाथ और अंतिम तीर्थंकर वर्धमान महावीर (जन्म वैशाली के निकट कुंडग्राम में 540 ईसा पूर्व में) थे।
- महावीर को जृम्भिक ग्राम में साल वृक्ष के नीचे कैवल्य (ज्ञान) प्राप्त हुआ।
- जैन धर्म के तीन सिद्धांत या त्रिरत्न हैं
  - सम्यक् दर्शन
  - सम्यक् ज्ञान
  - सम्यक् आचरण जिसमें पञ्च महाव्रत शामिल हैं: अहिंसा, सत्य, अस्तेय (चोरी नहीं करना), अपरिग्रह (संपत्ति का अधिग्रहण नहीं) और ब्रह्मचर्य (संयम)।
- जैन धर्म के अनुयायियों ने शिक्षण के लिए संस्कृत की अपेक्षा प्राकृत (सामान्य भाषा) का उपयोग किया। जैनों द्वारा प्राकृत के अपनाने से इस भाषा और साहित्य का विकास हुआ।
- प्रथम जैन परिषद का आयोजन तीसरी शताब्दी ईसा पूर्व में पाटलिपुत्र में किया गया था। इसकी अध्यक्षता स्थूलबाहू ने की थी।

VISION IAS

- जैन साहित्य को जैन आगम कहा जाता है। वे महावीर की शिक्षाओं पर आधारित कुल 45 ग्रंथ हैं और इन्हें 6वीं शताब्दी ईस्वी में गुजरात के वल्लभी में संकलित किया गया था। जैन साहित्य में महाकाव्य, पुराण, उपन्यास और नाटक शामिल हैं। जैन लेखन का एक बड़ा भाग अभी भी पांडुलिपियों के रूप में उपस्थित है, जो प्रकाशित नहीं हुआ है। यह गुजरात और राजस्थान के जैन मंदिरों में पाया जाता है।
- जैनियों द्वारा उत्कृष्ट मंदिरों का निर्माण भी करवाया गया। एहोल और बादामी की शैलोत्कीर्णित गुफाओं का निर्माण चालुक्य काल के दौरान किया गया था। इन गुफाओं में जैन तीर्थंकरों की आकृतियां बनी हुई हैं। 11वीं से 13वीं सदी के मध्य चालुक्य राजवंश के राजाओं द्वारा माउंट आबू में दिलवाड़ा के जैन मंदिरों का निर्माण कराया गया था। एलोरा में पाँच जैन गुफाएं हैं। अन्य गुफाओं में उदयगिरी में बाघ की गुफा और पुडुकोट्टई में सित्तनवासल गुफा शामिल है।

7.2. कंधई जात्रा

(Kandhei Jatra)

सुर्ख़ियों में क्यों?

कंधई जात्रा, ओडिशा के बेहरामपुर में एक विशिष्ट वार्षिक खिलौना मेले के रूप में मनाया जाता है।

कंधई जात्रा के विषय में

- यह त्योहार प्रति वर्ष हिंदूओं के श्रावण माह की पूर्णिमा की रात में मनाया जाता है, जिसे गुरु पूर्णिमा के रूप में भी मनाया जाता है।
- यह त्योहार अनुष्ठान की दृष्टि से **प्राचीन जगन्नाथ मंदिर** से संबद्ध है। त्योहार में पूर्णिमा की रात में मंदिर में भगवान जगन्नाथ के मूर्तितल को पौराणिक पात्रों को चित्रित करने वाले मिट्टी के खिलौनों से सजाया जाता है।

7.3. ठकुरानी जात्रा महोत्सव

(Thakurani Jatra Festival)

यह क्या है?

- हाल ही में, बहरामपुर शहर में महीने भर चलने वाला ठकुरानी जात्रा महोत्सव संपन्न हुआ।

यह महोत्सव **बहरामपुर (सिल्क सिटी), ओडिशा** में मनाया जाता है।

- **इस महोत्सव के बारे में**
- **यह एक द्विवार्षिक महोत्सव है।**
  - इसे घट यात्रा (Ghata Yatra) के रूप में भी जाना जाता है। यह दक्षिणी ओडिशा का मुख्य त्योहार है।
  - इस महोत्सव में **माँ बुद्धि ठकुरानी** की पूजा की जाती है। इन्हें बहरामपुर शहर की इष्ट देवी और *सुरक्षा कवच* (संरक्षक) माना जाता है।
  - इस देवी की पूजा मूलतः *देरा* नामक बुनकर समुदाय द्वारा की जाती थी।

7.4 मेडारम का जातरा

(Medaram's Jatara)

सुर्ख़ियों में क्यों?

- केंद्र सरकार द्वारा इस वर्ष **मेडारम सम्मक्का- सरक्का/सारलम्मा जातरा** को **राष्ट्रीय स्तर का त्योहार** घोषित किए जाने की संभावना है।

मेडारम, एटुरनगरम वन्यजीव अभयारण्य में एक दूरस्थ स्थान है। यह अभयारण्य दंडकारण्य का एक हिस्सा है, जो दक्कन का सबसे बृहत् उपस्थित (शेष बचा हुआ) वन क्षेत्र है।

VISION IAS

महोत्सव के बारे में

- यह प्रत्येक दो वर्ष में **तेलंगाना** के **मेडारम** गाँव में दो देवियों- **सम्मक्का** और उनकी पुत्री **सरक्का** के सम्मान में आयोजित किया जाता है।
- यह महोत्सव इस क्षेत्र के वन में निवास करने वाली **कोया जनजाति** द्वारा आयोजित किया जाता है। यह गैर-आदिवासियों को आकर्षित करने वाला एशिया का सबसे बड़ा आदिवासी त्यौहार है।

नेशनल टैग का महत्व

- नेशनल टैग मेडारम पर्व को राष्ट्रीय स्तर पर मान्यता प्रदान करने के अतिरिक्त इसे केंद्रीय निधि प्राप्त करने के योग्य बना देगा।
- एक बार राष्ट्रीय त्यौहार घोषित किए जाने के बाद जातरा को यूनेस्को के 'मानवता की अमूर्त सांस्कृतिक विरासत' में शामिल करने पर विचार किया जा सकता है।
- केंद्र सरकार ने 2015 में **'वनज'** को राष्ट्रीय उत्सव घोषित किया था, जो नृत्य और संगीत का एक आदिवासी उत्सव है

7.5. कावेरी महापुष्करम

(Cauvery Maha Pushkaram)

सुर्खियों में क्यों?

- हाल ही में, कावेरी नदी के तट पर महापुष्करम त्यौहार आयोजित किया गया।

महापुष्करम के संबंध में

- पुष्करम नदियों की पूजा करने का भारतीय त्योहार है। भारत में 12 नदियों के तटों पर इसे मनाया जाता है।
- यह उत्सव 12 वर्षों में एक बार प्रत्येक नदी के तट पर प्रति वर्ष मनाया जाता है। प्रत्येक नदी किसी एक राशिचक्र से संबंधित होती है। प्रत्येक वर्ष इस त्यौहार के लिए उस नदी का चयन किया जाता है जिस राशिचक्र में बृहस्पति स्थित होता है।
- गंगा, नर्मदा, सरस्वती, यमुना, गोदावरी, कृष्णा, कावेरी, भीमा, ताप्ती, तुंगभद्रा, सिंधु और प्राणहिता ऐसी 12 नदियां हैं, जिन पर पुष्करम मनाया जाता है।
- हिंदू पंचांग में कन्या राशि से तुला राशि में बृहस्पति ग्रह के खगोलीय पारगमन को महापुष्करम की अवधि कहा जाता है। यह खगोलीय घटना 144 वर्षों में एक बार होती है।

7.6. वारी वारकरी

(Wari Warkari)

सुर्ख़ियों में क्यों?

विभिन्न सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म्स पर बनाए गए वारी के आभासी संस्करण (वर्चुअल वर्ज़न) ने काफी समर्थन जुटाया है तथा सामाजिक लक्ष्यों की प्राप्ति में सहायता की है।

वारी के विषय में

- वारी का अर्थ "तीर्थयात्रा" है तथा यह महाराष्ट्र के शोलापुर जिले में स्थित पंढरपुर के विठोबा मंदिर तक की जाने वाली वार्षिक पदयात्रा को संदर्भित करती है। यह एक 700 वर्ष पुरानी परंपरा है।
- विठोबा, कृष्ण (जो कि विष्णु के एक अवतार हैं) का एक रूप है। इस प्रकार, वारकरी वैष्णववाद की एक शाखा है।
- वारकरी (तीर्थयात्री) विभिन्न संतों, विशेषकर ज्ञानेश्वर एवं तुकाराम की पादुकाओं को साथ लेकर चलते हैं।
- यह भौगोलिक दृष्टि से मुख्यतः महाराष्ट्र एवं दक्षिणी कर्नाटक से संबंधित है। पदयात्रा करने वाले व्यक्तियों को वारकरी अर्थात् तीर्थयात्री कहा जाता है।

VISION IAS

- इस तीर्थयात्रा का समापन हिंदू चंद्र कैलेंडर के आषाढ़ माह की एकादशी (11वें दिन) को होता है।
- अपने इतिहास के माध्यम से आंदोलन को स्थापित करने तथा समर्थन देने हेतु उत्तरदायी शिक्षकों में ज्ञानेश्वर, तुकाराम एवं चोखमेला सम्मिलित हैं।

नंदा देवी राजजात यात्रा (हिमालयी महाकुम्भ)

- यह उत्तराखंड का एक त्यौहार है जिसमें भगवती नंदा देवी (गढ़वाल प्रभाग में गौरा एवं राज राजेश्वरी के नाम से प्रसिद्ध) की पूजा की जाती है।
- यह पूरे तीन सप्ताह तक मनाया जाता है तथा इसका आयोजन गढ़वाल क्षेत्र के **चमोली** जिले में प्रत्येक **बारह** वर्षों के अंतराल पर किया जाता है।

7.7 लोसर त्योहार

(Losar Festival)

सुर्ख़ियों में क्यों?

नव वर्ष के उत्सव का आरंभ करने वाला लोसर त्योहार लद्दाख में मनाया गया।

लोसर त्योहार के संदर्भ में

- इस त्योहार (जिसका उद्गम 15वीं सदी में माना जाता है) में लद्दाखी या तिब्बती नव वर्ष को मनाया जाता है।
- यह 3 से 15 दिनों तक चलता है और तिब्बती चंद्र कैलेंडर के 11वें माह के पहले दिन से इसे मनाने की शुरुआत होती है।
- लद्दाख के अतिरिक्त, इसे **हिमाचल प्रदेश के लाहौल और स्पीति में, अरुणाचल प्रदेश के तवांग तथा सिक्किम में** भी मनाया जाता है।
- लोसर में विशेष रूप से नृत्य, संगीत और आनंद की एक सामान्य भावना रहती है। इस उत्सव में देवताओं को गोम्पा तथा उनके तीर्थस्थलों में चढ़ावा अर्पित किया जाता है।

भारत भर में अन्य नव वर्ष संबंधी उत्सव

- उगाडी - तेलगू नव वर्ष
- गुड़ी परवा - मराठी नव वर्ष
- बैसाखी - पंजाबी नव वर्ष
- पुथंडु - तमिल नव वर्ष
- बोहाग बिहू - असमिया नव वर्ष
- पोहेला बोइशख - बंगाली नव वर्ष
- बेस्तु वरस - गुजराती नव वर्ष
- विशु - मलयाली नव वर्ष
- हिजरी - इस्लामी नव वर्ष
- लोसोंग - सिक्किमी नव वर्ष
- चेटी चंद - सिंधी हिंदुओं के लिए हिंदू नव वर्ष

7.8 नबकलेबर त्योहार

(Nabakalebar Festival)

सुर्ख़ियों में क्यों?

राष्ट्रपति रामनाथ कोविंद ने नबकलेबर त्योहार के अवसर पर 1000 रुपये और 10 रुपये के स्मारक सिक्के जारी किए।

VISION IAS

नबकलेबर त्योहार के संदर्भ में

- पुरी में श्री जगन्नाथ मंदिर में मनाया जाने वाला नबकलेबर एक सामयिक उत्सव है। नब का अर्थ है नया और कलेबर का आशय शरीर से है।
- जगन्नाथ संप्रदाय में यह जगन्नाथ, बलभद्र, सुभद्रा और सुदर्शन की लकड़ी की छवियों का समय- समय पर किया जाने वाला नवीनीकरण है।
- आत्मा या ब्रह्म को पुरानी मूर्तियों से उनके नए शरीर में एक अत्यधिक निर्धारित तकनीकी एवं गुप्त विधि से स्थानांतरित किया जाता है।
- नबकलेबर त्यौहार 12 से 19 वर्षों के अंतराल पर मनाया जाता है।
    - इस महोत्सव के दौरान वार्षिक रथयात्रा नबकलेबर रथ यात्रा बन जाती है।

7.9 जल्लीकट्टू

(Jallikattu)

- यह तमिलनाडु में प्रचलित बैल को नियंत्रित करने का समारोह (bull-vaulting event) है, जिसे मट्टू पोंगल दिवस पर पोंगल महोत्सव के एक भाग के रूप में मनाया जाता है।
- प्रतिभागी एक अखाड़े में बैल को उसके कूबड़ द्वारा नियंत्रित करते हैं और जब तक वे अंतिम रेखा पार नहीं कर लेते तब तक उसके कूबड़ पर लटके रहने का प्रयास करते हैं।
- यह मदुरै, तिरुचिरापल्ली, थेनी, पुदुक्कोट्टई और डिंडीगुल जिलों (जिसे जल्लीकट्टू बेल्ट के रूप में भी जाना जाता है) में लोकप्रिय है।
- यह एक प्राचीन खेल है। संगम साहित्य (ईसा पूर्व दूसरी शताब्दी से लेकर दूसरी शताब्दी ईसवीं तक) में ईरु थाजुवुथल (बैल को गले लगाने) के कई विस्तृत संदर्भ मिलते हैं।
- वर्तमान में, पशु क्रूरता निवारण (तमिलनाडु संशोधन) अधिनियम, 2017, राज्य में जल्लीकट्टू के संदर्भ में उच्चतम न्यायालय द्वारा प्रतिबंध लगाने हेतु दिए गए पहले के फैसले को रद्द करता है।
- अब यह निर्णय लेने के लिए संवैधानिक पीठ की स्थापना की गई है कि क्या अनुच्छेद 29 (1) के अंतर्गत कोई राज्य अपनी सांस्कृतिक विरासत को संरक्षित करने के लिए इस कानून को लागू कर सकता है।

भारत में पशुओं से संबंधित अन्य खेल

- **कंबाला:** तटीय कर्नाटक में वार्षिक रूप से आयोजित नर भैसों की दौड़।
- **मुर्गा-लड़ाई:** संक्रांति के दौरान आंध्र प्रदेश में लोकप्रिय दो मुर्गों के मध्य करवाया जाने वाला खूनी खेल (ब्लड स्पोर्ट)।
- **बैलगाड़ी शर्यत:** महाराष्ट्र में होने वाली बैलगाड़ी (कार्ट) दौड़।
- **ऊंट रेस:** राजस्थान में पुष्कर मेले के दौरान।
- **बुलबुल फाइट:** प्रत्येक मकर संक्रांति के दौरान असम में हयाग्रिव-माधव मंदिर में।

7.10. अंबुबाची महोत्सव

(Ambubachi Festival)

- यह कामाख्या मंदिर, गुवाहाटी (असम) के सबसे महत्वपूर्ण त्यौहारों में से एक है।
- इसे प्रत्येक वर्ष मॉनसून ऋतु के दौरान मनाया जाता है और साथ ही अंबुबाची मेले का भी आयोजन किया जाता है।
- कामाख्या मंदिर, देवी शक्ति की 52 शक्ति पीठों में से एक है।
- यह तांत्रिक संप्रदाय के साथ जुड़ा हुआ है तथा इस त्यौहार को "पूर्व का महाकुंभ" भी कहा जाता है।

7.11. चपचार कुट

(Chapchar Kut)

- चपचार कुट मिजोरम का एक त्योहार है जिसका शाब्दिक अर्थ है- एक ऐसा त्योहार जिसका आयोजन उस अवधि में किया जाता है जब झूमिंग के लिए जलाने हेतु काटे गए बांस और वृक्षों के सूखने की प्रतीक्षा की जा रही होती है।
- यह झूम के अंतर्गत भूमि सफाई का कार्य समाप्त होने तथा खेत को बुआई के लिए तैयार करने का प्रतीक है। उत्सवधर्मिता की यह भावना मार्च में तीन से सात दिनों तक रहती है।

VISION IAS

* चपचार कुट त्यौहार का विकास 1450 -1600 A.D के मध्य हुआ। पारंपरिक पोशाक परेड तथा चेराव, चाई, चैलम्, सरलंकाई जैसे नृत्यों का प्रदर्शन और समूहों द्वारा संगीतमय प्रस्तुतियां इस समारोह का हिस्सा हैं।

7.12. नार्थ-ईस्ट कॉलिंग फेस्टिवल

(North East Calling Festval)

सुर्खियों में क्यों?

हाल ही में उत्तर पूर्वी क्षेत्र विकास मन्त्रालय (MoDNER) के राज्य मंत्री ने नॉर्थ-ईस्ट कॉलिंग फेस्टिवल का उद्घाटन किया।

गन्तव्य पूर्वोत्तर (Destination North East)

* यह एक ऐसा कार्यक्रम है, जिसका आयोजन पूर्वोत्तर क्षेत्र के प्रोन्नयन (प्रमोट) हेतु किया जाता है। इस प्रोन्नयन में व्यवसायिक सम्मेलनों, प्रदर्शन स्टालों के माध्यम से उत्तर-पूर्व की सर्वोत्तम विशेषताओं का प्रदर्शन किया जाता है और यह पर्यटन, कौशल, स्टार्ट अप, हथकरघा और हस्तशिल्प, बागवानी, औषधियों और सुगंधित पौधों में निवेश आकर्षित करने के उद्देश्य पर आधारित है

क्या है यह त्यौहार:

* पूर्वोत्तर भारत की **कला, संस्कृति, विरासत, व्यंजन, हस्तशिल्प, व्यवसाय और पर्यटन** के प्रोन्नयन हेतु "नॉर्थ-ईस्ट कॉलिंग फेस्टिवल" का आयोजन किया जाता है।
* इस त्यौहार या फेस्टिवल का आयोजन MoDNER के **"गन्तव्य पूर्वोत्तर"** द्वारा किया गया है।
* इस अवसर पर निम्नलिखित का भी शुभारम्भ किया गया:
    * पूर्वोत्तर क्षेत्र में युवा उद्यमियों के लिए MoDNER और **पूर्वोत्तर विकास वित्त निगम** के संयुक्त उद्यम के रूप **नॉर्थ-ईस्ट वेंचर फंड**।
    * पूर्वोत्तर भारत में **संधारणीय पर्यटन** के प्रोन्नयन के उद्देश्य से **पूर्वोत्तर विकास परिषद।**

नार्थ ईस्ट डेवलपमेंट फाइनेंस कारपोरेशन

* अगस्त 1995 में कम्पनी अधिनियम 1956 के अंतर्गत पंजीकृत एक पब्लिक लिमिटेड कम्पनी है।
* यह भारत के पूर्वोत्तर क्षेत्र में औद्योगिक, आधारिक संरचना और कृषि सम्बन्धित परियोजनाओं की स्थापना के लिए सूक्ष्म, लघु, मध्यम और बड़े उद्यमों को वित्तीय सहायता प्रदान करती है तथा MFI/NGOs के माध्यम से माईक्रोफाइनांस भी करती है।

7.13 हॉर्नबिल त्योहार

(Hornbill Festival)

सुर्खियों में क्यों?

* हाल ही में, **नागालैंड** में दिसंबर माह के आरंभ में **हॉर्नबिल त्योहार** मनाया गया।

भारत में हॉर्नबिल

भारत में हॉर्नबिल की नौ विभिन्न प्रजातियाँ निम्न स्थलों पर पायी जाती हैं:

* पश्चिमी घाट: इंडियन ग्रे हार्नबिल, मालाबार ग्रे हार्नबिल, मालाबार पाइड हार्नबिल, ग्रेट हॉर्नबिल (केरल का राज्य पक्षी)
* नारकोंडम आइलैंड: नारकोंडम हार्नबिल (इन्डैन्जर्ड)
* अन्य पूर्वोत्तर एवं हिमालयी तलहटी में : वाइट-थ्रोटेड ब्राउन हार्नबिल, रूफस-नेक्ड हार्नबिल (वल्नरेबल), रीथड (Wreathed) हार्नबिल, ऑरीएन्टल पाइड हार्नबिल।

त्योहार के विषय में

* यह त्योहार नागालैंड के **श्रद्धेय पक्षी हॉर्नबिल** के नाम पर मनाया जाता है। यह त्योहार नागालैंड की स्थानीय जनजातियों का उत्सव माना जाता है।
* इसे नागालैंड के राज्य पर्यटन और कला एवं संस्कृति विभाग द्वारा आयोजित किया जाता है।

VISION IAS

- इस त्योहार को प्रथम बार सन 2000 में मनाया गया था। इसके बाद से यह प्रत्येक वर्ष मनाया जाता है।
- यह पारंपरिक संगीत, नृत्य और खेल के माध्यम से **नागा संस्कृति की सशक्त प्रस्तुतीकरण** है।
- हॉर्नबिल त्योहार को **नागालैंड के राज्य दिवस** के साथ मनाया जाता है

7.14. अरनमुला रेगाटा

(Aranmula Regatta)

सुर्ख़ियों में क्यों?

- वार्षिक सर्प नौका दौड़ **उथ्रितथी वल्लमकली** का आयोजन पम्पा नदी में अरनमुला, केरल में किया गया।

अरनमुला रेगाटा के संबंध में

- अरनमुला उथ्रितथी वल्लमकली अथवा अरनमुला नौका दौड़ केरल की सर्वाधिक प्राचीन एवं प्रतिष्ठित नौका दौड़ है।
- इस दौड़ हेतु प्रयुक्त की जाने वाली सर्प नौकाओं को पल्लियोडम कहा जाता है।

केरल में अन्य नौका दौड़

- चंपाकुलम मूलम (सर्प) नौका दौड़ - इस सर्प नौका दौड़ का आयोजन अंबलप्पुझा क्षेत्र के श्री कृष्ण मंदिर में कृष्ण मूर्ति की स्थापना वाले पवित्र दिन में किया जाता है। यह चंपाकुलम झील, एलेप्पी में आयोजित की जाती है।
- पाईप्पड नौका दौड़ (जलोत्सवम) - इस नौका दौड़ का आयोजन प्रतिष्ठा समारोह का उद्घाटन करने हेतु अथवा हरिपद सुब्रह्मण्यम मंदिर में भगवान सुब्रह्मण्यम की मूर्ति स्थापना के उपलक्ष्य में किया जाता है। इसका आयोजन पाईप्पड झील, एलेप्पी में किया जाता है।

7.15. सादुल बटुकम्मा

(Saddula Bathukamma)

सुर्ख़ियों में क्यों?

- तेलंगाना की लगभग 3500 महिलाओं ने सादुल बटुकम्मा के अवसर पर फूलों की सजावट हेतु सबसे बड़ी मानव श्रृंखला बनाने का प्रयत्न किया।

सादुल बटुकम्मा के संबंध में

- यह तेलंगाना की हिन्दू महिलाओं द्वारा मनाया जाने वाला राजकीय पुष्प त्योहार है जो दुर्गा नवरात्रि के दौरान पूरे नौ दिनों तक मनाया जाता है।
- इस 9-दिवसीय त्योहार का समापन दुर्गा अष्टमी के दिन "सद्दुला बटुकम्मा" त्योहार पर होता है।
- इस विशिष्ट त्योहार में पृथ्वी, जल तथा मनुष्यों के मध्य अंतर्निहित संबंधों को मनाया जाता है। पूरे पूर्ववर्ती सप्ताह के दौरान, महिलाएं बटुकम्मा के साथ 'बोद्देम्मा' (मिट्टी द्वारा निर्मित देवी गौरी- माँ दुर्गा की मूर्ति) बनाकर उसे तालाब में विसर्जित कर देती हैं। यह तालाबों को सुदृढ़ करने के साथ-साथ अधिक जल बनाए रखने में सहायता करता है।
- बटुकम्मा खूबसूरत फूलों का एक क्रमबद्ध ढेर है, जहाँ विभिन्न औषधि मूल्य वाले फूलों को अन्य विशिष्ट मौसमी फूलों के साथ सात सकेंद्रित परतों में मंदिर गोपुरम के आकार में व्यवस्थित किया जाता है। तेलुगू में, 'बटुकम्मा' का अर्थ है 'देवी माँ जीवित हो जाओ', जहां देवी महा गौरी- 'जीवन दाता' की बटुकम्मा के रूप में पूजा की जाती है।

7.16. रामकृष्ण आन्दोलन

(Ramakrishna Movement)

सुर्ख़ियों में क्यों?

- केंद्र सरकार ने दो संगठनों- रामकृष्ण मिशन एवं रामकृष्ण मठ को EPFO कवरेज के अंतर्गत लाने हेतु छूट प्रदान की है।

VISION IAS

स्वामी विवेकानंद

- इन्हें 19वीं शताब्दी के अंत में पश्चिमी विश्व में भारतीय दर्शन के वेदांत एवं योग को आरम्भ करने के साथ अंतर्धार्मिक जागरूकता को बढ़ाने तथा हिंदुत्व को विश्व स्तर पर लाने का श्रेय दिया जाता है।
- उनके लेखन एवं भाषणों ने न केवल भारतीयों के मस्तिष्क को आंदोलित किया बल्कि मातृभूमि के प्रति लगाव को भी बढ़ावा दिया। उन्होंने देशवासियों के मस्तिष्क एवं मन द्वारा पूजनीय मातृभूमि को एकमात्र देवी/देवता के रूप में स्थापित किया।
- 1893 में शिकागो में दिए गए भाषण ने उन्हें विश्व धर्म संसद में सबसे महान व्यक्तित्व तथा भारत को धर्मों की माता के रूप में स्थापित किया।

रामकृष्ण आन्दोलन के संबंध में

- रामकृष्ण मिशन एवं रामकृष्ण मठ, रामकृष्ण आंदोलन (वेदांत आंदोलन के रूप में भी जाना जाता है) के आधार का निर्माण करते है।
- रामकृष्ण मठ की स्थापना, रामकृष्ण परमहंस द्वारा कलकत्ता के बेलूर में की गयी थी।
- रामकृष्ण मिशन की स्थापना 1897 में रामकृष्ण परमहंस के शिष्य स्वामी विवेकानंद ने की थी।
- परमहंस ने सभी धर्मों की एकता को स्वीकार करते हुए कहा कि ईश्वर एवं मोक्ष की प्राप्ति हेतु कई मार्ग हैं। स्वामी विवेकानंद ने इन्हीं विषयों पर अपने उपदेश दिए।

8. ऐतिहासिक घटनाएँ

(HISTORICAL EVENTS)

8.1. भारतीय नौसेना का इतिहास

(History of Indian Navy)

सुर्खियों में क्यों?

हाल ही में, 'मन की बात' कार्यक्रम में प्रधानमंत्री ने **चोल साम्राज्य की नौसेना की महानता** के संबंध में चर्चा की।

चोल नौसेना के संबंध में:

- **संगम साहित्य** में चोल नौसेना की विभिन्न यात्राओं और समुद्री अभियानों के अनेक संदर्भ मिलते हैं।
- चोल नौसेना को सबसे सशक्त नौसेनाओं में से एक माना जाता था। इसने श्रीलंका और मलय प्रायद्वीप में चोल साम्राज्य के विस्तार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी।
- उनके पास जहाज निर्माण संबंधी अति समृद्ध और वृहत ज्ञान था।
- चोलों के कुछ **महत्वपूर्ण बंदरगाह** शहर पुहार/कावेरीपट्टनम (राजधानी), अरिकामेडु, कांचीपुरम, नागापट्टनम आदि थे।
- बड़ी संख्या में महिलाओं ने चोल नौसेना में अग्रणी भूमिका निभाई और सक्रिय रूप से युद्धों में भाग लिया।

चोल साम्राज्य से संबंधित तथ्य:

- **प्रशासन:** प्रशासन की मुख्य विशेषता गांवों में सुस्थापित **स्थानीय स्वशासन** था।
- **महिलाओं की स्थिति:** 'सती' प्रथा शाही परिवारों में प्रचलित थी। उनके शासनकाल के दौरान देवदासी प्रथा का विकास हुआ।
- चोल काल के दौरान तमिल साहित्य का विकास अपने चरम पर पहुँच गया।
- **कला और वास्तुकला की द्रविड़ शैली के उदाहरण:** बृहदेश्वर मंदिर (अब **यूनेस्को** विश्व धरोहर स्थल), नागेश्वर, एरावतेश्वर मंदिर।
- नटराज या नृत्य करते **शिव की कांस्य मूर्ति** चोल काल की महान कलाकृति है।

8.2. पाइका विद्रोह

(Paika Rebellion)

सुर्ख़ियों में क्यों?

हाल ही में मानव संसाधन विकास मंत्री ने घोषणा की है कि पाइका विद्रोह का नाम परिवर्तित कर "प्रथम स्वतंत्रता संग्राम" किया जाएगा।

पाइका विद्रोह का इतिहास

- पाइका विद्रोह 1817 में **ओडिशा** के **खुर्दा** में हुआ था।
- पाइका ओडिशा के गजपति शासकों के कृषक-सैन्य दल (peasants-militias) थे। ये युद्ध के समय राजा को सैन्य सेवाएँ उपलब्ध कराते थे और शांतिकाल में कृषि करते थे।
- ईस्ट इंडिया कंपनी की सेनाओं ने बंगाल और मद्रास प्रांत में शासन स्थापित करने के बाद 1803 में ओडिशा पर भी अधिकार कर लिया। खुर्दा के राजा का वर्चस्व समाप्त हो गया और पाइका लोगों की शक्ति और प्रतिष्ठा का पतन होने लगा।
- 1817 में कृषक सैन्य दल के वंशानुगत नेता बख्शी जगबंधु विद्याधर के नेतृत्व में पाइका लोगों ने ब्रिटिश दासता को समाप्त करने के लिए ब्रिटिश सरकार के विरुद्ध विद्रोह कर दिया।
- यह विद्रोह 1825 में बख्शी जगबंधु के आत्मसमर्पण के साथ समाप्त हुआ।

VISION IAS

- कालानुक्रमिक रूप से प्रथम नहीं: 1817 के पाइका विद्रोह से पहले भी 18वीं सदी की शुरुआत में बंगाल में सन्यासी विद्रोह, 1766 में बंगाल एवं बिहार में चुआर विद्रोह, 1805 में त्रावणकोर के दीवान वेल्लू थम्पी का विद्रोह और 1814 में अलीगढ़ के तालुकदारों के विद्रोह हुए थे।

8.3. चंपारण सत्याग्रह

(Champaran Satyagrah)

सुर्ख़ियों में क्यों?

हाल ही में चंपारण सत्याग्रह के 100 वर्ष पूरे होने के उपलक्ष्य में दिल्ली में एक प्रदर्शनी आयोजित की गयी थी। जिसका शीर्षक "**स्वच्छाग्रह-बापू को कार्यांजली- एक अभियान, एक प्रदर्शनी**" था।

चंपारण सत्याग्रह के संबंध में:

- 1917 का चंपारण सत्याग्रह महात्मा गाँधी का प्रथम सत्याग्रह था और साथ ही **1918 के खेड़ा सत्याग्रह** ने महात्मा गाँधी को **भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन** के अग्रदूतों में से एक के रूप में प्रस्तुत किया।
- **राजकुमार शुक्ल** ने चंपारण (बिहार) में नील की खेती करने वाले किसानों की समस्याओं पर ध्यान देने हेतु गांधी जी को आमंत्रित किया था।
- किसानों को तिनकठिया पद्धति के तहत उनकी भूमि के 3/20 भाग पर अपने भूस्वामियों हेतु नील की खेती के लिए बाध्य किया जाता था।
- नील की निर्धारित कीमत बहुत कम थी तथा इसकी गणना फसल उत्पादन की बजाय कृषि क्षेत्र पर आधारित थी।
- किसानों के समक्ष अनुबंधों से मुक्त होने के लिए एक प्रस्ताव प्रस्तुत किया गया था किन्तु क्षतिपूर्ति का भुगतान बहुत अधिक था।
- गांधीजी के चम्पारण आगमन पर ब्रिटिश अधिकारियों ने उन्हें तत्काल जिला छोड़ने का आदेश दिया। गांधीजी ने आदेशों की अवहेलना की तथा विरोध को बनाए रखा।
- उनके सत्याग्रह के परिणामस्वरूप सरकार ने इस मुद्दे पर ध्यान देने हेतु एक समिति का गठन किया तथा गांधीजी को इस समिति का सदस्य बनाया गया।
- गांधीजी अधिकारियों को इस बात हेतु मनाने में सफल हुए कि तिनकठिया प्रणाली को समाप्त किया जाना चाहिए तथा किसानों को क्षतिपूर्ति प्रदान की जानी चाहिए।

8.4. अहमदाबाद में साबरमती आश्रम का उत्सव

(Celebrations of Sabarmati Ashram in Ahmedabad)

सुर्ख़ियों में क्यों?

- प्रधानमंत्री ने गुजरात में साबरमती आश्रम के शताब्दी समारोह में भाग लिया।

साबरमती आश्रम:

- 1915 में जीवनलाल देसाई द्वारा साबरमती आश्रम को स्थापित किया गया। तत्पश्चात गांधीजी द्वारा 1917 में इसे साबरमती नदी के तट पर स्थानांतरित कर दिया गया।
- इस आश्रम का विचार दक्षिण अफ्रीका के टॉलस्टॉय फार्म तथा फीनिक्स आश्रम से प्रेरित था।
- गांधीजी के दक्षिण अफ्रीका से वापस आने के उपरांत, उनका प्रथम आश्रम 1915 में अहमदाबाद के कोचरब क्षेत्र में स्थापित किया गया था। 1917 में आश्रम को साबरमती नदी के किनारे स्थानांतरित कर दिया गया था।
- साबरमती आश्रम हरिजन आश्रम या सत्याग्रह आश्रम के रूप में भी जाना जाता है।
- गांधीजी ने 1930 में नमक सत्याग्रह के लिए साबरमती आश्रम से दांडी तक अपनी पदयात्रा (पैदल मार्च) प्रारम्भ की। इस समय उन्होंने यह निर्णय लिया कि वह तब तक साबरमती आश्रम नहीं लौटेंगे जब तक भारत को स्वाधीनता प्राप्त नहीं हो जाती।

VISION IAS

- अप्रैल 1936 में गांधीजी ने **शेगाँव** को अपना निवास स्थान बनाया। इसे उन्होंने 'सेवाग्राम' का नाम दिया। सेवाग्राम का अर्थ है 'सेवा का गाँव'।
- **गांधीजी इस सेवाग्राम आश्रम में 1946 तक रहे, जब तक कि** उन्होंने नोआखाली की ओर प्रस्थान नहीं किया।

8.5. बंगाली अख़बारों के प्रकाशन की द्वि-शताब्दी

(Bicentenary of Publication of Bengali Newspaper)

सुर्ख़ियों में क्यों?

- पश्चिम बंगाल के राज्यपाल श्री केशरी नाथ त्रिपाठी ने बंगाली अख़बारों के दो सौ वर्ष पूरे होने के उपलक्ष्य में एक स्मारक संस्करण जारी किया है।

अन्य संबंधित तथ्य

- देश के पहले अख़बार **जेम्स आगस्टस हिक्की** के **'बंगाल गजट'** का प्रकाशन **कोलकता में 1780** में हुआ था। इस अख़बार का प्रकाशन 23 मार्च, 1782 को बंद कर दिया गया था। यह अख़बार केवल दो वर्ष तक ही प्रकाशित हुआ था।
- 19वीं शताब्दी के 80वें दशक तक बंगाल समाचार-पत्रों के प्रकाशन का एक महत्वपूर्ण केंद्र था। 1876 में सर जॉर्ज कैम्पबेल द्वारा किए गए भारतीय भाषा प्रेस के एक सर्वेक्षण में दर्शाया गया कि 38 समाचार-पत्रों की कुल संख्या के आधे समाचार पत्रों का प्रकाशन कलकत्ता से हुआ था।
- ***समाचार दर्पण*** बंगाली भाषा का पहला समाचार-पत्र था। इसका प्रकाशन 23 मई, 1818 को सेरामपुर मिशन प्रेस द्वारा किया गया था।
- 1821 में राममोहन राय के संरक्षण में ***संवाद कौमुदी*** बंगाली पत्रिका का प्रकाशन हुआ था।
- ***संवाद प्रभाकर*** 1839 में प्रकाशित पहला बंगाली दैनिक अखबार था, जो ईश्वर चंद्र गुप्त द्वारा संरक्षित था।
- प्रारम्भिक बंगाली अख़बारों ने नील बागानों के शोषित श्रमिकों और किसानों के मुद्दों को उठाया। उनमें ***सोम प्रकाश, ग्रामवार्ता प्रकाशिका*** और ***अमृत बाज़ार पत्रिका*** (अंग्रेजी साप्ताहिक बनने से पहले) उल्लेखनीय थे।
- अन्य महत्वपूर्ण समाचार-पत्र हैं बंगाली (एस.एन.बनर्जी), हितबादी (द्विजेन्द्रनाथ टैगोर) तथा संजीबनी (के.के.मित्रा)।

8.6. भारत छोड़ो आंदोलन की 75 वीं वर्षगांठ

(75th Anniversary of Quit India Movemen)

सुर्ख़ियों में क्यों?

हाल ही में, देश में भारत छोड़ो आंदोलन की 75वीं वर्षगांठ मनाई गई। इस वर्ष के समारोह का विषय **"संकल्प से सिद्धि"** था। जिसके तहत लोगों से **निर्धनता** और **कुपोषण** से मुक्त होने का संकल्प लेने का आग्रह किया गया।

भारत छोड़ो आंदोलन

- जुलाई 1942 में कांग्रेस कार्य समिति ने वर्धा में भारत को ब्रिटिश शासन से मुक्त कराने के लिए एक प्रस्ताव पारित किया। इसमें यह भी घोषित किया गया कि स्वतंत्र भारत नाजीवाद, फासीवाद और साम्राज्यवाद की आक्रामकता के विरुद्ध होगा।

VISION IAS

- **भारत छोड़ो आंदोलन को आरंभ करने के कारण:**
    - ब्रिटिश इच्छाशक्ति की कमी के कारण भारतीय मांगों का समाधान करने में **क्रिप्स मिशन की विफलता।**
    - मूल्य वृद्धि, खाद्य वस्तुओं का अभाव आदि जैसी युद्धकालीन असमानताओं में वृद्धि के कारण **जन सामान्य में असंतोष।**
    - दक्षिण-पूर्व एशिया में अंग्रेजों की पराजय से भी भारत में ब्रिटिश शासन को उखाड़ फेंकने की लोकप्रिय इच्छा को बढ़ावा मिला।
    - दक्षिण-पूर्व एशिया में भारतीय शरणार्थियों के साथ अंग्रेजों का भेदभावपूर्ण व्यवहार।
- 8 अगस्त, 1942 के दिन भारत छोड़ो आंदोलन ग्वालिया टैंक, बंबई से आरम्भ किया गया। हालांकि, महात्मा गांधी, जवाहरलाल नेहरू, पटेल, आजाद आदि सभी नेताओं को गिरफ्तार कर लिया गया था।
- इस आंदोलन के समय विशेष रूप से पूर्वी उत्तर प्रदेश, बिहार और बंगाल में व्यापक पैमाने पर जन आवेग एवं शासन के प्रतीकों पर आक्रमण की घटनाएं देखी गईं।
- आंदोलन के दौरान-
    - भूमिगत गतिविधियों के माध्यम से दिशा–निर्देश प्रदान किए गए।
    - बलिया, तामलुक और सतारा में समानांतर सरकारों की स्थापना।
    - युवाओं, महिलाओं, मजदूरों, किसानों आदि की भागीदारी देखी गई।

8.7. कोरेगाँव की लड़ाई

(Battle of Koregaon)

सुर्ख़ियों में क्यों?

हाल ही में, कोरेगाँव की लड़ाई की 200वीं वर्षगांठ पर महाराष्ट्र में हिंसक संघर्ष हुआ।

कोरेगाँव की लड़ाई

- यह आंग्ल-मराठा युद्ध की अंतिम लड़ाई थी, जो 1 जनवरी 1818 को भीमा कोरेगाँव में मराठा शासक पेशवा बाजी राव द्वितीय और ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी के सैनिकों के बीच लड़ी गई थी।
- इस युद्ध में महार समुदाय के सैनिकों द्वारा कंपनी का प्रतिनिधित्व किया गया, जिन्होंने सफलतापूर्वक पेशवा के सैनिकों को रोके रखा। इस युद्ध में पेशवा के लगभग 600 सैनिक मारे गए, जिसके बाद पेशवा ने पुणे पर हमला करने की योजना को त्याग दिया।
- अंग्रेजों ने इस विजय की स्मृति में एक टॉवर का निर्माण करवाया और इस पर एक लेख लिखवाया जिसमें, इस जीत को "पूर्व में ब्रिटिश सेना की गौरवपूर्ण विजयों में से एक" कहा गया है।
- महार इसे ऐसे दिन के रूप में मनाते हैं, जब उन्होंने सैन्य गौरव की अपनी पुरानी स्थिति को वापस प्राप्त कर लिया।

- महार एक जातीय समूह है, जो महाराष्ट्र और इसके आस-पास के राज्यों में निवास करता है।
- यद्यपि महार अस्पृश्य थे परन्तु शताब्दियों से ये अपने सैन्य कौशल के लिए जाने जाते थे। शिवाजी की सेना में इनका एक महत्वपूर्ण स्थान था।
- हालांकि पेशवाओं के समय इनके साथ बुरा व्यवहार किया गया और इन्होंने धीरे-धीरे अपने सैन्य गौरव को खो दिया।
- बी.आर. अम्बेडकर ने महारों को एकजुट किया और उन्हें राजनीतिक चेतना तथा अन्य महत्वपूर्ण शैक्षिक सुधारों के लिए प्रेरित किया।

VISION IAS

आँग्ल-मराठा युद्धों से संबंधित अन्य महत्वपूर्ण तथ्य :

- **प्रथम आँग्ल मराठा युद्ध (1775-1782):** प्रथम आँग्ल-मराठा युद्ध, मराठों द्वारा 1776 की पुरंदर की संधि के उल्लंघन किए जाने से उत्पन्न ब्रिटिश प्रतिशोध के कारण हुआ। इस युद्ध का समापन सालबाई की संधि (1782) के साथ हुआ। इस संधि के परिणामस्वरूप साल्सेट क्षेत्र ब्रिटिशों को प्राप्त हुआ। जबकि पुरंदर की संधि के तहत विजित शेष क्षेत्र मराठों को वापस लौटा दिए गए।
- **द्वितीय आँग्ल-मराठा युद्ध:** मराठों के बीच आंतरिक विवादों ने ब्रिटिशों को एक अन्य अवसर प्रदान किया। बाजीराव द्वितीय ने ब्रिटिशों के साथ बसीन की संधि (1802) पर हस्ताक्षर किए, जिससे ब्रिटिशों को रणनीतिक लाभ प्राप्त हुए। इससे ब्रिटिशों को मराठा क्षेत्र में स्थाई रूप से अंग्रेजी सेना को रखने का अवसर प्राप्त हो गया।
- **तृतीय आँग्ल-मराठा युद्ध (1817-1819):** ब्रिटिशों ने पिंडारियों (मराठा सेना में किराए के सैनिक) के विरुद्ध विभिन्न कार्रवाईयां की। इसने मराठा संघ को ब्रिटिशों के विरुद्ध एकताबद्ध किया। मराठा, ब्रिटिशों द्वारा पराजित हुए तथा विभिन्न संधियों पर हस्ताक्षर किए गए, जिसका परिणाम मराठा संघ के विघटन के रूप में परिलक्षित हुआ।

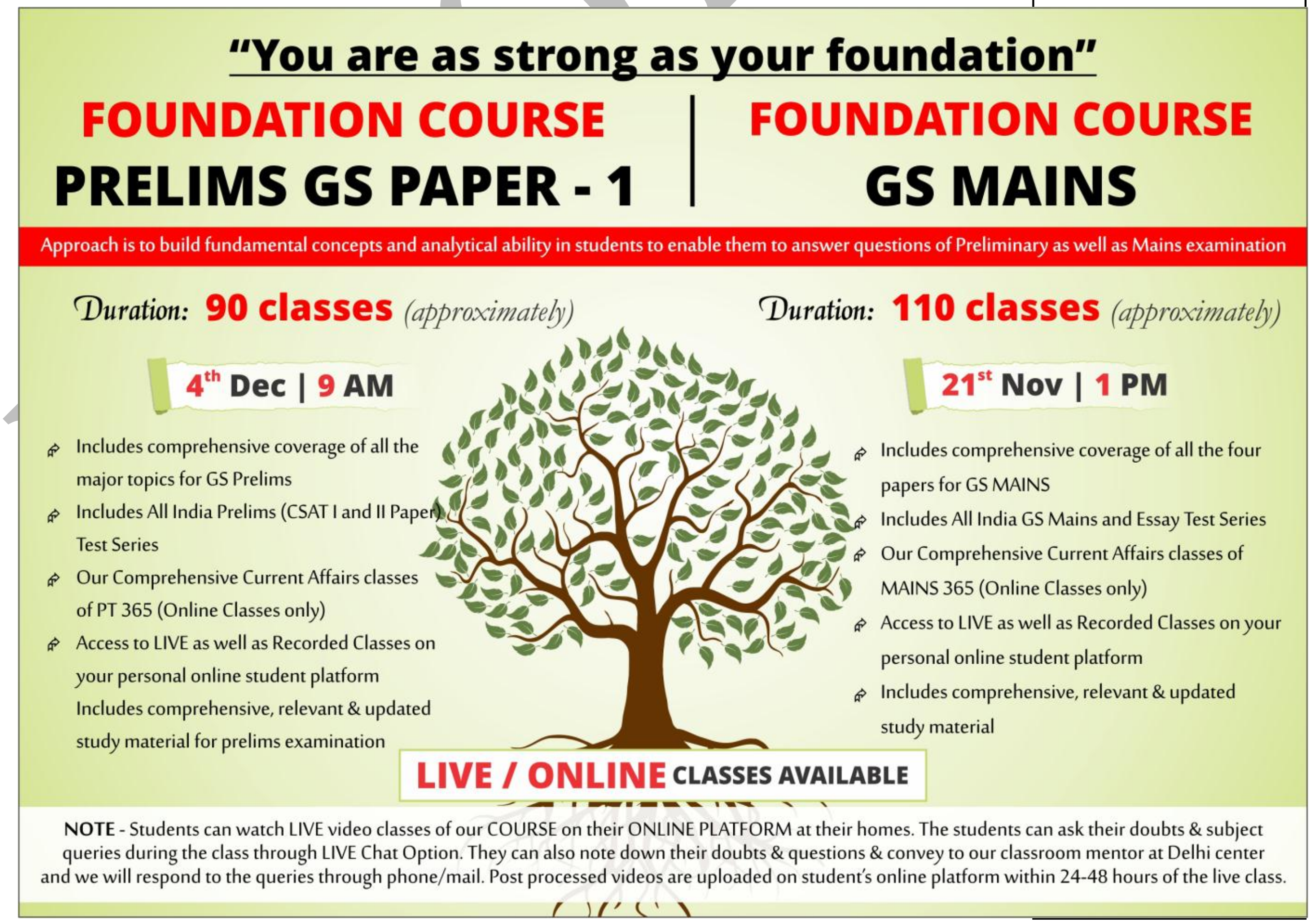

VISION IAS

9. व्यक्तित्व

(PERSONALITIES)

9.1. बसव जयंती

(Basava Jayanti)

सुर्खियों में क्यों?

- कर्नाटक में बसवेश्वर (बसव) का 884वां जन्मदिवस बसवन्ना जयंती या बसव जयंती के रूप में मनाया गया। बसवेश्वर 12वीं सदी के सामाजिक सुधारक थे।

बसवेश्वर के बारे में

- बसवेश्वर को **लिंगायतवाद या लिंगायत संप्रदाय या वीरशैववाद** का संस्थापक माना जाता है।
- ये दलितों के उत्थान के लिए प्रतिबद्ध थे। इन्होंने ब्राह्मणवादी वैदिक परंपरा में व्याप्त हो चुकी बुराईयों का प्रबल विरोध किया।
- इन्होंने अपने व्यावहारिक अनुभवों को साहित्य की एक विशिष्ट विधा में प्रस्तुत किया जिसे **'वचन (कविता)'** कहा जाता है। वचन (कविता) आंदोलन का मुख्य उद्देश्य सभी के कल्याण को सुनिश्चित करना था ।
- इन्होंने **'*कल्याण राज्य*' (वेलफेयर स्टेट)** की स्थापना की घोषणा की।
- इन्होंने **"स्थावर"** और **"जंगम"** नामक दो महत्वपूर्ण और अभिनव अवधारणाएं प्रतिपादित कीं। इनका अर्थ क्रमश: "स्थिर" और "गतिशील" है। ये अवधारणाएं बसवन्ना की क्रांतिकारी विचारधारा की मुख्य आधार हैं।

9.2. संत त्यागराज

(Saint Tyagraja)

सुर्खियों में क्यों?

- हाल ही में संत त्यागराज की 250वीं जयंती मनाई गई।

संत त्यागराज के बारे में

- संत त्यागराज **'कर्नाटक त्रिमूर्ति'** के प्रमुख संगीतकारों में से एक हैं। इस त्रिमूर्ति में **संत त्यागराज** के साथ ही **मुत्तुस्वामी दीक्षितार** और **श्यामा शास्त्री** भी शामिल हैं।
- संत त्यागराज का जन्म तमिलनाडु के तंजावुर जिले में हुआ था।
- रामायण के प्रभाव से वह भगवान राम के प्रख्यात भक्त बन गए। इन्होंने अपने जीवन में लगभग 24000 गीतों को भगवान राम को समर्पित किया।
- तिरुवारूर में प्रत्येक वर्ष जनवरी और फरवरी माह के बीच त्यागराज के सम्मान में एक संगीत उत्सव 'त्यागराज आराधना' आयोजित किया जाता है।

संबंधित तथ्य

- लिंगायत स्वयं को हिंदूओं से पृथक धार्मिक समूह के रूप में वर्गीकृत करवाना चाहते हैं।
- हालांकि लिंगायत भगवान शिव की पूजा करते हैं, परन्तु उनका मानना है कि "इष्ट लिंग" (व्यक्तिगत देवता) की अवधारणा और बसवेश्वर द्वारा निर्धारित आचार-व्यवहार के नियमों को हिंदू जीवन शैली के समान नहीं माना जा सकता है।
- राज्य की जनसंख्या की 10-17% जनसंख्या लिंगायत है और इन्हें अन्य पिछड़ा वर्ग श्रेणी में सूचीबद्ध किया गया है।

VISION IAS

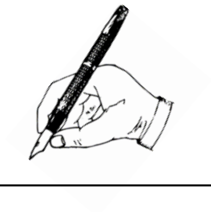

9.3. राजा राम मोहन राय

(Raja Ram Mohan Roy)

सुर्ख़ियों में क्यों?

हाल ही में राजा राम मोहन राय की 245वीं जयंती मनाई गई।

राजा राम मोहन राय के बारे में

- 19वीं शताब्दी में भारत के सामाजिक-सांस्कृतिक जागरण की पृष्ठभूमि में राजा राम मोहन राय की महत्वपूर्ण भूमिका है।
- इन्हें **"आधुनिक भारत के निर्माता", "आधुनिक भारत के जनक"** और **"बंगाल पुनर्जागरण के जनक"** के रूप में भी जाना जाता है।
- मुगल बादशाह अकबर शाह द्वितीय ने उन्हें **"राजा"** की उपाधि प्रदान की थी।
- इन्होंने **विधवा पुनर्विवाह** के समर्थन में तथा **सती प्रथा एवं बाल विवाह जैसी कुरीतियों** के खिलाफ अभियान चलाया।
- इन्होंने अगस्त 1828 में ब्रह्म सभा की स्थापना की। ब्रह्म सभा को बाद में ब्रह्म समाज के रूप में जाना जाने लगा। ब्रह्म समाज 1814 में स्थापित आत्मीय सभा का ही विकसित रूप था।
- ब्रह्मसमाज ने **एक ईश्वर की उपासना, भाईचारे और एक दूसरे पर निर्भरता** पर बल दिया।
- वे भारतीय संस्कृति में पश्चिमी समाज के आदर्शों की अच्छाईयों का समावेश करना चाहते थे।
- इन्होंने 1822 में कलकत्ता में **हिंदू कॉलेज** की स्थापना की।
- इन्होंने **संवाद कौमुदी और मिरात-उल-अखबार** जैसे स्तरीय पत्रों का विभिन्न भाषाओं में प्रकाशन किया।

9.4 श्री रामानुजाचार्य

(Sri Ramanujacharya)

सुर्ख़ियों में क्यों ?

1 जून 2017 को श्रीरंगम और कांचीपुरम में श्री रामानुजाचार्य की 1000वीं जयंती मनाई गई।

वेदांत

हिन्दू दर्शन की वेदांत शाखा वेदांत (वेदों के अंत) या उपनिषदों पर आधारित है।

वेदांत दर्शन की अन्य शाखाएं (विशिष्टाद्वैत के अतिरिक्त) निम्नलिखित हैं:

- **द्वैत**: इसके मुख्य प्रतिपादक **मध्वाचार्य** हैं। यह एक **द्वैतवादी** सम्प्रदाय है जिसके अनुसार सत्ता (सृष्टि) दो भागों, स्वतंत्र (स्वतंत्र प्राणी) और परतंत्र (आश्रित प्राणी) में विभाजित है।
- **भेदाभेद या द्वैताद्वैत**: इसके संस्थापक **निम्बार्क** हैं। यह **द्वैताद्वैतवाद** में विश्वास करता है अर्थात् सर्वोच्च सत्ता स्वयं को विश्व की आत्माओं में रूपांतरित करती है। इस प्रकार, आत्मा सर्वोच्च सत्ता से भिन्न है और बिना समर्थन के स्वतंत्र रूप से अस्तित्व बनाए नहीं रख सकती।
- **शुद्धाद्वैत**: इसके संस्थापक **वल्लभ** हैं। यह **शुद्धाद्वैतवाद** पर विश्वास करता है अर्थात् ईश्वर स्वयं में शुद्ध है।
- **अद्वैत**: इसके संस्थापक **आदि शंकराचार्य** हैं। यह **अद्वैतवाद** अर्थात् व्यक्तिगत आत्मा और सर्वोच्च ईश्वर के एकत्व के सिद्धांत पर विश्वास करता है।

श्री रामानुजाचार्य के बारे में

- श्री रामानुजाचार्य एक **हिंदू वैष्णव धर्मशास्त्री** और दार्शनिक थे जो हिंदू धर्म में नयापन लाए और उसे पुनर्जीवन दिया।
- उनका जन्म तमिलनाडु के श्री पेरुंबुदुर गांव में एक तमिल ब्राह्मण परिवार में हुआ।
- उन्होंने **विशिष्टाद्वैतवाद** के नाम से प्रचलित दर्शन की शिक्षा दी।
- विशिष्टाद्वैत को यह नाम इसलिए दिया गया है क्योंकि यह दर्शन विशेष या गुणों के साथ-साथ अद्वैत या ईश्वर के एकत्व की बात करता है। इसलिए, यह सशर्त अद्वैतवाद है।

VISION IAS

- **विशिष्टाद्वैत प्रणाली** एक प्राचीन मत है जिसकी व्याख्या मूलतः **बोधायन द्वारा 400 ई. पू. में** की गई थी।
- श्री रामानुजाचार्य ने संस्कृत में कुल 9 दार्शनिक ग्रंथ लिखे, जिन्हें **नवग्रन्थ** कहा जाता है। उनमें से कुछ हैं: **वेदांत संग्रह (वेदों पर टीका), श्री भाष्य (ब्रह्मसूत्र पर टीका), भगवद्गीता भाष्य (भगवद्गीता पर टीका)।**
- रामानुज ने **भक्ति** के लिए एक बौद्धिक आधार प्रदान किया।

भक्ति आंदोलन

- भक्ति आंदोलन मध्यकाल के दौरान हुए धार्मिक आंदोलन को संदर्भित करता है जिसमें ईश्वर के प्रति एकचित्त समर्पण पर बल दिया गया था।
- इसका उद्भव 7वीं से 12वीं सदी के बीच दक्षिण भारत में हुआ। इसके पश्चात् यह उत्तर की ओर बढ़ा।
- इसने अलवार और नयनार, वैष्णव और शैव कवियों की कविताओं के माध्यम से अत्यधिक लोकप्रियता प्राप्त की।
- इसने अनुष्ठानों, समारोहों और अंधविश्वासों की निंदा की।
- इसने धार्मिक मामलों में निर्णय लेते समय ग्रहणशीलता अपनाने की शिक्षा दी। इसने जातिगत भेदभाव को चुनौती दी।
- कबीर, गुरु नानक, मीराबाई, सूरदास और तुलसी दास, चैतन्य इत्यादि भक्ति आंदोलन के महान व्यक्तित्व हैं।

भक्ति समर्थकों के प्रसिद्ध साहित्यिक कार्य-

अलवार: अलवार (संतों की कुल संख्या 12) विष्णु के प्रति समर्पित थे। अलवार रचनाओं के प्रमुख संकलनों में से एक **नालयिर दिव्यप्रबन्धम** (चार हजार पवित्र रचनाएँ) था। **इसे तमिल वेद के रूप में भी वर्णित किया गया है।**

नयनार: ये 63 संत थे जो शिव के प्रति समर्पित थे। इनकी कविताओं का संकलन (तमिल साहित्य) 12 संस्करणों में है जिसे **तिरुमुराई** के नाम से जाना जाता है। प्रथम सात संस्करणों में अप्पार, संबंदर और सुंदर की रचनाएँ **तेवरम** के नाम से संकलित हैं।

कबीरदास- यह 15वीं सदी के कवि हैं जिनके लेखन का भक्ति आंदोलनों पर प्रभाव पड़ा। इनके लिखे छंद गुरु ग्रंथ साहिब में भी पाए जाते हैं। इनकी कुछ प्रसिद्ध रचनाएँ **कबीर बीजक, साखी ग्रंथ, कबीर ग्रंथावली और अनुराग सागर** में संकलित हैं।

नानक- अन्य धार्मिक कवियों जैसे बाबा फरीद, रविदास (रैदास) एवं कबीर के साथ-साथ नानक द्वारा रचे गए भजनों को गुरु अर्जुन देव द्वारा **आदि ग्रन्थ साहिब** में संकलित किया गया था।

मीराबाई: इन्हें श्री कृष्ण की प्रशंसा में लिखी गईं अपनी कविताओं और भजनों के लिए जाना जाता है।

तुलसीदास: इनकी प्रसिद्ध रचनाओं में **श्रीरामचरितमानस, विनय पत्रिका** और **हनुमान चालीसा आदि** सम्मिलित हैं।

चैतन्य महाप्रभु: इन्होंने संस्कृत में शिक्षाष्टकम् (आठ भक्ति प्रार्थनाएं) की रचना की।

9.5. बाबा फरीद

(Baba Farid)

सुर्ख़ियों में क्यों?

- सूफी संत बाबा शेख़ फरीद जी की स्मृति में फरीदकोट में पांच दिवसीय पर्व मनाया गया।

बाबा फरीद कौन थे?

- चिश्ती सूफी संत **फरीद-उद-दीन गंज-ए-शकर** बाबा फरीद के नाम से जाने जाते है।
- **बाबा फरीद ने पंजाबी भाषा में छंदों की रचना की थी, जिन्हें बाद में गुरु ग्रन्थ साहिब में सम्मिलित किया गया।**

सूफी आंदोलन के संबंध में

- सूफिज्म (सूफीवाद) 19वीं सदी में अस्तित्व में आया एक अंग्रेजी शब्द है। इस्लामिक साहित्यों में सूफीवाद के लिए "**तसव्वुफ़**" शब्द प्रयोग किया गया है। कुछ विद्वानों का विश्वास है कि यह शब्द "**सूफ**" से निकला है, जिसका अर्थ **ऊन** होता है, जिसे सूफी संतों द्वारा पहने जाने वाले खुरदरे ऊनी वस्त्रों से संदर्भित किया जाता है। अन्य विद्वानों का विश्वास है कि यह **सफा** से निकला है, जिसका अर्थ **शुद्धता** होता है।
- सन्यास और रहस्यवाद की ओर अग्रसर होने वाले धार्मिक विचारधारा के लोगों के समूह को सूफी कहा जाता था। उन्होंने ईश्वर की गहन भक्ति और प्रेम के माध्यम से मोक्ष की प्राप्ति पर बल दिया। सूफी संतों को **फकीर या दरवेश** के रूप में भी जाना जाता था।
- भारत में सूफीवाद का प्रसार **10वीं से 14वीं सदी ई. के मध्य हुआ।** 11वीं सदी तक यह कुरान से सम्बंधित अध्ययनों और सूफी प्रथाओं पर संकलित साहित्य के साथ सुविकसित आन्दोलन के रूप में उभरा।
- सूफी समुदाय **खानकाह** के रूप में जाना जाता था, जो एक **शेख़ (पीर या मुर्शिद)** द्वारा नियंत्रित होता था। 12वीं सदी में विश्व के विभिन्न भागों में सूफी **सिलसिले** प्रकट होने लगे थे।
- जब एक शेख़ की मृत्यु होती थी तो उनका **मकबरा (दरगाह)** उनके अनुयायियों हेतु भक्ति का केंद्र बन जाता था। इसने सूफियों की आध्यात्मिक अनुग्रह **(बरकत)** की खोज हेतु **जियारत (तीर्थाटन)** को प्रोत्साहित किया।
- तत्कालीन भारत में प्रचलित प्रमुख सूफी सम्प्रदाय (सिलसिले) चिश्ती, सुहरावर्दी, नक्शबंदी तथा कादिरी थे।
- **चिश्ती सिलसिला**
    - इसकी स्थापना **ख्वाजा मुइनुद्दीन चिश्ती** द्वारा की गई थी, **जिनकी दरगाह अजमेर में स्थित है।**
    - **आत्मसंयम** चिश्ती सिलसिले की मुख्य विशेषता थी। उन्होंने सांसारिक प्रलोभनों से स्वयं को पृथक रखा। चिश्ती संत जन-सामान्य की भाषा में वार्तालाप करते थे।
    - दैवीय परमानंद की प्राप्ति हेतु रहस्यवादी मन्त्रों सहित संगीत एवं नृत्य का संगीतकारों या कव्वालों द्वारा सम्पादन किया जाता था।
    - अमीर खुसरो तथा मलिक मुहम्मद जायसी जैसे कवियों ने सूफी सिद्धांतों की प्रशंसा में कविताएँ लिखीं।
    - कुछ प्रमुख चिश्ती सूफी संतों (अपनी दरगाह सहित) में **ख्वाजा कुतुबुद्दीन बख्तियार काकी (दिल्ली), शेख़ निजामुद्दीन औलिया (दिल्ली), तथा शेख़ नसीरूद्दीन चिराग-ए-दिल्ली (दिल्ली)** हैं।
    - कुतुबमीनार का निर्माण सुल्तान इल्तुतमिश ने करवाया था, जो ख्वाजा कुतुबुद्दीन बख्तियार काकी को समर्पित है।
- **सुहरावर्दी सिलसिला**
    - इस सिलसिले के संस्थापक शेख़ शिहाबुद्दीन सुहरावर्दी थे। हालाँकि भारत में इसका प्रचार शेख़ बहाउद्दीन जकारिया ने किया था।
    - चिश्ती संतों के विपरीत सुहरावर्दी सम्पन्न जीवन व्यतीत करते थे और इन्होनें दिल्ली सल्तनत के अधीन अनेक महत्वपूर्ण पदों को धारण किया था।
- **कादिरी सिलसिला**
    - इसकी स्थापना शेख़ नयामतुल्लाह कादिरी द्वारा की गई थी। शाहजहाँ का ज्येष्ठ पुत्र **दाराशिकोह** इस सिलसिले के प्रमुख अनुयायियों में से एक था।
- **नक्शबंदी सिलसिला**
    - यह सिलसिला मुगल शासनकाल में प्रसिद्ध हुआ। शेख़ अहमद सरहिंदी जो स्वयं को "मुजेद्दिद अली सफ्फानी" (सहस्राब्दी के सुधारक) कहते थे, इस सिलसिले के प्रमुख प्रवर्तकों में से एक थे।

9.6. सरदार वल्लभभाई पटेल

(Sardar Vallabhbhai Patel)

सुर्ख़ियों में क्यों?

- 31 अक्टूबर को **सरदार वल्लभभाई पटेल** की जयंती के अवसर को **राष्ट्रीय एकता दिवस** के रूप में मनाया गया। इस दिन को राष्ट्रीय एकता दिवस के रूप में 2014 से मनाया जा रहा है।

सरदार वल्लभभाई पटेल

- सरदार वल्लभभाई पटेल ने स्वतंत्रता आंदोलन में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी।
- वह गांधीजी की विचारधारा से प्रभावित थे तथा 1917 में गांधीजी से मिलने के पश्चात स्वतंत्रता आंदोलन में सम्मिलित हुए थे।
- 1918 में गुजरात में बड़े पैमाने पर "कर की न अदायगी आंदोलन" का नेतृत्व करने के बाद उन्हें "सरदार" की उपाधि मिली। इस आंदोलन ने ब्रिटिश अधिकारियों को किसानों की जब्त की गयी जमीनें वापस करने पर विवश किया।
- **नागपुर झंडा सत्याग्रह-** 1923 में जब गांधी जी जेल में थे, तब पटेल को कांग्रेस के सदस्यों ने नागपुर में भारतीय ध्वज फहराने पर प्रतिबंध लगाने वाले कानून के विरुद्ध सत्याग्रह का नेतृत्व करने के लिए कहा था।
- **बोरसद दंडात्मक कर सत्याग्रह** - यह बंदोबस्त पुनरीक्षण अधिकारियों द्वारा लोगों पर लगाए जाने वाले भू-राजस्व में अनुचित वृद्धि के विरोध में गांधीजी के नेतृत्व में किया गया सत्याग्रह था। सरदार पटेल ने भी इस सत्याग्रह में भाग लिया।
- उन्होंने 1928 में 'कर-वृद्धि' के विरुद्ध बारदोली सत्याग्रह का भी नेतृत्व किया।
- स्वतंत्रता के बाद, **इन्होंने भारतीय संघ में 500 से अधिक रियासतों के एकीकरण हेतु महत्वपूर्ण कार्य किया।**
- भारत के एकीकरण हेतु उनके अटल संकल्प के लिए उन्हें "लौह पुरुष" भी कहा जाता है।

9.7. बिरसा मुंडा

(Birsa Munda)

सुर्ख़ियों में क्यों?

- बिरसा मुंडा के जन्म की वर्षगाँठ को बिरसा मुंडा जयंती के रूप में मनाया जाता है।

बिरसा मुंडा के बारे में (जो धरती अब्बा के नाम से भी लोकप्रिय हैं)

- इनका जन्म 15 नवंबर 1875 को हुआ था। वह **छोटानागपुर पठार की मुंडा जनजाति** से थे।
- बिरसा मुंडा एक युवा स्वतंत्रता सेनानी और आदिवासी नेता थे जिन्होंने मिलनेरिअन (सहस्राब्दी) आंदोलन का नेतृत्व किया था। 19वीं सदी के उत्तरार्ध में उनकी विरोध की भावना को भारत में ब्रिटिश शासन के खिलाफ विरोध का एक सशक्त प्रतीक माना जाता है।
- वह अपना धर्म परिवर्तित कर ईसाई बन गये लेकिन आदिवासियों को ईसाई धर्म में परिवर्तित करने के मिशनरियों के प्रयासों का अहसास होने के पश्चात बिरसा ने **'बिरसाइट (बिरसा धर्म)'** नामक संप्रदाय शुरू किया। **लोगों द्वारा उसे ईश्वर का दर्जा दे दिया गया।**
- उरांव और मुंडा समुदाय के सदस्यों ने अंग्रेजों की धर्म परिवर्तन संबंधी गतिविधियों को चुनौती देने के लिए बिरसाइट संप्रदाय से जुड़ना आरंभ कर दिया।
- उसने आदिवासी समुदाय के अन्दर व्याप्त अंधविश्वास को समाप्त करने, पशु बलि को रोकने तथा मद्यपान का त्याग करने का भी प्रयास किया।

VISION IAS

- अल्पायु होने के बावजूद, बिरसा को अंग्रेजों द्वारा आरोपित भू-बंदोबस्त प्रणाली के विरुद्ध जनजातीय समुदाय को एकजूट करने के लिए जाना जाता है। इसने अंग्रेजों को **उसकी मृत्यु के आठ वर्ष पश्चात आदिवासियों के भूमि अधिकारों की रक्षा हेतु छोटानागपुर टेनेंसी एक्ट** लागू करने के लिए विवश किया।
- वह एकमात्र आदिवासी नेता हैं जिनका चित्र संसद के केंद्रीय कक्ष में लगाया गया हैं।

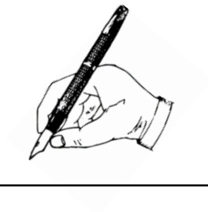

9.8 अनसूया साराभाई

(Anasuya Sarabhai)

सुर्ख़ियों में क्यों?

- गूगल ने अनसूया साराभाई की 132वीं वर्षगांठ को एक डूडल बनाकर मनाया।

अनसूया साराभाई के संदर्भ में

- इन्हें भारत की प्रथम महिला यूनियन लीडर के रूप में जाना जाता है I 1920 में इन्होंने भारत में कपड़ा कामगारों की सबसे पुरानी यूनियन अहमदाबाद टेक्सटाइल लेबर एसोसिएशन (मजदूर महाजन संघ) की स्थापना की।
- इनका जन्म अहमदाबाद के एक संपन्न परिवार में हुआ था। ये छोटी उम्र में ही अनाथ हो गई थीं और मात्र 12 वर्ष की आयु में इन्हें विवाह करने को विवश किया गया। हालांकि, वे भाग निकली और लंदन स्कूल ऑफ इकोनॉमिक्स में अध्ययन करने चली गई।
- लंदन में, वह फेबियन सोसाइटी और समानता सम्बन्धी नए विचारों से प्रभावित हुई तथा महिलाओं के लिए मताधिकार की मांग करने वाले आंदोलन में शामिल हुईं।
- भारत वापस आने पर, ये मिल श्रमिकों की 36 घंटे की शिफ्ट की दुर्दशापूर्ण कार्यदशाओं के विरोध से जुड़ गई। 1914 में, इन्होंने अधिक मजदूरी के लिए बुनकरों की प्रथम हड़ताल आयोजित करने में सहायता की।
- वह 1972 में सेल्फ- एम्प्लॉइड वीमन्स एसोसिएशन ऑफ इंडिया के गठन में भी शामिल थी।

भारत के स्वतंत्रता संग्राम में सम्मिलित अन्य प्रमुख महिलाएं

- **रानी लक्ष्मी बाई -** वह भारत की स्वतंत्रता के प्रथम युद्ध (1857) के अग्रणी योद्धाओं में से एक थी। उन्होंने "व्यपगत के सिद्धांत" का विरोध किया और झांसी पर अपना दावा छोड़ने से मना कर दिया।
- **बेगम हजरत महल -** इन्हें अवध की बेगम के नाम से भी जाना जाता है, इन्होंने 1857 के विद्रोह में एक प्रमुख भूमिका निभाई।
- **सावित्रीबाई फुले -** ब्रिटिश शासनकाल के दौरान महिलाओं के अधिकारों में सुधार लाने हेतु इन्होंने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। इन्होंने 1848 में पुणे के भिडेवाडी में अपने पति के सहयोग से प्रथम महिला स्कूल की स्थापना की I महिलाओं के अधिकारों के अतिरिक्त, इन्होंने जाति आधारित भेदभाव के उन्मूलन के पक्ष में भी कार्य किया।
- **सरोजिनी नायडू -** वह भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की प्रथम महिला अध्यक्ष और साथ ही किसी भारतीय राज्य (संयुक्त प्रांत) की प्रथम महिला राज्यपाल भी थी। उन्होंने सविनय अवज्ञा आंदोलन में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उन्हें उनके साहित्यिक कार्यों के लिए भी जाना जाता है।
- **अरुणा आसफ अली -** इन्हें पूर्वनिर्धारित समय पर बॉम्बे के ग्वालिया टैंक मैदान में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस का ध्वज फहरा कर भारत छोड़ो आंदोलन का आरंभ करने के लिए याद किया जाता है। ये **ग्रैंड ओल्ड लेडी ऑफ़ इंडिपेंडेंस** के रूप में लोकप्रिय हैं।

VISION IAS

- **मैडम भीकाजी कामा -** इन्हें 1907 में जर्मनी के स्टुटगार्ट में स्वयं द्वारा डिज़ाइन किए गए प्रथम भारतीय राष्ट्रीय ध्वज को फहराने का विशेष श्रेय प्राप्त है। इन्हें **"भारतीय क्रांति की जननी"** के रूप में जाना जाता है। इन्होंने अपने क्रांतिकारी विचारों के प्रसार के लिए "बन्देमातरम्" नामक पत्रिका भी शुरू की तथा दादाभाई नौरोजी के निजी सचिव के रूप में भी कार्य किया।
- **एनी बेसेंट -** इन्होंने 1916 में होम रूल लीग की स्थापना की और वह बनारस हिंदू विश्वविद्यालय के संस्थापकों में से एक हैं। इन्होंने न्यू इंडिया और कॉमनवील समाचार पत्र भी शुरू किए थे तथा अपने भाषणों और लेखनी के माध्यम से लोगों के मध्य जबरदस्त उत्साह पैदा किया।
- **उषा मेहता -** ये भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन की सबसे कम उम्र की स्वतंत्रता सेनानियों में से एक थीं। इन्होंने 8 वर्ष की अल्पायु में "साइमन गो बैक" प्रदर्शन में भाग लिया। इन्हें गुप्त कांग्रेस रेडियो संचालित करने का भी श्रेय दिया जाता है तथा ये भारत छोड़ो आंदोलन के दौरान भूमिगत रेडियो की संचालिका थीं।

VISION IAS

10. सरकारी योजनाएं

(GOVERNMENT SCHEMES)

10.1. पर्यटन मंत्रालय की योजनाएँ

(Schemes of Ministry of Tourism)

10.1.1. स्वदेश दर्शन

(Swadesh Darshan)

- पर्यटन मंत्रालय (MoT) ने **2014-15 में देश में थीम-आधारित पर्यटन सर्किटों के एकीकृत विकास हेतु** स्वदेश दर्शन योजना का शुभारम्भ किया है।
- इस योजना की कल्पना भारत सरकार की अन्य योजनाओं जैसे स्वच्छ भारत अभियान, स्किल इंडिया, मेक इन इंडिया आदि के साथ समन्वय स्थापित करने के लिए की गई है। इसके पीछे यह विचार था कि पर्यटन क्षेत्र को नौकरियों के सृजन तथा आर्थिक संवृद्धि के संचालक बल के रूप में एक प्रमुख शक्ति बनाया जाए तथा अन्य क्षेत्रों के साथ समन्वय स्थापित कर इसकी संभावनाओं को साकार किया जाए।
- इस योजना के अंतर्गत विकास हेतु 13 थीम आधारित सर्किटों की पहचान की गई है। ये हैं: पूर्वोत्तर भारत सर्किट, बौद्ध सर्किट, हिमालय सर्किट, कोस्टल सर्किट, कृष्णा सर्किट, डेज़र्ट सर्किट, ट्राइबल सर्किट, इको सर्किट, वाइल्डलाइफ सर्किट, रूरल सर्किट, स्पिरिचुअल सर्किट, रामायण सर्किट, हेरिटेज सर्किट।

10.1.2. स्पेशल टूरिज्म जोन

(Special Tourism Zone)

सुर्ख़ियों में क्यों?

- हाल ही में महाराष्ट्र सरकार द्वारा पुणे जिले के जुन्नार तालुका को एक 'स्पेशल टूरिज्म जोन' के रूप में घोषित किया गया। यहाँ छत्रपति शिवाजी के जन्मस्थल - शिवनेरी किले के अतिरिक्त सात अन्य ऐतिहासिक किले तथा 350 से अधिक गुफाएं भी मौजूद हैं।

स्पेशल टूरिज्म जोन से संबंधित तथ्य

- राज्यों के साथ साझेदारी में स्पेशल पर्पस व्हीकल (एसपीवी) द्वारा संचालित होने वाले 'स्पेशल टूरिज़्म जोन' के निर्माण की घोषणा वर्ष 2017-18 के बजट में की गयी थी।
- स्पेशल टूरिज्म जोन्स का निर्माण, सम्बंधित क्षेत्रों के समग्र विकास को बढ़ावा देगा एवं विविधतापूर्ण पर्यटन अनुभव प्रदान करेगा। यह उन क्षेत्रों में रहने वाले स्थानीय समुदायों के लिए आजीविका अवसर उत्पन्न करने में सहायता करेगा तथा उनके जीवन स्तर में सुधार लाएगा।

10.1.3. पर्यटन पर्व

(Paryatan Parv)

सुर्ख़ियों में क्यों?

हाल ही में, पर्यटन मंत्रालय ने अन्य केन्द्रीय मंत्रालयों, राज्य सरकारों और हितधारकों के सहयोग से पर्यटन पर्व का आयोजन किया।

पर्यटन पर्व से संबंधित तथ्य

- इसका आयोजन 5 अक्टूबर से 25 अक्टूबर तक पर्यटन के लाभ की ओर ध्यान आकर्षित करने, सांस्कृतिक विविधता के प्रदर्शन तथा "टूरिज्म फॉर ऑल" के सिद्धांत को सुदृढ़ करने के उद्देश्य से किया गया था।

VISION IAS

- यह कार्यक्रम भारतीयों को अपने देश के भ्रमण हेतु प्रोत्साहित करने (**देखो अपना देश**) पर केंद्रित था। देश के सभी राज्यों में संवादात्मक (interactive) सत्रों के साथ-साथ क्षेत्र में नवाचार एवं कौशल विकास को बढ़ावा देने हेतु कार्यशालाओं जैसे पर्यटन कार्यक्रमों का आयोजन किया जाएगा।

10.1.4. 'धरोहर गोद लें' योजना

(Adopt a Heritage Scheme)

सुर्ख़ियों में क्यों?

हाल ही में सात कंपनियों को 'धरोहर गोद लें' योजना के अंतर्गत चौदह स्मारकों के संरक्षण के लिए चुना गया है।

'धरोहर गोद लें' योजना/'अपनी धरोहर अपनी पहचान' परियोजना का विवरण

- यह संस्कृति मंत्रालय और भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण (ASI) के सहयोग से **पर्यटन मंत्रालय** द्वारा प्रारम्भ की गयी एक योजना है।
- इस योजना के अंतर्गत निजी क्षेत्र की कंपनियों, सार्वजनिक क्षेत्र की कंपनियों और कॉर्पोरेट व्यक्तियों को विरासत स्थलों को गोद लेने के लिए आमंत्रित किया गया है।
- इन्हें **"स्मारक मित्र"** (Monument Mitras) कहा जाएगा और इनके द्वारा संरक्षण हेतु की गयी गतिविधियों को कॉर्पोरेट सोशल रिस्पॉन्सिबिलिटी (CSR) पहल के अंतर्गत माना जाएगा।
- यह योजना पूरे भारत में **स्मारकों, विरासतों और पर्यटन स्थलों** के विकास की परिकल्पना करती है तथा उन्हें अधिक संधारणीय बनाने के उद्देश्य से उनकी पर्यटन क्षमता एवं सांस्कृतिक महत्व में वृद्धि कर इन्हें पर्यटक अनुकूल (टूरिस्ट फ्रेंडली) बनाती है।

10.1.5. आईकॉनिक टूरिस्ट साइट्स प्रोजेक्ट

(Iconic Tourist Sites Project)

सुर्ख़ियों में क्यों?

- पर्यटन मंत्रालय द्वारा आईकॉनिक टूरिस्ट साइट्स प्रोजेक्ट के तहत विकास हेतु 12 स्थलों की पहचान की गई है।

आईकॉनिक टूरिस्ट साइट्स प्रोजेक्ट के संदर्भ में

- प्रमुख पर्यटन स्थलों को आईकॉनिक टूरिस्ट डेस्टिनेशन के रूप में विकसित करने की घोषणा 2018-19 के केंद्रीय बजट में की गई है।
- साइट्स की पहचान वहाँ आने वाले लोगों की संख्या, क्षेत्रीय वितरण, विकास की संभावना और कार्यान्वयन की सुगमता जैसे मानदंडों के आधार पर की गई थी।
- पहचाने गए 12 स्थल हैं- ताज महल, फतेहपुर सीकरी, अजंता की गुफाएं, एलोरा गुफाएं, हुमायूं का मकबरा, कुतुब मीनार, लाल किला, कोलाबा बीच, आमेर का किला, सोमनाथ, धौलावीरा, खजुराहो, हम्पी, महाबलीपुरम, काजीरंगा, कुमारकोम, महाबोधि मंदिर।

10.1.6. प्रसाद योजना

(Prasad Scheme)

सुर्ख़ियों में क्यों?

परिवहन, पर्यटन और संस्कृति पर संसद की स्थायी समिति ने पर्यटन मंत्रालय की महत्वपूर्ण 'प्रसाद' योजना को एक ऐसी योजना के तौर पर संदर्भित किया है जिसकी अवधारणा "मौलिक रूप से गलत" है।

प्रसाद योजना के संदर्भ में

- तीर्थयात्रा कायाकल्प और आध्यात्मिक संवर्द्धन अभियान (प्रसाद) को 2015 में प्रारंभ किया गया था।
- इसका उद्देश्य पर्यटकों की अधिक संख्या, प्रतिस्पर्धा और संधारणीयता के सिद्धांत के आधार पर धार्मिक पर्यटन स्थलों की पहचान और उनका विकास करना था, ताकि धार्मिक पर्यटन के अनुभव को समृद्ध बनाया जा सके।

VISION IAS

- इस योजना के तहत प्रारंभ में 12 शहरों का चयन किया गया था, लेकिन बाद में इसे बढ़ाकर 25 कर दिया गया।

10.2. संस्कृति मंत्रालय की योजनायें

(Schemes of Ministry of Culture)

10.2.1. सांस्कृतिक मानचित्रण और रोडमैप पर राष्ट्रीय मिशन

(National Mission on Cultural Mapping and Roadmap)

सुर्ख़ियों में क्यों?

- भारत सरकार ने **मथुरा जिले से भारत के सांस्कृतिक मानचित्रण पर राष्ट्रीय मिशन** का कार्यान्वयन आरम्भ किया है।

सांस्कृतिक मानचित्रण और रोडमैप पर राष्ट्रीय मिशन के बारे में

- यह मिशन **एक भारत, श्रेष्ठ भारत** के अंतर्गत आता है। इस मिशन का उद्देश्य सरकार और कलाकारों के मध्य संचार का एक प्रत्यक्ष माध्यम स्थापित करना है और उनकी प्रतिभा को निखारने व उनमें सहयोग बढ़ाने के उद्देश्य से कलाकारों के मध्य पियर-टू-पियर संचार स्थापित करना है।
- मिशन के मुख्य **उद्देश्य** इस प्रकार हैं:
  - सभी कला रूपों और कलाकारों के विकास के लिए **हमारी संस्कृति हमारी पहचान अभियान** नामक जागरूकता कार्यक्रम चलाकर **सांस्कृतिक मानचित्रण (अर्थात सांस्कृतिक परिसंपत्तियों और संसाधनों का डाटाबेस) स्थापित करना।** यह अभियान " डिज़ाईन फॉर डिजायर एंड ड्रीम" प्रोजेक्ट के अंतर्गत एक मजबूत तंत्र प्रदान कर उनकी आकांक्षाओं एवं आवश्यकताओं का ध्यान रखेगा।
  - यह मिशन इस अभियान के विभिन्न स्तरों पर **"सांस्कृतिक प्रतिभा खोज समारोह दिन"** का आयोजन भी करेगा।
  - सभी कला रूपों के क्षेत्र में सूचना प्राप्त करने, ज्ञान साझा करने, भागीदारी, प्रदर्शन और पुरस्कार हेतु एक **नेशनल कल्चरल वर्किंग प्लेस (NCWP) पोर्टल** की स्थापना करना।

एक भारत, श्रेष्ठ भारत के बारे में

- एक भारत, श्रेष्ठ भारत कार्यक्रम 2016 में प्रारंभ किया गया था।
- इसका लक्ष्य भारत के विभिन्न राज्यों और संघ राज्य क्षेत्रों में रहने वाले विविध संस्कृतियों के लोगों के मध्य पारस्परिक मेलजोल को प्रोत्साहित करना है। ऐसा किए जाने का उद्देश्य उनके बीच आपसी समझ को बढ़ावा देना है।
- कार्यक्रम के अनुसार पारस्परिक मेलजोल को प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से प्रत्येक वर्ष, प्रत्येक राज्य/संघ शासित प्रदेश को भारत के किसी अन्य राज्य/ संघ शासित प्रदेश के साथ युग्मित किया जाएगा।
- इस विनिमय के माध्यम से इस बात की परिकल्पना की गई है कि विभिन्न राज्यों की भाषा, संस्कृति, परंपराओं तथा प्रथाओं का ज्ञान एक-दूसरे के बीच समझ व जुड़ाव को बढ़ाएगा। इस प्रकार भारत की एकता और अखंडता सशक्त होगी।

10.3. अन्य सरकारी पहलें

(Other government initiatives)

10.3.1. स्वच्छ आइकॉनिक प्लेस

(Swachh Iconic Place)

सुर्ख़ियों में क्यों?

मदुरै के मीनाक्षी सुंदरेश्वर मंदिर को भारत में सबसे श्रेष्ठ 'स्वच्छ आइकॉनिक प्लेस' (स्वच्छ स्थान) के रूप में घोषित किया गया है।

VISION IAS

मीनाक्षी सुंदरेश्वर मंदिर, तमिलनाडु

- मंदिर की वर्तमान संरचना 1623-1655 AD में मदुरै के नायक शासकों द्वारा बनाई गई थी, हालांकि इसकी ऐतिहासिकता को छठी शताब्दी ई.पू. के दौरान अस्तित्व में रहे प्राचीन मदुरै के पाण्ड्य शासनकाल में भी खोजा जा सकता है।
- यह मंदिर पार्वती (जिन्हें मीनाक्षी के नाम से जाना जाता है) और उनके पति शिव (जिन्हें यहाँ सुंदरेश्वर नाम दिया गया है) को समर्पित है।
- एक मंदिर कुंड, विशालकाय विमान, 14 गोपुरम तथा 1000 स्तंभों वाले मंडपम से युक्त यह मंदिर द्रविड़ वास्तुकला की एक उत्कृष्ट कृति है।

संबंधित तथ्य

- स्वच्छ आइकॉनिक प्लेस, स्वच्छ भारत मिशन के अंतर्गत प्रारम्भ की गयी एक पहल है।
- शहरी विकास मंत्रालय, संस्कृति मंत्रालय, पर्यटन मंत्रालय और संबंधित राज्य सरकारों के साथ सहयोग में पेयजल और स्वच्छता मंत्रालय इस पहल के लिए समन्वयक मंत्रालय होगा।
- स्वच्छ आइकॉनिक प्लेस पहल के अंतर्गत सरकार देश के 100 प्रतिष्ठित विरासत, आध्यात्मिक और सांस्कृतिक स्थलों पर केंद्रित एक विशेष स्वच्छता पहल आरंभ करेगी।
- सभी आइकॉनिक स्थलों ने वित्तीय और तकनीकी सहायता हेतु PSUs को नामित किया गया है।

10.3.2 राष्ट्रीय क्षेत्रीय सांस्कृतिक केंद्र

(National Zonal Cultural Centres)

सुर्ख़ियों में क्यों?

- हाल ही में, पूर्वी क्षेत्रीय सांस्कृतिक केंद्रों ने नेशनल थियेटर फेस्ट, भारत उत्सव, नेशनल माइम फेस्टिवल जैसे विभिन्न महोत्सवों का आयोजन किया।

क्षेत्रीय सांस्कृतिक केंद्रों के संदर्भ में

- देश भर में लोक कला और पारंपरिक कला के विभिन्न रूपों का परिरक्षण, संरक्षण और उन्हें प्रोत्साहन देने के उद्देश्य से भारत सरकार ने सात क्षेत्रीय सांस्कृतिक केंद्रों (ZCCs) की स्थापना की है।
- ZCCs अनेक योजनाओं का कार्यान्वियन कर रही हैं, जैसे कि-
  - **अवार्ड टू यंग टेलेंटेड आर्टिस्ट:** 18-31 वर्ष की आयु के युवा प्रतिभाशाली कलाकारों को विभिन्न लोक कला रूपों (जो दुर्लभ हैं और विलुप्त होने की कगार पर हैं) के क्षेत्र में प्रोत्साहन प्रदान करना। इस योजना के अंतर्गत, विभिन्न राज्यों में प्रतियोगिताओं का आयोजन किया जाता है और विजेताओं को पुरस्कार प्रदान किए जाते हैं।
  - **गुरु शिष्य परम्परा योजना :** दुर्लभ और लुप्त होते कला रूपों (चाहे वे शास्त्रीय या लोक/ जनजातीय हों) को संरक्षित एवं प्रोत्साहित करना ताकि युवा प्रतिभाओं को उनके चुने हुए कला क्षेत्र में कौशल प्राप्त करने में सहयोग किया जा सके। यह कार्य, विशेषज्ञों एवं इन क्षेत्रों के सिद्धहस्त लोगों के मार्गदर्शन में छात्रवृति के रूप में कुछ वित्तीय सहायता देकर किया जाएगा।
  - **शिल्पग्राम योजना:** शिल्पग्राम/ कलाग्राम ऐसे केंद्र हैं, जो युवा प्रतिभाशाली शिल्पकारों को प्रशिक्षण और मंच प्रदान कर भारतीय कला और संस्कृति को प्रोत्साहित और संरक्षित करते हैं।
  - **राष्ट्रीय सांस्कृतिक आदान-प्रदान कार्यक्रम (NCEP):** इस योजना के तहत, विभिन्न क्षेत्रों से कलाकारों को अन्य क्षेत्रों में अपनी प्रतिभा दिखाने का अवसर मिलता है।

10.3.3. पारंपरिक खेलों को प्रोत्साहन

(Promotion of Traditional Sports)

सुर्ख़ियों में क्यों?

भारतीय खेल प्राधिकरण (SAI) ने ग्रामीण और स्वदेशी खेलों को बढ़ावा देने हेतु "ग्रामीण, स्वदेशी और जनजातीय खेलों को प्रोत्साहन" विशेष घटक को शामिल करके **'खेलो इंडिया'** प्रस्ताव को नया रूप प्रदान किया है।

VISION IAS

अन्य सम्बंधित तथ्य

- खेल राज्यसूची का विषय है तथा खेलों के विकास और प्रोत्साहन के लिए राज्य सरकार उत्तरदायी होती है।
- SAI द्वारा प्रोत्साहित किये जाने वाले स्वदेशी खेल और मार्शल आर्ट्स (IGMAs) निम्न हैं:
    - **कलारिपट्टु-** इस मार्शल आर्ट का प्रारंभ केरल से हुआ। इसे मूलतः केरल के उत्तरी एवं मध्य भाग तथा दक्षिणी तमिलनाडु से संबंधित माना जाता है।
    - **सिलम्बम** - यह तमिलनाडु में प्रचलित अस्त्र आधारित मार्शल आर्ट है। इसमें बांस से बने हुए अस्त्रों का उपयोग किया जाता है।
    - **तीरंदाजी** - यह झारखंड का खेल है जिसमें धनुष और तीर का उपयोग किया जाता है। परंपरागत रूप से शिकार और मनोरंजन के उद्देश्य से तीरंदाजी की जाती थी।
    - **कबड्डी–** यह एक टीम खेल है जिसमें दो टीमें अंत तक अपने अधिक सदस्यों को बनाये रखने के लिए प्रतिस्पर्धा करती हैं। यह खेल तेलंगाना, आंध्र प्रदेश और महाराष्ट्र में व्यापक रूप से खेला जाता है।
    - **मलखम्भ** – यह पारंपरिक खेल कलाबाजी और एरियल योगा का मिश्रित रूप है। इसका प्रदर्शन लकड़ी के खम्भे पर किया जाता है एवं खिलाड़ी पूरे प्रदर्शन के दौरान कुश्ती पकड़ (Grip) का प्रदर्शन करते हैं।
    - **मुकना** – यह मणिपुर की लोक कुश्ती है।
    - **थांगटा** – यह मणिपुर का एक मार्शल आर्ट है और इसे पारंपरिक रूप से हुयेल लंगलों के नाम से भी जाना जाता है।
    - **खोमलैनई (Khomlainai)**– यह असम में बोडो समुदाय के द्वारा प्रदर्शित किया जाने वाला मार्शल आर्ट का एक प्रकार है।
    - **गटका** – यह पारंपरिक युद्ध प्रशिक्षण है जिसमें तलवारों के रूप में लकड़ी की छड़ियों का उपयोग किया जाता है।

10.3.4 आदि महोत्सव

(Aadi Mahotsav)

सुर्ख़ियों में क्यों?

- आदि महोत्सव (जनजातीय महोत्सव), जनजातीय संस्कृति, शिल्प, भोजन और वाणिज्य की भावना का यह उत्सव चंडीगढ़ में आयोजित किया गया। इससे पहले, यह दिल्ली में आयोजित किया गया था।

आदि महोत्सव के संदर्भ में

- यह **भारतीय जनजातीय सहकारी विपणन विकास संघ लिमिटेड (ट्राइफेड), जनजातीय मामलों के मंत्रालय और उत्तर क्षेत्र सांस्कृतिक केंद्र** की एक संयुक्त पहल है।
- आदि महोत्सव ने जनजातीय दस्तकारों को उनके उत्पादों को प्रदर्शित करने और बेचने का अवसर प्रदान किया। यह जनजातीय वाणिज्य को डिजिटल और इलेक्ट्रॉनिक लेनदेन को अगले स्तर तक ले जाने का एक प्रयास भी है।
- राष्ट्रीय अनुसूचित जनजाति वित्त एवं विकास निगम (NSTFDC) के माध्यम से ऋण प्रदान करने के लिए एक विशेष योजना भी आरंभ की गई थी।

ट्राईफेड के संदर्भ में

- ट्राईफेड 1987 में अस्तित्व में आया। यह राष्ट्रीय स्तर का एक शीर्ष संगठन है, जो **जनजातीय मामलों के मंत्रालय** के प्रशासनिक नियंत्रण के अंतर्गत कार्य कर रहा है।
- ट्राइफ़ेड का अंतिम उद्देश्य जनजातीय उत्पादों के विपणन विकास के माध्यम से देश में जनजातीय लोगों का सामाजिक-आर्थिक विकास करना है।

VISION IAS

10.3.5. दीनदयाल स्पर्श योजना

(Deen Dayal Sparsh Yojana)

सुर्खियों में क्यों?

हाल ही में, सरकार ने डाक-टिकट संग्रह को बढ़ावा देने हेतु स्पर्श (SPARSH) योजना आरंभ की है।

डाक टिकट संग्रह (फिलेटली) – इसमें विषयगत क्षेत्रों (thematic areas) के आधार पर डाक टिकटों या संबंधित उत्पादों की खोज करना, उनकी अवस्थिति का पता लगाना, उन्हें प्राप्त करना, सूचीबद्ध करना, प्रदर्शित एवं संग्रहित करना तथा उनका अनुरक्षण शामिल है।

डाक टिकटों के प्रति अभिरुचि और शोधकार्य को प्रोत्साहन हेतु छात्रवृति– SPARSH योजना

- यह योजना सरकार द्वारा अखिल भारतीय स्तर पर डाक टिकटों के संग्रहण एवं अध्ययन को बढ़ावा देने हेतु आरम्भ की गई है।
- इस योजना के एक घटक के रूप में, मेधावी छात्रों में अभिरूचि के तौर पर डाक टिकट संग्रहण को प्रोत्साहित करने हेतु वार्षिक छात्रवृत्ति प्रदान की जाएगी।
- **युवा डाक टिकट संग्रहकर्ताओं** को उनकी अभिरुचि तथा परियोजनाओं के प्रोत्साहन व मार्गदर्शन के लिए सम्बंधित विद्यालयों को फिलेटली सलाहकार भी उपलब्ध करवाया जायेगा

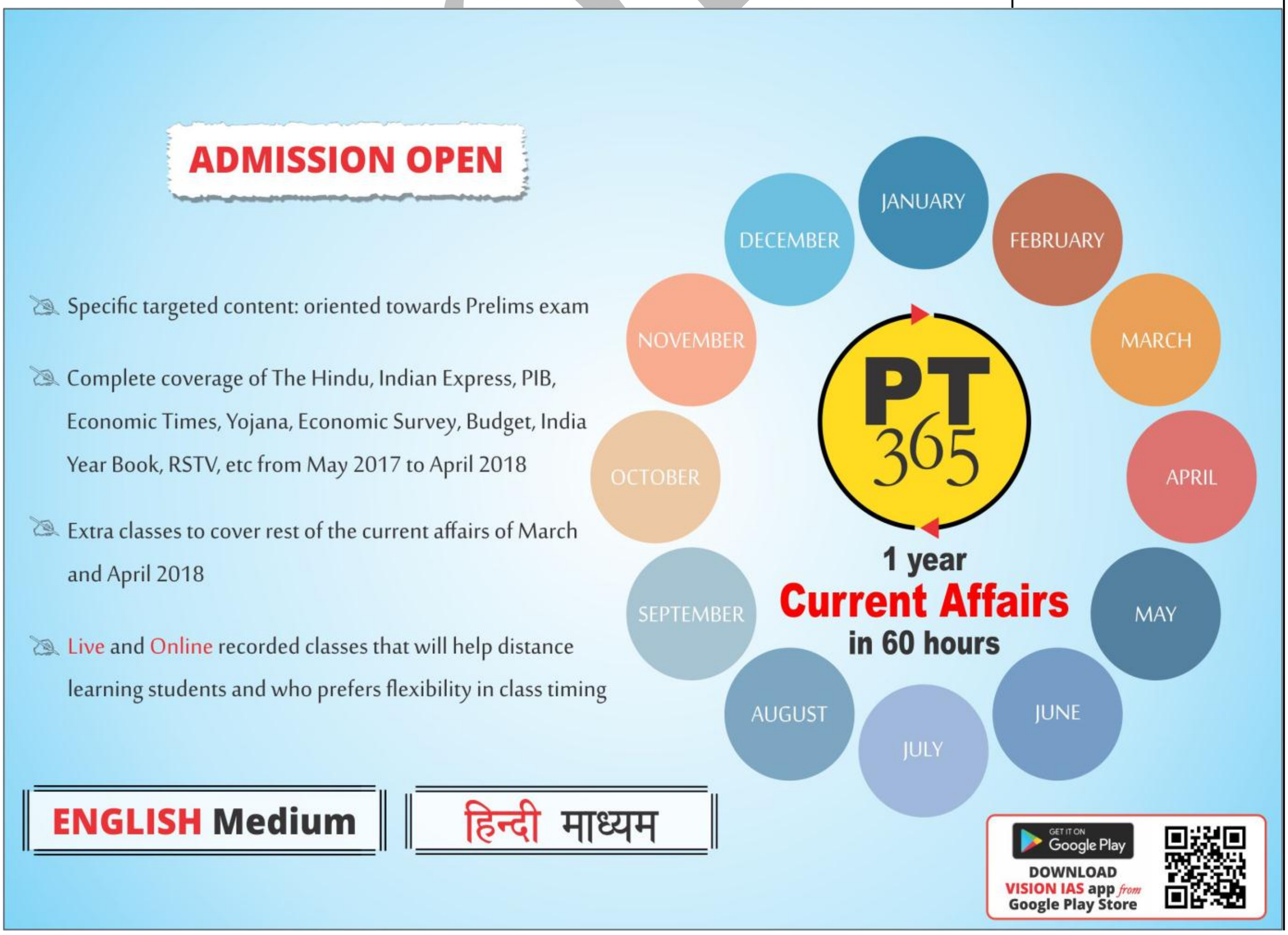

PT 365 - संस्कृति

11. विविध

(MISCELLANEOUS)

11.1. मोनकॉस दो रीनो

(Moncoes do Reino)

अभिलेखागार के क्षेत्र में सहयोग को प्रोत्साहित करने हेतु पुर्तगाल ने एक नए समझौते के अंतर्गत "मोनकॉस दो रीनो" (मॉनसून कॉरेस्पोंडेंस)नामक प्रलेखों का एक संग्रह भारत को सौंपा है।

- इस संग्रह में लिस्बन से गोवा के मध्य हुआ सीधा/प्रत्यक्ष पत्राचार सम्मिलित है जिसके अंतर्गत अरब एवं यूरोपीय शक्तियों के बीच की व्यापार प्रतिद्वंद्विता तथा दक्षिण एशिया एवं पूर्व एशिया के पड़ोसी राजाओं के साथ उनके संबंधों का विवरण दर्ज है।

11.2. महानदी से संलग्न विरासत स्थलों को दर्ज करने हेतु INTACH

(INTACH to document heritage sites along Mahanadi River)

सुर्ख़ियों में क्यों?

- **इंडियन नेशनल ट्रस्ट फॉर आर्ट एंड कल्चरल हेरिटेज (INTACH)** ने **महानदी के दोनों किनारों पर स्थित मूर्त एवं अमूर्त विरासत स्थलों के दस्तावेजीकरण हेतु** एक कार्यक्रम प्रारम्भ किया है।

INTACH

- **द इंडियन नेशनल ट्रस्ट फॉर आर्ट एंड कल्चरल हेरिटेज (INTACH)** की स्थापना वर्ष 1984 में नई दिल्ली में की गई थी। इसका उद्देश्य भारत में विरासत के प्रति जागरूकता फैलाना और उनका संरक्षण करना है। इसे एक सोसाइटी के रूप में पंजीकृत किया गया है।

कार्यक्रम के बारे में

- यह महानदी के दोनों किनारों पर लगभग 1000 कि.मी. क्षेत्र को कवर करेगा।
- इसके तहत मूर्त एवं अमूर्त दोनों प्रकार के विरासत स्थलों को कवर किया जाएगा तथा महत्वपूर्ण विरासत संरचनाओं की फोटोग्राफी तथा वीडियोग्राफी की जाएगी।
- यह संरक्षण श्रमिकों, इतिहासकारों, छात्रों एवं शोधकर्ताओं हेतु एक रोडमैप की तरह कार्य करेगा।

11.3. इंदिरा गाँधी पुरस्कार

(Indira Gandhi Prize)

सुर्ख़ियों में क्यों?

- पूर्व प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह को 2004 से 2014 के बीच देश का नेतृत्व करने तथा वैश्विक स्तर पर भारत का कद बढ़ाने हेतु 2017 का इंदिरा गांधी शांति, निरस्त्रीकरण और विकास पुरस्कार प्रदान किया जाएगा।

पुरस्कार के बारे में

- इंदिरा गांधी शांति, निरस्त्रीकरण और विकास पुरस्कार, इंदिरा गाँधी मेमोरियल ट्रस्ट द्वारा प्रदान किया जाता है। इसकी स्थापना 1986 में की गई थी।
- यह पुरस्कार अंतर्राष्ट्रीय शांति, विकास एवं एक नई अंतर्राष्ट्रीय आर्थिक व्यवस्था को प्रोत्साहित करने के लिए किए गए रचनात्मक प्रयासों को मान्यता देते हुए ऐसा करने वाले व्यक्तियों अथवा संगठनों को प्रति वर्ष प्रदान किया जाता है। इस प्रक्रिया में यह भी सुनिश्चित किया जाता है कि वैज्ञानिक खोजों का उपयोग मानवता की व्यापक भलाई और स्वतंत्रता का दायरा बढ़ाने के लिए हो।
- भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन तथा संयुक्त राष्ट्र शरणार्थी उच्चायोग इस पुरस्कार के पिछले दो प्राप्तकर्ता हैं।

VISION IAS

11.4 ICOMOS महासभा

(ICOMOS General Assembly)

सुर्ख़ियों में क्यों ?

- 19वीं ICOMOS (इंटरनेशनल कौंसिल ऑन मान्यूमेन्ट एंड साइट्स) की आम सभा का आयोजन दिसम्बर 2017 को ICOMOS पर बनी भारतीय राष्ट्रीय समिति द्वारा दिल्ली में किया गया।

संगोष्ठी के बारे में

- इस संगोष्ठी का विषय **'हेरिटेज एंड डेमोक्रेसी'** था।
- सभा में पारित 'दिल्ली डिक्लेरेशन ऑन हेरिटेज एंड डेमोक्रेसी' ने इस बात पर बल दिया कि विरासत हेतु लोगों का दृष्टिकोण महत्वपूर्ण है।
- इसमें इस बात पर बल दिया गया कि विरासत एक मौलिक अधिकार और सभी का दायित्व है। साथ ही, विकास की पहलों में संरक्षण उद्देश्य शामिल होने चाहिए तथा यह सुनिश्चित करना चाहिए कि विरासत संसाधनों का महत्व, प्रामाणिकता और मूल्य सुरक्षित रहें।
- घोषणापत्र में कहा गया है कि जीवित विरासत की निरंतरता सुनिश्चित करना, सतत विकास हेतु एक पूर्वशर्त है तथा विरासत का विधायी संरक्षण सभी स्तरों पर विद्यमान सरकारों का उत्तरदायित्व है।

ICOMOS के बारे में

- ICOMOS सांस्कृतिक विरासत स्थलों के संरक्षण और बचाव के लिए कार्य करता है। यह इस प्रकार का एकमात्र वैश्विक गैर-सरकारी संगठन है, जो स्थापत्य और पुरातात्विक विरासत के संरक्षण में सिद्धांत, पद्धति और वैज्ञानिक तकनीकों के अनुप्रयोगों को बढ़ावा देने के लिए समर्पित है।
- इसका कार्य 1964 के इंटरनेशनल चार्टर ऑन द कंजर्वेशन एंड रेस्टोरेशन ऑफ़ मोनुमेंट्स एंड साइट्स (वेनिस चार्टर) में निहित सिद्धांतों पर आधारित है।

11.5 प्रसार भारती

(Prasar Bharti)

सुर्ख़ियों में क्यों ?

सार्वजनिक प्रसारक प्रसार भारती ने सूचना और प्रसारण मंत्रालय से आने वाले कई निर्देशों को अस्वीकृत कर दिया है।

प्रसार भारती के बारे में

- यह प्रसार भारती अधिनियम के तहत स्थापित एक सांविधिक स्वायत्त निकाय है। यह 1997 में अस्तित्व में आई थी।
- यह देश का एक सार्वजनिक सेवा प्रसारक है। लोक सेवा प्रसारण का उद्देश्य दूरदर्शन और ऑल इंडिया रेडियो के माध्यम से पूरा किया जाता है।
- प्रसार भारती से पूर्व, AIR और DD सूचना और प्रसारण मंत्रालय के अंतर्गत मीडिया इकाइयों के रूप में कार्यरत थे।

11.6 सबरीमाला

(Sabrimala)

सुर्ख़ियों में क्यों ?

त्रावनकोर देवस्वाम बोर्ड ने सबरीमाला को राष्ट्रीय तीर्थस्थल के रूप में घोषित करने का अनुरोध किया है।

सबरीमाला के बारे में

- सबरीमाला एक हिंदू तीर्थस्थल है जो केरल के पथनाथिटा जिले की पश्चिमी घाट पर्वत श्रृंखला में पेरियार टाइगर रिजर्व, पेरुनाद ग्राम पंचायत में स्थित है।
- यह विश्व की सर्वाधिक वार्षिक तीर्थ यात्राओं वाले स्थलों में से एक है, जहां प्रत्येक वर्ष लगभग 10 करोड़ श्रद्धालु आते हैं।
- सबरीमाला मंदिर अय्यप्पन का एक प्राचीन मंदिर है जिसे षष्ठ और धर्मषष्ठ के नाम से भी जाना जाता है।
- मंदिर केवल मण्डलपूजा (लगभग 15 नवंबर से 26 दिसंबर), मकरविलक्कु या "मकर संक्रांति" (14 जनवरी) और महा विषुव संक्रांति (14 अप्रैल) के दिनों में और प्रत्येक मलयालम माह के पहले पांच दिनों में पूजा हेतु खुला रहता है।

VISION IAS

11.7. इंटरनेशनल डायलॉग ऑन सिविलाइज़ेशन

(International Dialogue on Civilisation)

सुर्ख़ियों में क्यों?

हाल ही में, नई दिल्ली में **इंटरनेशनल डायलॉग ऑन सिविलाइज़ेशन– IV** का आयोजन किया गया।

डायलॉग ऑन सिविलाइज़ेशन (सभ्यता पर परिसंवाद) के बारे में:

- विश्व की पांच प्राचीन साक्षर सभ्यताओं के संबंध में **विद्वानों और सार्वजनिक बहस** को प्रोत्साहित करने हेतु 2013 में **नेशनल ज्योग्राफिक सोसाइटी** द्वारा इसका प्रारंभ किया गया।

दक्षिण एशियाई सभ्यता

- यह सभ्यता सिंधु और इसकी सहायक नदियों के तट पर विकसित हुई।
- यह मुख्यतः ताम्रपाषाण काल में फली-फूली और विकसित हुई।
- सबसे महत्वपूर्ण दक्षिण एशियाई सभ्यता हड़प्पा सभ्यता थी।
- निष्कर्षों के अनुसार इस सभ्यता की निम्नलिखित विशेषताएं थीं:
    - दो भागों- दुर्ग एवं निचला नगर में विभाजित विस्तृत **नगर योजना**।
    - शहरों का ग्रिड प्रणाली सहित **समानांतर चतुर्भुज** आकार होना।
    - निरीक्षण छिद्रों के साथ **योजनाबद्ध भूमिगत** जल निकासी।
    - **व्यापार** पर आधारित एक **सुव्यवस्थित अर्थव्यवस्था**
    - उन्नत कृषि, मृद्भांड तथा मुहर निर्माण की कला आदि।
    - यहाँ पशुपति और मातृ देवी की पूजा की जाती थी।
    - इन्हें पुनर्जन्म में विश्वास था तथा इन लोगों ने विस्तृत शवाधान प्रक्रिया को अपनाया था।
- पकी हुई ईटों का व्यापक स्तर पर उपयोग- **पथरों से निर्मित भवनों की अनुपस्थिति**

मेसोपोटामिया की सभ्यता

- इस सभ्यता का उदय वर्तमान ईरान और कुवैत की दजला (टिगरिस) और फरात (यूफ्रेट्स) नदियों के तट पर हुआ था।
- यह लगभग 12000 ई.पू. में नवपाषाण काल के दौरान प्रारम्भ हुई।
- महत्वपूर्ण मेसोपोटामियाई सभ्यता में सुमेरिया, असीरिया, अक्कादिया और बेबीलोनिया की सभ्यतायें शामिल थी। साक्ष्यों के अनुसार इस सभ्यता के अंतर्गत प्रौद्योगिकी का प्रयोग किया जाता था। इन्होंने अपना धर्म, साहित्य, विधि संहिता तथा दर्शन स्थापित किया था। साथ ही इस सभ्यता के बाह्य व्यापारिक संबंध भी थे।

चीन की सभ्यता

- यह सभ्यता तृतीय और द्वितीय सहस्राब्दी ईसा पूर्व के मध्य येलो रिवर (पीली नदी) के तट पर तथा 5000 ईसा पूर्व से पहले यांग्त्ज़ी नदी के तट पर विकसित हुई। (नवपाषाण काल)
- इस सभ्यता के निवासी प्रकृति की पूजा करते थे।

मध्य-अमेरिकी सभ्यता

- यह सभ्यता लगभग 21000 ई.पू. में मैक्सिको और मध्य-अमेरिका के हिस्सों में विकसित हुई

मिस्त्र सभ्यता

- इसका विकास नील नदी के किनारे उत्तर पूर्वी अफ्रीका में हुआ।

11.8. जीआई टैग (GI Tag)

सुर्ख़ियों में क्यों?

- हाल ही में, विभिन्न वस्तुओं जैसे बंगनपल्ली आम, बंदर लड्डू, मामल्लपुरम की मूर्तिकला तथा एतीकोप्पका के खिलौनों को भौगोलिक संकेतक (GI) प्रदान किया गया है।

मामल्लपुरम मूर्तिकला के विषय में

- महाबलीपुरम में 7वीं शताब्दी में **पल्लवों** के शासन काल की **उत्कृष्ट शैल मूर्तिकला तकनीक** को प्रदर्शित किया गया है।
- इसमें गुफा वास्तुकला, शैल वास्तुकला, संरचनात्मक मंदिर, स्वतंत्र खड़ी मूर्तियां, रिलीफ मूर्तियां और चित्रकला/ छवि मूर्तियां सम्मिलित हैं।
- पुरुष एवं स्त्री मूर्तियां सुंदरता के मामले में पूर्णता का प्रतीक हैं।
- इसकी **विशेषताओं** में चौड़ा मस्तक, तीक्ष्ण नाक, बड़ी आंखें, लटकते हुए कान एवं अंडाकार चेहरा तथा दोहरी ठोढ़ी सम्मिलित है।

VISION IAS

- मामल्लपुरम के मूर्तिकार अभी भी नक्काशी हेतु **हथौड़ा एव छेनी तकनीक** का उपयोग करते हैं तथा **शिल्प शास्त्रों** में प्रतिपादित अधिक समय लेने वाली विभिन्न प्रक्रियाओं का पालन करते हैं।
- मामल्लपुरम का नाम सातवीं सदी के मध्य में नरसिंहवर्मन पल्लव को प्राप्त प्रसिद्ध उपाधि के नाम पर रखा गया था।

एटिकोप्पाका के खिलौने (एटिकोप्पाका बोम्मलु) के विषय में

- ये खिलौने **आंध्र प्रदेश के एटिकोप्पाका क्षेत्र** में निर्मित तथा गैर विषैले प्राकृतिक रंगों द्वारा रंगे हुए हैं।
- खिलौने आकार एवं उपयोग की गई सामग्रियों में अद्वितीय हैं।
- वे अंकुड़ी कर्रा (राइटिया टिंक्टोरिया) पेड़ की नरम लकड़ी से बनाये गए हैं।
- खिलौने बनाने की इस 400 वर्ष पुरानी कला को **टर्न्ड वुड लैकर क्राफ्ट** कहा जाता है ।

11.9 विविध (Miscellaneous titbits)

- **फालुन गोंग,** चीन में प्रतिबंधित प्राचीन चीनी पूर्णतावादी प्रणाली है, जिसे भारत में मनाया गया। फालुन गोंग व्यायाम (ध्यान, मंद गति का व्यायाम, श्वास को नियंत्रित करना आदि) को नैतिक और आध्यात्मिक उपदेशों के साथ संयुक्त करता है।
- हाल ही में, **कथाकार इंटरनेशनल स्टोरीटेलर फेस्टिवल** का आयोजन किया गया। यह भारत में एकमात्र ओरल स्टोरीटेलर फेस्टिवल (मौखिक रूप से कहानी सुनाने वालोन का महोत्सव) है और **घुमक्कड़ नारायण -** ट्रेवलिंग लिट्रेचर फेस्टिवल का हिस्सा है, जिसे 2010 में **यूनेस्को** के तत्वावधान में प्रारंभ किया गया था ।
- **वर्ल्ड सिटी कल्चरल फोरम (WCCF)-** हाल ही में, मुम्बई WCCF का सदस्य बनने वाला प्रथम भारतीय शहर बन गया है। WCCF, ग्लोबल नेटवर्क का सबसे बड़ा मंच है, जो 33 शहरों को उनकी संस्कृति, डेटा-आधारित अनुसंधान और सूचना साझा करने हेतु एक मंच प्रदान करता है, जिससे भविष्य की समृद्धि में संस्कृति की महत्वपूर्ण भूमिका और उसके प्रभाव का अन्वेषण किया जा सके ।
- **गोमीरा डांस,** पश्चिम बंगाल का एक मुखौटा नृत्य है इसकी उत्पत्ति के जड़ें शक्तिवाद और आद्य शक्ति (प्रारंभिक ऊर्जा) की पूजा में हैं। इसके नर्तक पुरुष होते हैं जो पुरुष, महिला और जानवर जैसे कई पात्रों का किरदार निभाते हैं।